आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 2 ★ मूल्य : 10 रु.
15 फरवरी, 2008 ★ माघ सं. 2064

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

भारतवर्ष का
स्वर्णतीर्थ
GJF
यह श्रेष्ठतम अलंकार प्रकृति ने बनाएँ है...
और यह शुध्दतम अलंकार हम ने...
श्रेष्ठ विचार और शुध्द आहार से जीवन महान हो।
RCB
जहाँ विश्वास ही परंपरा है
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोना • चांदी
हिरे • मोती
औरंगाबाद
आकाशवाणी चौक,
☎ ०२४०-२२४४५२०,२२
जलगाँव
सुभाष चौक,
☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३
Malhar - 08
औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अप्पिया देवकामाणं,
कामरूव-विउव्विणो।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति,
पुव्वा वाससया बहू।।

- उत्तराध्ययन सूत्र ३.१५

दैवी भोगों में अर्पित हो,
इच्छा रूपी वे रहते हैं।
पूर्ववर्षशत दीर्घकाल तक,
ऊर्ध्वकल्पों में बसते हैं।।

फरवरी २००८
वीर निर्वाण संवत् २५३४
माघ २०६४

वर्ष ६५ अंक २

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	चत्तारि सरणं पवज्जामि	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	तप में करें आसक्ति का त्याग	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	११
	जो धर्म से जोड़े, वही सच्चा गुरु	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	१५
	स्वयं सजग हो करें साधना	-श्री योगेशमुनि जी म.सा.	३०
अंग्रेजी स्तम्भ-	An Opportunity to Make Future Bright	*-Madhur Vyakhyani Shri Gautammuni ji*	१८
शोधालेख-	श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी	२५
	जीवन-मृत्यु का आधार : आयुष्य कर्म	-श्री गौतमचन्द जैन	४६
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (३९)	- श्री धर्मचन्द जैन	३३
	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (७)	- संकलित	४४
युवा-स्तम्भ-	आत्मघाती-महापापी	-श्री अभयकुमार जैन	३६
आध्यात्मिक लेख-	ज्ञान-अज्ञान का जीवन पर प्रभाव	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	४१
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (४५)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५४
उपन्यास-	भाई-बहन (४)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	५९
नारी-स्तम्भ-	बालकों का लालन-पालन (२)	- डॉ. भीकमचन्द प्रजापति	६५
संस्मरण-	नये साल का इनाम	-डॉ. दिलीप धींग	६९
स्वास्थ्य-विज्ञान-	स्वास्थ्य का अमूल्य साधन : स्वमूत्र	-श्री जवाहरलाल बाघमार	७१
जीवन-व्यवहार-	रेस्ट में न करें, समय को वेस्ट	-प्राणिमित्र नितेश नागोता	७४
बाल-स्तम्भ-	भावना की महिमा	-डॉ. श्वेता जैन	७६
	Jealousy kills Justice	*-Miss Madhurika Jain*	८०
कविता/गीत-	पाँच अभिगम	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	१४
	अनमोल वर्तमान	-श्री अरिहन्त जैन	४०
	संगठन	-श्री प्रसन्नचन्द चोरडिया	६४
	रोको भ्रष्टाचार की आँधी	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	६८
	एक श्रमण को समर्पित भाव	-श्री दिलीप जैन	८२
विचार-	चिन्तन-कण	-श्री जितेन्द्र कोठारी	५८
संवाद-	समस्या : समाधान (१०)		८३
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	- डॉ. धर्मचन्द जैन	८५
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		८६
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१०५

सम्पादकीय

चत्तारि सरणं पवज्जामि

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

मानव व्यथित है। वह व्यथा निवारण हेतु सदैव किसी मंगल, उत्तम एवं शरणदाता की खोज करता रहता है, किन्तु उसे निश्चय नहीं हो पाता है कि वस्तुतः परम मंगल क्या है, श्रेष्ठ क्या है अथवा सच्चा शरण्य क्या है? आवश्यक सूत्र में चार मंगल, चार उत्तम एवं चार की शरण ग्रहण करने का उल्लेख है। जब भी हम साधु-संतों-साध्वियों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण के लिए जाते हैं तो वे हमें आवश्यक सूत्र का वहीं मंगल पाठ सुनाते हैं, जिसे संक्षेप में हम 'मांगलिक' के नाम से जानते हैं। वह मंगल पाठ इस प्रकार है-

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगल, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

संसार में चार मंगल है- अरिहंत, सिद्ध, साधु और केवलि प्रज्ञप्त धर्म। हम सदैव मंगल की वांछा रखते हैं, किन्तु यह नहीं जानते है कि वास्तविक मंगल क्या है। हमें ज्ञानवान एवं क्रियावान बनाने के साथ शान्ति प्रदायक, मंगल यदि कोई है तो यह चार ही मंगल हैं। विशेषावश्यक भाष्य में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण मंगल का स्वरूप विभिन्न प्रकार से समझाते हैं-

मंगिज्जएऽधिगम्मइ जेण हियं तेण मंगलं होइ।
अहवा मंगो धम्मो तं लाइ तयं समादत्ते ॥ -*विशेषावश्यक भाष्य, २२*

जिससे हित का बोध हो अथवा हित की प्राप्ति हो वह मंगल है अथवा मंग का अर्थ धर्म है, जो धर्म को लाता है, प्राप्त कराता है वह मंगल है। मंगल शान्ति का आधायक एवं विघ्न-विनाशक है।

हम संसार में सर्वत्र घूम लें, सभी सुख-सुविधाओं का संग्रह कर लें, धन-धान्य से समृद्ध हो जाएं, किन्तु चेतना के स्तर पर आत्मा का जो भला करने वाला है, वस्तुतः वही मंगल है। जगत् में दधि, अक्षत, नारियल, फल आदि को द्रव्य मंगल

के रूप में स्वीकार किया जाता है, किन्तु आत्मा के लिए जो हितकारी है वही सच्चा मंगल है, उसे भाव मंगल भी कहा गया है।

अरिहन्त मंगल हैं, क्योंकि उन्होंने संसार की सच्चाई को जानकर राग-द्वेष को पूर्णतः विराम दे दिया है। क्रोध, मान, माया एवं लोभ से पूर्णतः रहित हैं। अज्ञान का अब उनमें लवलेश भी नहीं है। अनन्त ज्ञान एवं अनन्त दर्शन प्रकट हो गया है। वीतरागता के आनन्द से समृद्ध हैं। उनके सभी विघ्नों का विनाश हो गया है। उनका सान्निध्य मंगलकारी है।

सिद्ध भी मंगल हैं, क्योंकि वे जीवन के अन्तिम लक्ष्य सिद्धि को प्राप्त कर चुके हैं। संसार में भटकाने वाले आठों कर्मों से रहित हैं। उनका सान्निध्य तो प्राप्त होना शक्य नहीं, किन्तु भाव रूप में उनको नमन भी मंगलकारी है।

साधुत्व के लक्षणों से युक्त साधु भी मंगल हैं, क्योंकि वे हमें आत्महित में नियोजित करते हैं। 'साधु' के अन्तर्गत नमस्कार मंत्र में पठित आचार्यों एवं उपाध्यायों का भी समावेश हो जाता है। साध्वियों अथवा महासतियों को भी 'साधु' पद के अन्तर्गत स्थान दिया गया है। यह सभी पंच महाव्रतधारी होते हैं तथा पाँच समितियों, तीन गुप्तियों के आराधक होते हैं। साधु हमारे गुरु होते हैं .था उनका सान्निध्य हितकारी होता है।

अभी हमें अरिहन्त का एवं सिद्धों का सान्निध्य प्राप्त नहीं है, साधुओं के माध्यम से हित-अहित का बोध कर सकते हैं।

इन तीनों मंगलों से भी उत्कृष्ट मंगल है-धर्म। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है- 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' यह धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है क्योंकि उसको जीवन में अपनाये बिना आत्महित होने वाला नहीं है। अरिहन्त, सिद्ध एवं साधु हमारे आराध्य या उपास्य हैं। इनमें अरिहन्त एवं साधुओं की सत्संगति भी हो सकती है, किन्तु जब तक केवली प्ररूपित धर्म को धारण नहीं करेंगे तब तक हमारा भला होने वाला नहीं है।

अरिहन्त, सिद्ध, साधु एवं केवलिप्रज्ञप्त धर्म ये चारों सम्पूर्ण लोक में उत्तम हैं, 'लोगुत्तमा' हैं। इनसे उत्तम या श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। राजा, चक्रवर्ती एवं बड़े से बड़ा उद्योगपति भी इनसे श्रेष्ठ नहीं है, क्योंकि वह आत्महित के बोध एवं आचरण से दूर है। अशान्ति, भय, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि जब तक हैं तब तक उस व्यक्ति को श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता है। हाँ, साधु इन दोषों के त्याग की

साधना में तत्पर रहता है, इसलिए उसे श्रेष्ठ की श्रेणी में लिया गया है। धर्म मनुष्य को इन दोषों से दूर करने में समर्थ है इसलिए धर्म भी श्रेष्ठ है। वस्तुतः धर्म ही कल्याणकारी है। उसका आचरण ही मानव को महान् बनाता है। आत्मा से परमात्मा बनाने वाला धर्म ही है। हम धर्म का सही स्वरूप नहीं जानते, उसके महत्त्व को नहीं समझते। उसके बाह्य रूप एवं आडम्बर में उलझे रहते हैं इसलिए धर्म का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं।

जो चार मंगल हैं तथा चार उत्तम हैं वे चार ही हमारे द्वारा शरण्य हैं। इसलिए मंगलपाठ में 'चत्तारि सरणं पवज्जामि' के अन्तर्गत अरिहन्त, सिद्ध, साधु और धर्म इन चार की शरण ग्रहण करने का विधान किया गया है। इन चारों से बढ़कर संसार में कोई शरणदाता नहीं है। अपनी आत्मा का कल्याण इन चारों की शरण से ही सम्भव है। उत्तराध्ययन सूत्र में अनाथी मुनि का कथानक आता है जिसमें राजा श्रेणिक को भी अनाथ कहा गया है। अनाथी मुनि का प्रसंग यह स्पष्ट कर देता है कि एक सीमा तक ही माता-पिता, पुत्र-पुत्री, बन्धु-बांधव हमारे लिये सहयोगी होते हैं, किन्तु अन्तिम रूप से वे त्राण देने वाले नहीं हैं। अरिहन्त, सिद्ध, साधु (संघ) एवं धर्म की शरण मनुष्य को त्राण देने वाली होती है। क्लेशों से बचाने में इन चारों की शरण ही उपयोगी है। आचारांग सूत्र में स्पष्ट कहा गया है कि परिवारजन हमारे त्राणदाता नहीं हैं। मोह, ममता से त्राण नहीं होता, धर्म के माध्यम से त्राण होता है।

अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म में भी सर्वाधिक उपयोगी कहा जाय तो वह धर्म है। क्योंकि अरिहन्त एवं साधु भी उसी का आचरण कर आगे बढ़े हैं एवं बढ़ रहे हैं। वे भी धर्म का ही उपदेश देते हैं। कुछ भी सुना जाय, जब तक जीवन में धर्म का आचरण नहीं करते तब तक आन्तरिक जीवन उन्नति की ओर अग्रसर नहीं होता है। आध्यात्मिक उन्नति धर्माचरण से ही सम्भव है। इसमें श्रुत धर्म और चारित्र धर्म दोनों का समावेश हो जाता है। भगवान् की वाणी भी धर्म है तथा उसका जीवन में आचरण भी धर्म है। यह एक प्रकार की औषधि है जिसका सेवन विभिन्न आत्मिक विकारों का शमन कर देती है। आज हम धर्म को बाह्य क्रियाओं में सीमित समझ रहे हैं वे क्रियाएँ मात्र साधन हैं। उनका हमारे भावों के साथ जुड़ाव होने पर ही आत्मिक शुद्धि सम्भव है।

आज मनुष्य विभिन्न कारणों से आहत हैं। प्रयत्न करने पर भी उसे सफलता नहीं मिलती है तो उसकी व्यथा बढ़ जाती है। वह जैसा चाहता है वैसा

नहीं होता है तथा जैसा नहीं चाहता है वैसा हो जाता है। परिस्थितियाँ प्रतिकूल रहती हैं तो वह मानसिक रूप से अशान्त अनुभव करता है। समस्याओं का समाधान जब परिवार एवं समाज से भी प्राप्त नहीं होता है तो वह अपनी असफलता के लिए उनको कोसता है। कभी ज्योतिषियों के यहाँ चक्कर लगाता है तो कभी देवी-देवताओं की पूजा आराधना में संलग्न हो जाता है। किन्तु आवश्यक सूत्र में प्रतिपादित किया गया है कि आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के लिए चार ही शरण उपयोगी हैं- अरिहन्त की शरण, सिद्ध की शरण, साधु (संघ) की शरण और धर्म की शरण। धर्म द्वीप है, त्राण है (दीवो ताणं)। अरिहन्त लोक के उद्योतकर हैं तथा अप्रतिहत ज्ञानदर्शन के धारक हैं, सिद्ध अष्टकर्मों से विमुक्त हैं, जरा-मरण एवं विनाश से रहित हैं, भूख-प्यास एवं सांसारिक आवागमन से किनारा कर चुके हैं। साधु २२ परीषहों पर विजय अभियान के साथ समता की साधना कर रहे हैं, अतः ये सब शरण्य हैं।

सच्ची शरण वह है जो हमें क्लेशों से एवं विकारों से दूर करे। शेष शरण तो संसार में ही क्लेषित करने वाली है। आज मस्तिष्क में यह विचार दृढ़ नहीं हो पाता है कि हम किसकी शरण में जाएं एवं क्यों जाएं? जैनागम एवं व्याख्याकार इस तथ्य से परिचित कराते है कि संसार अनित्य है, अशरणभूत है। यहाँ कुछ भी ऐसा नहीं है जो सदैव साथ रहने वाला हो और हमारे कर्मों के फल से बचाने वाला हो। कृत कर्मों के फल में कुछ कमी ला सकता है तो वह धर्म है।

हम संतों के यहाँ जाते हैं, मंगलपाठ भी सुनते हैं, किन्तु उस मंगलपाठ को हमारे भौतिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए एक मंत्र की भाँति साधन समझते हैं। क्योंकि हमारी दृष्टि बाहर की समस्याओं में ही उलझी रहती है। इसके आध्यात्मिक महत्त्व से हम अपिरिचित होते हैं। एक बार उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने भोपालगढ़ में व्याख्यान में कहा था कि- ''मांगलिक पाठ सुनने के साथ चत्तारि सरणं पवज्जामि से अन्त तक का पाठ सुनने वालों को भी दोहराना चाहिए।'' इसके उच्चारण से व्यक्ति को यह बोध होता है कि वह अरिहन्त, सिद्ध, साधु और धर्म की शरण ग्रहण कर रहा है। कोई इसे 'तह त्ति' (तथेति- जैसा कह रहे हैं वैसा ही है, मैं वैसा ही स्वीकार करता हूँ) शब्द उच्चारण से इसका समर्थन करते हैं। कोई 'खमा घणी' आदि शब्दों से कृतज्ञता का ज्ञापन करते हैं, किन्तु हृदय से कोई इन चार की शरण को स्वीकार कर ले, तो अन्य की शरण में जाने की अभिलाषा से स्वतः दूर हो जाएगा एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणेइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं।।
जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।।
जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतरं बाहिरं।।
जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।।
जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।।
जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ।।

-दशवैकालिक अ.४, सूत्र १३, १६, १७, १९ से २१

जानता यहाँ जो जीवों को, एवं अजीव को भी जाने।
जो जीव-अजीव युगल जाने, वह ही नर संयम को जाने।।१३।।
जब पुण्य-पाप और बन्ध-मोक्ष, इनको है सहज जान लेता।
तब देव मानवी भोगों पर, तन-मन से नहीं ध्यान देता।।१६।।
जब देव मानुषी भोगों पर, तन-मन से ध्यान नहीं देता।
तब बाह्याभ्यंतर ममता को, वह सहज रूप से तज देता।।१७।।
जब मुण्डित होकर इस जग में, साधुत्व प्राप्त कर लेता है।
तब उत्तम धर्म सुसंवर के, पद को वह मुनि पा लेता है।।१९।।
जब उत्तम धर्म सुसंवर के, पद को वह मुनि पा लेता है।
तब आत्मिक अज्ञानजन्य, कर्माणु दूर कर देता है।।२०।।
जब आत्मिक अज्ञानजन्य, कर्माणु दूर कर देता है।
तब सार्वत्रिक पूर्ण ज्ञान, और दर्शन को पा लेता है।।२१।।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- आत्मिक जीवन की सुरक्षा के लिए व्रत की बाड़ आवश्यक है।
- घर में लड़ना क्षीणता का कारण है और अपनों के सामने प्रेम से झुकना गौरव का कारण है।
- धन-सम्पदा का गर्व न कर सत्कर्म से जीवन को ऊँचा उठाना ही मानव-जीवन का साफल्य है।
- जड़ को छोड़ चेतन से प्यार करना ही सुख का साधन है।
- परिग्रह पर नियन्त्रण ही शान्ति का मार्ग है।
- समाजहित के लिए कथनी के अनुसार करणी में सहिष्णुता चाहिए।
- दया की आराधना निष्पाप जीवन जीने का अभ्यास है।
- संयम, तप व ज्ञान रूप सामायिक से राग-द्वेष की निवृत्ति होती है।
- राग को गलाने से क्लेशमुक्ति होती है।
- सम्यग्दर्शी परिग्रह को बन्धन मानता है और मिथ्यात्वी बन्दीखाने को घर मानता है। एक राग को गलाता है तो दूसरा फलाता है।
- हिंसा और परिग्रह का गाढ़ सम्बन्ध है। परिग्रह बढ़ेगा तो हिंसा भी बढ़ेगी।
- अज्ञान-मोह-वासना से मुक्ति ही स्वतन्त्रता है।
- मानव को सुखी रहने के लिये तन, मन और इन्द्रिय पर क़ाबू रखना चाहिए।
- राज्य, परिवार आदि में स्थायी विजय नहीं, स्थायी विजय के लिए अविकारी होना आवश्यक है।
- समाज-व्यवस्था सुन्दर होनी चाहिए, जिससे सारे कार्य सुन्दर एवं व्यवस्थित हो सकते हैं।
- राग-द्वेष कर्म का मूल है। राग-द्वेष खत्म हो गया तो बाद में शरीर, वाणी आदि कर्मों के फल थोड़े दिन के लिए दिखाई देते हैं बाद में तो सारा कर्मवंश ही खत्म हो जाता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

तप में करें आसक्ति का त्याग

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ।।

वीतराग भगवन्त की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र के २८वें 'मोक्षमार्ग अध्ययन' की दूसरी गाथा के प्रसंग से जानना-मानना-चलना इन तीन बातों का ज्ञान-दर्शन-चारित्र के माध्यम से कथन किया गया। आज तप के माध्यम से पथ्य-परहेज की बात कही जा रही है। किसी भी गन्तव्य के लिये चार बातें जरूरी हैं- (१) मार्ग का ज्ञान (२) मार्ग पर विश्वास (३) मार्ग पर गमन (४) नियमों का पालन। सही मार्ग का ज्ञान होने के पश्चात् उस पर विश्वास होना आवश्यक है। मार्ग पर विश्वास होने के पश्चात् गन्तव्य की प्राप्ति के लिए मार्ग पर चलना भी जरूरी है। मार्ग पर चलते समय भी अनेकविध नियमों एवं सावधानियों का पालन आवश्यक है। जैसे- सड़क पर चलते समय अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है। तेज गाड़ियाँ अलग पंक्ति में तथा कम गति वाली अलग पंक्ति में चलती हैं। पैदल चलने हेतु फुटपाथ होता है एवं सड़क पार करते समय भी सावधानी रखनी होती है।

इस तरह रोग उत्पन्न होने पर निदान करवाकर दवाई ली जाती है, दवा की माला फेरने से एवं गरिष्ठ माल खाने से रोग का शमन नहीं होता। पथ्य-परहेज का भी बराबर ध्यान रखना पड़ता है। घुटनों में दर्द है, दर्द दूर करने हेतु दवाई ली, साथ में इमली का सेवन कर लिया तो परिणाम होगा, घुटनों में सूजन आ जायेगी। मधुमेह में मिठाई का परहेज रखा जाता है, हृदयाघात की बीमारी वाले के घी की मनाही है। रोगी कहता है- खाऊँगा तब भी मरूँगा, नहीं खाऊँगा तब भी मरूँगा, फिर जीभ का स्वाद क्यों छोड़ूँ। बात चल रही थी नियमों के पालन की।

हमारी अष्ट दिवसीय साधना की अनुपालना में आज का दिवस तप-साधना का है। इससे पहले समझना होगा- कर्म कैसे आते हैं? आत्मा के साथ कर्मों का अनादि सम्बन्ध रहा हुआ है। शुभ-अशुभ प्रवृत्तियों में जैसी प्रकृति रहती है, उसी के अनुसार नये कर्मों का बन्ध होता है। पौषध-संवर एवं सामायिक की

साधना क़र्मों को आने से उसी प्रकार रोकती है, जैसे तालाब में पानी आने के सारे रास्ते बन्द कर देने पर पानी की आवक रुक जाती है। पहले के कर्मों को तप के द्वारा शमन किया जा सकता है। तालाब से पानी निकालकर तालाब को खाली किया जा सकता है या सुखाया जा सकता है। इसी तरह पूर्व के संचित कर्मों की तप के द्वारा निर्जरा कर सकते हैं।

कई भाइयों की सोच है- शरीर सुखाने के लिये नहीं है। खायेंगे तो मरेंगे, नहीं खायेंगे, तब भी मरेंगे। फिर खाना क्यों छोड़ें? उनसे निवेदन है कि वे जो शरीर की प्रकृति के अनुकूल नहीं है, ऐसे पदार्थ तो नहीं खायें। बीड़ी, गुटखा, भांग, चरस, माँस, मदिरा, कोकीन, अफीम, हेरोइन आदि का सेवन दुर्व्यसन है। ये आपके धन तथा तन को खोखला बनाने वाले हैं। भयंकर रोग पैदा करने वाले हैं। शक्तिहीन एवं प्रमादी बनाने वाले हैं। जरूरत से ज्यादा खाना भी व्यसन है। अशन करें, किन्तु शरीर के स्वभाव के अनुसार। जैसे फोड़ा होने पर मरहम उसी स्थान पर लगाते हैं। घाव पर ही मरहम लगाते हैं, उसी तरह पेट जितना माँगता है, पचा सकता है, उतना ही खाना पर्याप्त है। प्रकृति के विपरीत खाना, अधिक खाना, गरिष्ठ खाना व्यसन है।

जो अन्न छोड़ रहे हैं, वे तपस्वी हैं। इन्होंने आसक्ति, ममता और इच्छाओं का भी निरोध किया है। छः छः महीने की तपस्या करने वाले भी हैं। साँप की बाम्बी पर चार माह तप करने वाले, कुएँ की पाल पर एक पैर से खड़े रहकर तप करने वाले भी हैं। इन्होंने शरीर की ममता हटाकर तप किया। स्वामी लालचन्द जी म.सा. ने संयमी जीवन में ७२ मासखमण किये। पारणा बिना अभिग्रह के नहीं किया। अभिग्रह भी कैसा? अनूठा-एक नाम की तेरह बहिनें हों, एक तरह की साड़ी पहने हुए, एक स्थान पर मिलें। संयोग से ऐसा दुष्कर अभिग्रह भी फला। एक बहिन २७ वर्ष से एकान्तर तप कर रही है। मासखमण के तप में भी १०८ बार वन्दना कर रही है। एक बहिन के ६१ की तपस्या का पारणा था और खुले रखे मात्र ५ द्रव्य। एक भाई धुलिया में ५१ वर्ष से एकान्तर तप कर रहा है। एक मनस्वी हैं जो एक ही पात्र में सभी द्रव्य लेकर आ रहे हैं, सभी को घोलकर एक द्रव्य के रूप में सेवन कर रहे हैं। यह है रसना के विषयों पर विजय, आसक्ति पर नियन्त्रण। लोग विपरीत वस्तुओं का एक साथ सेवन करते हैं। उनको इस शरीर की फिर भी परवाह नहीं है। कहते हैं, समझाते हैं भाई! जितना कम से कम द्रव्य से काम चले, चलाओ। परन्तु शादी-

विवाह में ज्यादा से ज्यादा आइटम बना रहे हैं। सभी आइटम कोई खा नहीं सकता। अधिक आइटम बनने पर नाली में बहाये जा रहे हैं। इतने द्रव्यों के कारण धन का अपव्यय हो रहा है। दूसरी तरफ कई असहाय भूखे सो रहे हैं। कहाँ गई आपकी बुद्धि, कहाँ गई आपकी अनुकम्पा?

भगवान् महावीर ने ५ माह २५ दिन की तपस्या के पारणे में उड़द के बाकले लिए। ऐसी आसक्ति घटने पर ही अन्न छूट सकता है। तप का मूल उद्देश्य आसक्ति छूटना है। अन्न तो बीमारी में भी छूट जाता है, किन्तु आसक्ति बनी रहती है। शरीर को आहार देना है, मात्र संयम-साधना के लिए। आहार, शरीर आदि से आसक्ति छूटने पर ही संथारा तप सफल होता है।

जब भी तपस्या के प्रत्याख्यान की बारी आती है, सबकी नजरें बहिनों की ओर जाती है। क्या भाई तपस्या करने की क्षमता वाले नहीं हैं? देह की ममता छोड़ने की जरूरत है। तन की आसक्ति छूटेगी तब ही आहार जैसा मिला वैसा ले लोगे, अन्यथा आज मिठाई क्यों नहीं आई, अभी पापड़ आना बाकी है आदि चिन्तन चलता रहेगा।

तप के मुख्यतः दो प्रकार हैं- बाह्य तप एवं अन्तरंग तप। बाह्य तप में प्रथम है अनशन तप। जो अनशन तप नहीं कर सकें वे ऊनोदरी तप करें, इच्छा से कम खायें। एक कवल कम खाना भी किंचित् ऊनोदरी तप है। अच्छी लग रही वस्तु को छोड़कर खाना, कम खाना एवं गम खाना भी ऊनोदरी तप है। कम से कम सामग्री से काम चलता है तो चलाइये, सामने वाला बोलता है तो बोलने दीजिये। कहिये- आपके मुँह एक है और मेरे कान दो हैं। कम बोलना एवं कषायों को कम करना आवश्यक है। कभी मुख से निकले शब्द अनर्थ कर देते हैं, दो मिनट की कषाय जान ले लेती है। तन्दुल मत्स्य की कथा आपने सुनी है। वह कल्पना करते-करते कर्म बाँध लेता है। आपको अपना सुधार करना है तो मन में विपरीत भाव आने पर ऊनोदरी तप करें। इच्छा परिमाण करें। मन-वचन-काया को संकुचित करें। इससे आप हम आत्म-विजेता बन सकेंगे। आप कोई भी प्रवृत्ति करें प्रतिसंलीनता आनी चाहिए, वह भी एक तप है। आप सामायिक एक आसन से करें। एक बार बोलने का आगार रख मौन-साधना की ओर बढ़ें। जितने भी जीव मोक्ष गये हैं, वे इन्हीं तपों के कारण गये हैं। तप में ध्यान भी है, विनय भी है। किसी एक पर भी श्रद्धा

जगेगी, तभी कल्याण होगा।

जब आप मोह के कारण अन्य की बात मान लेते हैं, तो भगवान् की बात क्यों नहीं मान रहे हैं। लोभ कर रहे हैं, पाप कर रहे हैं। हित शिक्षा देने वाले पर नाराज हो रहे हैं। भूल हो सकती है, खमत-खामणा कर, मन साफ कर कषाय घटा लेना चाहिए। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस-परित्याग, काय-क्लेश, प्रतिसंलीनता, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्ग इनमें से तप का कोई एक रास्ता पकड़ो। धर्म स्थानक में आप आये हो। जो बात अच्छी लगे उसे स्वीकार करें। संतों के यहाँ मर्यादा से रहकर जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प लेकर जाएं। व्यवहार को पवित्र बनाने की चेष्टा करें। तप कर, कर्म निर्जरा करते हुए सिद्धत्व की ओर आपके चरण बढ़ें, इन्हीं भावों के साथ....

पाँच अभिगम

(तर्ज- कभी राम बन के....)

(मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा दि.६.२.०८ को घोड़ों का चौक स्थानक में दिए प्रवचन से श्री नवरतन जी डागा, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा संकलित इस भजन में पाँच अभिगमों की सुन्दर प्रस्तुति हुई है। धार्मिक पाठशालाओं, शिविरों एवं संस्कार केन्द्रों में बालकों को इसे कण्ठस्थ कराया जा सकता है।)

गुरु ज्ञान पाने, सच्चा बोध पाने,
चले आना, स्थानक चले आना ||टेर ||

नहीं सचित्त द्रव्य संग लाना, तुम अचित्त विवेक निभाना।
सादा वेष धरके, मन मोद भरके, चले आना, स्थानक चले आना ||१ ||

मुख पर मुँहपत्ति रखना, है धर्म हमारा यतना।
दोनों हाथ जोड़ के और मान मोड़ के, चले आना, स्थानक चले आना ||२ ||

एकाग्र चित्त हो आना, नहीं चंचल भाव बनाना।
संयम सीख सुनने, श्रद्धा पाठ पढ़ने, चले आना, स्थानक चले आना ||३ ||

संवर सामायिक करना, आगम स्वाध्याय में रमना।
राग-द्वेष तज के, क्षमा भाव धरके, चले आना, स्थानक चले आना ||४ ||

'गौतम' से कहते भगवन्, श्रावक के पाँच हैं अभिगम।
नियम याद रखके, सारे दोष तज के, चले आना, स्थानक चले आना ||५ ||

प्रवचन

जो धर्म से जोड़े, वही सच्चा गुरु

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

गुरु को चाहिए कि वह भक्त को अपने से नहीं धर्म से जोड़े, इस प्रकार के विचारों से ओतप्रोत यह प्रवचन उपाध्यायप्रवर के द्वारा धुलिया में फरमाया गया था। परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा-दिवस माघ शुक्ला द्वितीया के प्रसंग पर यह प्रवचन प्रकाशित किया जा रहा है। आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया है। -**सम्पादक**

जैन धर्म में देव-गुरु-धर्म ये तीन तत्त्व विशेष महत्त्व के हैं। अरिहन्त देव धर्म के संस्थापक होते हैं और गुरु प्रचारक। अरिहन्त देव के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को धर्म कहा गया है। गुरु का देव और धर्म के बीच का स्थान है। बीच में रहने वाला दोनों तरफ दृष्टि रखता है, देहली-दीपक की तरह। गुरु का काम धर्म से जोड़ने का है। वे जोड़ते चले जाते हैं। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) के जीवन को लेकर आपके सामने बात रखी जा रही है।

गुरु कैसा होना चाहिये? वह शिष्य को सन्मार्ग दिखाने वाला होना चाहिए। गुरु अन्धकार में उजाला कर देता है, अंधकारयुक्त जीवन में प्रकाश फैला देता है। वह व्यक्ति को अपने से नहीं जोड़ता, सम्प्रदाय से नहीं जोड़ता, उसे धर्म से जोड़ता है। जो अपने से जोड़ता है वह गुरु ममत्व को बढ़ाता है। सम्प्रदाय से जोड़ने वाला गुरु परिग्रह बढ़ाने का काम करता है और जो धर्म से जोड़ता है वह अपना तो कल्याण करता ही है, जिसको जोड़ता है उसका भी कल्याण करता है।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज अपने सान्निध्य में जो भी आया उसे धर्म से जोड़ते गये। बच्चे से वृद्ध तक उस महापुरुष ने सबको धर्म से जोड़ा। बच्चों के लिए धार्मिक पाठशालाओं की

आवश्यकता बताई तो युवकों के लिए सामायिक-स्वाध्याय का अवलम्बन दिया। वृद्धों के लिए साधना की बात पर जोर दिया। जैसा व्यक्ति देखा उसकी योग्यता और प्रतिभा के अनुसार उसे जोड़ते गये।

गुरुदेव फरमाते थे- राग तीन तरह के होते हैं। एक होता है- व्यक्ति राग, दूसरा- सम्प्रदाय राग और तीसरा- धर्म राग। व्यक्ति-राग व्यक्ति रहता है तब तक रहता है। सम्प्रदाय राग जब तक सम्प्रदाय है तब तक रहेगा। धर्मराग हमेशा बना रहता है। जुड़ाव में भी कई व्यक्ति राग से जुड़े होते हैं। गुरु के प्रति राग बुरा नहीं है, किन्तु व्यक्तिगत राग व्यक्ति के नहीं रहने पर प्रायः समाप्त हो जाता है।

व्यक्ति शाश्वत नहीं रहता, धर्म शाश्वत रहता है। सम्प्रदाय भी स्थायी रहने वाली नहीं है। भूतकाल में अनेक सम्प्रदायें हुईं, कई परम्पराएँ बनीं, परन्तु अच्छी से अच्छी सम्प्रदायें समाप्त हो जाने पर उनका पता तक नहीं रहा।

आचार्य भगवन्त फरमाते थे- धर्म शाश्वत है और रहेगा। त्रिकाल में धर्म रहने वाला है। भगवन्त ने व्यक्ति-व्यक्ति को सामायिक-स्वाध्याय से, व्रत-नियमों से और साधना-आराधना से जोड़ा। किसी में विनय का गुण देखा तो उसे विनय धर्म में लगाया। किसी में स्वाध्याय का गुण देखा, उसे स्वाध्याय में जोड़ दिया। साहित्यिक रुचि वाले को साहित्य-साधना में जोड़ा तो सेवा भावना वालों को सेवा में लगाया। उस महापुरुष की पैनी दृष्टि थी, व्यक्ति-व्यक्ति की परख थी। वे व्यक्ति की प्रतिभा को समझकर उसे जोड़ते और उसकी प्रतिभा को निखारते। गुरुदेव छोटे से बड़े सबको धर्म में जोड़ते गये। जिसे भी गुरुदेव धर्म में जोड़ते उसे पता तक नहीं लगता था। अंगुली पकड़ते-पकड़ते उसे ऊँचा उठा देते थे। पहले जिसे पाँच नमस्कार मंत्र का पाठ सिखाया, धीरे-धीरे गुरु ने उस व्यक्ति को सामायिक एवं स्वाध्याय से जोड़ा। अणुव्रतों से जोड़ा एवं योग्यता देखकर कुछ को पंच महाव्रतधारी तक बना दिया।

अधिकांश गुरु अपने भक्तों को खुद से जोड़ते हैं। एक मौलवी के पास एक शिष्य पहुँचा। कहने लगा- मौलवी साहब! मुझे हुक्म दीजिये मैं

लोगों को खुदा से जोडूँ। मौलवी साहब कहने लगे- खुदा से जरूर जोड़ना, खुद से मत जोड़ना।

आचार्य भगवन्त का हृदय बड़ा विशाल था। श्रमण संघ में रहे तब भी और श्रमण संघ से निकले तब भी उनकी भावना रहती श्रमण संघ उन्नति करे। श्रमण संघ से निकलने के बाद भी कई साधक उनका परामर्श लेते। गुरुदेव के हृदय में विशालता थी इसीलिए वे जहाँ भी पधारते, लोग उन्हें सच्चा गुरु समझते। जहाँ भी जाते वहाँ धर्म-ध्यान का स्वतः ठाट लग जाता।

गुरुदेव में व्यक्तिगत-सम्प्रदाय राग नहीं, धर्म का अनुराग था। जैन हो या जैनेतर वे सबको धर्म-साधना में निरन्तर आगे बढ़ाते रहे। एक पाश्चात्त्य व्यक्ति ने कहा- "महावीर एक अद्भुत व्यक्ति था। वह साधक को सत्य से जोड़कर सिद्धि तक ले जाता। सच्चा गुरु वही है जो कल्याण मार्ग से जोड़े। गुरु की सोच भक्त को भक्त ही नहीं, भगवान् बनाने की होती है। जो गुरु भक्त को भक्त ही बनाए रखे वह गुरु कैसा? पारस तो लोहे को सोना ही बनाता है, पारस नहीं, किन्तु गुरु भक्त को भगवान् बनाता है।

जोधपुर में वि.सं. २०१० में संयुक्त चातुर्मास था, जिसमें उपाचार्य गणेशीलाल जी महाराज, प्रधानमंत्री श्री आनन्दऋषि जी महाराज, सहमंत्री हस्तीमल जी महाराज, कवि अमरचंद जी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति मदनलाल जी महाराज, बाबाजी पूरणचन्द जी महाराज, बहुश्रुत समर्थमल जी महाराज सिंहपोल विराज रहे थे। सावन के महीने में हरियाली अमावस्या के दिन पूज्यपाद शोभाचन्द जी महाराज का पुण्य दिवस था। कवि अमरचन्द जी महाराज ने प्रवचन में उस समय जो शब्द कहे वे उल्लेख करने योग्य हैं- "गुरु वह है जो गुरु बनाता है। आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज सच्चे गुरु थे, जिन्होंने समाज को प्रतिभा सम्पन्न तेजस्वी गुरु दिया।"

गुरु की महिमा का बखान करना सरल नहीं है। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज भी सच्चे गुरु थे। उन्होंने भी अपने पीछे गुरु तैयार किया। आज आचार्य श्री (हीराचन्द्र जी म.सा.) चतुर्विध संघ की बराबर सार-संभाल करके विचरण कर रहे हैं। चतुर्विध संघ की सारणा-वारणा-धारणा के साथ जहाँ भी जाते हैं सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से जागृति उत्पन्न करते हैं।

प्रवचन

An Opportunity to Make Future Bright

Madhur Vyakhyani Shri Gautam Muniji

(The speech delivered in central Jail, Jaipur on occasion of birth anniversary of Mahatma Gandhi, has been translated into English by kaushalya salecha, Balotara.)

Today we have gathered here to listen to the pious and enlightening teachings of Tirthankar Mahaveera. The most admirable aspect of his holy preaching is what to adopt what to gain and what to leave behind. We are to understand the art of living leading a problem free life thereby forming a chain of honesty and truth amongst one and all.

Today is the birth anniversary of Mahatma Gandhi who himself adopted the principles of Lord Mahaveera and earned himself the title of Mahatma.

Gandhi ji lived his life with the belief that a man is known by his deeds and not by his birth. To understand the depth of the word ahimsa is one thing and to lead a life of non-violence is another. Non-violence is the life of Jain principles. Tirthankar has shown us a definite path of world peace through non-violence, which is a powerful tool of happiness in life in all spheres. Mahatma Gandhi became the light that represented the universal and eternal truth reminding us of the right path, rowing us from error taking, this country to freedom giving solace to innumerable hearts.

The place where we are standing here today can be aptly called the temple of lord Krishna as his birth also took place in a jail. But he was not barred by these restrictions and on the base of his strong will power he became the lord of the three worlds. His friendship and kindness made him a strong promoter as the messenger of peace which proved as a motivator to many. Today we should not be depressed by the confinements of these boundaries. Unhappiness can never lead to success. Be like the ball that once dropped bounces back with double vigour. To err is human, but to accept and improvise upon it definitely leads to success.

The truth is that today we have been given an excellent opportunity to realize our mistakes and make an indepth analysis of ourselves. Every occasion can teach us something, every event can be guiding only if we think in a positive and optimistic manner and we are willing to move ahead to make the most of all the events as opportunities.

Keep in mind lord shri Ram, who inspite of being born with a silver spoon in his mouth and being bought in the lap of luxury, accepted his exile for fourteen years in the most benevolent manner, to a forest which was manifested with all sorts of hardships and deprivations, only to upkeep the promise of his father. This only shows his belief in his true self and his positive thinking. Inspite of being a human being just like you and me, he is worshipped as god be caure of his discipline, patience, character and his benevolence.

Just as gold manifests itself into its best form and food becomes edible and healthy to eat only after they pass through the extremities of fire, in the same way man can reach the heights of success only by going through the

toughest times, with a positive attitude These tough times are in fact like a boon for us. In poetic form-

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति, कष्टों का मानो उपकार।
कष्टों से क्या घबराना ये जीवन के सच्चे उपहार।।
दुःख से दुःखी बनेंगे तो, नहीं मिलती दुःखों से मुक्ति,
भागो न, समता से भोगो, यही समाधि की युक्ति।
घर आए मेहमान यदि, तो नहीं करना रोते सत्कार।।

You must have difinitely understood the depth and meaning of these lines. We never welcome a guest with tears but with a smiling face. In the same way consider yourself as a guest in this place where you shall spend the time left with an optimistic approach. Life will definitely seem to be a blessing.

Brothers! it is in these jails that great leaders like Nehruji and Gandhiji did an indepth analys is of many a things, spending valuable time in writing thereby enriching the glorious literature of India.

In the pages of jain history, the story of chandana is an inspiring example for one and all. Chandana, who never faced any hardships, due to certain circumstances got sold. She found solace at a rich merchant's house but there too to no avail, the merchant's wife got her head shaved off and put her behind bars clutching her in the gruesome bondage of chains. But inspite of all these hardships chandana did not lose her hope and patience retaining her belief in the Almighty and when life gave her back what she deserved she held no hard feelings towards the merchant's wife and remained grateful towards her. In the same manner remove your pangs of guilt and direct your thoughts in the right way so that even this place becomes a boon for you.

Today we should determine that anger and

arrogance are life's biggest adversaries and we should make a conscious effort to control them. These enemies poison the environment, develop an ill feeling within us strengthen the bond of enmity. They say that when man inspired by positive determination, he treads the path of truth it and brings about an enormous change in his life.

Jain history proves that even a dangerous criminal like Arjun mali paved the path to glorification only by listening to the pious teachings of saints. Another example is of Valmiki the author of Ramayan, who was once upon a time famous as dacoit Ratnakar, who had commited many a heinous crimes. He heard the blessings of a holy saint that you alone are responsible for your deeds and as you sow so shall you reap. This changed his entire course of life forever and made an entirely new entity for himself.

Brothers! it is no use grieving over the past. The need of the hour is to learn from the past, be at peace with the present and beautify your future. The principles of Mahaveer are to silently bear the fruits of your deeds thereby reducing them and doing erstwhile will only enhance them.

Question yourself that why you are here? The three most plausible reasons are money, land and woman.

Money or wealth is like a swing which goes to and fro. Land has been the cause of dispute between many a Hindu and Muslim. Do you know how long you are going to live? Then how can you believe that your wife will be with you forever? Man blinded by his anger and arrogance does not foresee the results of his criminal deeds but one must not forget that you have to pay for the deeds done. In the same way all your afflictions and vices only make you weak in all fields. Many a kingdoms lost their golden era

and brought about their downfall and became a victim of their rulers, bad habits.

Anger and arrogance have destroyed many homes. Can we ever clean a blood stained cloth with blood? Never can a hot iron cut across another piece of iron. The principles of enmity have never lost ground. These are like interest which only increase day by day. Anger begets more anger and forgiveness and love beget more forgiveness and love, forgiveness benefits both the forgiver and the forgiven. It may take time but don't lose heart because patience and courage will definitely guide you through.

A guru was teaching his disciples the virtue of patience. The teacher said, son! Master the art of patience as this is the key to success. Student inquired whether patience could help him remove water from a well with a sieve? Teacher replied that will definitely happen if you wait patiently for the water to turn into ice.

Time is to ponder that we shall soon leave the confines of this jail but we have to free ourselves from the bondage of this worldly life pleasures. Time is to follow the path of love and forgiveness and remain within our boundaries. We all know the importance of limitaions. We have all seen the great ladies like lady Sita who along with her family had to bear the brunt of the repercussions of her crossing the boundaries of the Lakshman Rekha. D'ont be like the river that has no boundaries but be like the solemn sea which never leaves its boundaries unless compelled to. You all have reached the boundaries of this jail because you all must have definitely over crossed some limits in some or the other way. Now make a strong and compulsive decision that once you are out of this jail neither will you

overstep your boundaries and nor will you harbour any animosity and ill fellings towards anybody. Do good-beget good-do bad beget and regret it not only in this life but also make your future lives bleak.

Our sympathy is entirely with you. We all pray that you all become free from the bondages of this jail, you prosper and succeed in life and make your future bright and glorious diminishing the darkness of your past thereby paving a way which would prevent many a people from entering the confines of this jail.

Our mind is also like jail which is burdened by our continuous thought processes. In contemplating the law of karma, we realize that it is not a matter of seeking revenge, but of practising loving kindness and karuna, to avoid generating resentment and then seek forgiveness we keep creating an identity around our pain and that is what is reborn that is what suffers.

To illustrate we have an excellent example of the great Sikandar. when he was on his death bed he made a last wish whereby he instructed his ministers firstly to collect all the material wealth that he accumulated and place it in front of him. Secondly his coffin was to be shouldered by doctors and both hands were to be kept hanging outside the coffin. On hearing such a request one of the ministers inquired why? Sikander replied that he wanted to show the world that he had amassed this great money, assets etc. by slaughtering many innocent people. But despite all these riches not even the best of doctors could save him. Even though he was the owner of vast fortunes, he too bid farewell to this world empty handed think this example is enough to illustrate to change our mentality.

We live with pride and prestige in our society but we attach so much importance to it that if anyone hurts our pride then we lose our sanity and do anything to save it considering it to be the right thing to do. We commit crimes sometimes to save our pride and sometimes for loss of fortunes and because of family disputes too. This seems to be the cause for our downfall. Do think that whatever comes has to go-nothing lasts forever. Everything is dissipatory. Everyday thousands of people die and the rest who remain believe that they are going to live forever. What is most surprising is in spite of facing the truth everyday we are refusing to acknowledge it.

Death is eternal and undecided. No one knows what is going to happen the next minute. Our biggest foolishness is that we commit crimes, dwell in the feelings of revenge. Let cruel thoughts brainwash our minds, cross our limits for something which is only momentary without envisaging what will happen to our future.

Brothers even great saints like Lord Mahaveera and Tulsidas have agreed that we are very fortunate to have got this life as a human being. We are not going to throw it away by indulging in things which would hinder our path to the upliftment of our soul.

Belief in the teachings of the great saints and developing an atmosphere of friendship, sympathy, service and humanity, make your life one which becomes an example for many to follow. Belief in the preachings of the almighty will definitely pave the way to your becoming as HIM.

I would like to end on this note that my best wishes are with you-one and all.

-Kaushalya Salecha, *Barmer Callender Road opp. Bhansali Compound, Balotra(Raj.)*

शोधालेख

श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन (२)

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री

श्रमण के आन्तरिक व्यक्तित्व एवं उसके प्रमुख आचार का वर्णन-विश्लेषण तीन शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है -

१. श्रमणों के दस लक्षण

२. श्रमणों के सत्ताईस मूलभूत गुण

३. श्रमणों के सतरह नियम

श्रमण के दस लक्षण हैं। लक्षणों के इसी समूह-विशेष को श्रमण धर्म की विशेषताएँ भी कहा जाता है। ये विशेषताएँ निम्नोक्त हैं[1] -

१. क्षमा २. मुक्ति ३. आर्जव ४. मार्दव ५. लाघव ६.सत्य ७. संयम ८. तप ९.त्याग और १० ब्रह्मचर्य।

श्रमण के सत्ताईस मूल गुण इस प्रकार प्रतिपादित हैं[2] -

१. प्राणातिपात विरमण	२. मृषावाद का त्याग
३. अदत्तादान का त्याग	४. मैथुन का त्याग
५. परिग्रह का त्याग	६. श्रोत्रेन्द्रिय का निग्रह
७. चक्षुरिन्द्रिय का निग्रह	८. घ्राणेन्द्रिय का निग्रह
९. रसनेन्द्रिय का निग्रह	१०.स्पर्शनेन्द्रिय का निग्रह
११.क्रोध विवेक	१२. मान विवेक
१३.माया विवेक	१४. लोभ विवेक
१५.भाव सत्य	१६. करण सत्य
१७.योग सत्य	१८. क्षमाशील
१९.वैराग्य	२०. मनसमाधारणता

---

१. क-स्थानांग सूत्र १०.१६ ख - समवायांग सूत्र १०
ग-तत्त्वार्थ सूत्र ९.६ घ-बारस अणुवेक्खा ८६
ङ-कार्तिकेयानुप्रेक्षा ३०४ च-आवश्यक चूर्णि,उत्तर भाग,पृष्ठ ११७

२. समवायांग सूत्र,२७

२१. वचन समाधारणता   २२. काय समाधारणता

२३. ज्ञान सम्पन्नता   २४. दर्शन सम्पन्नता

२५. चारित्र सम्पन्नता   २६. वेदना सहिष्णुता

२७. मृत्यु सहिष्णुता

श्रमण निम्नाङ्कित संग्रह नियमों का पालन करता है[३]

१. प्रेक्षा संयम – सोते-बैठते समय, वस्त्रादि उपकरण लेते-रखते समय भली भांति देखना।

२. उपेक्षा संयम – सांसारिक कार्यों की उपेक्षा।

३. अपहृत्य संयम – श्रमण धर्म का अध्ययन करना व कराना। आहार, शरीर, उपधि, मल-मूत्र त्याग आदि के समय जीव रक्षा करना।

४. प्रमार्जन संयम – जिन वस्त्र, पात्र, मकान आदि का उपयोग करते हैं, उनको गुच्छक अर्थात् पूंजनी से पूंजना।

५. मन संयम

६. वचन संयम

७. काय संयम

उपर्युक्त विशेषताओं अर्थात्-लक्षणों, गुणों एवं नियमों पर तनिक विस्तार पूर्वक विचारणा अपेक्षित है। श्रावकाचार में श्रावक द्वारा धारण किये गये व्रत अणुव्रत अथवा छोटे व्रत कहलाते हैं। वह हिंसा, असत्य आदि का आंशिक रूप में परित्याग करता है। इसके विपरीत श्रमण के व्रत 'महाव्रत' कहे जाते हैं। इनमें हिंसादि की सर्वविरति अर्थात् सर्वत्याग होता है। श्रमणों के लिये पंच महाव्रत के निर्वाह का विधान है[४], यथा-

१. सर्वप्राणातिपात विरमण   २. सर्वमृषावाद विरमण

३. सर्वअदत्तादान विरमण   ४. सर्वमैथुन विरमण

५. सर्वपरिग्रह विरमण

इस प्रकार के पूर्णतः त्याग को नवकोटि प्रत्याख्यान कहा जाता है। नवकोटि प्रत्याख्यान कहे जाने के पीछे भी एक सुस्पष्ट आधार है। इन त्यागों में

---

३. तत्त्वार्थ सूत्र ९.६ स्वोपज्ञभाष्य

४. क- स्थानांग सूत्र ५.३३९   ख-दशवैकालिक, ४

हिंसादि के करने, दूसरों से करवाने और दूसरों द्वारा की गई हिंसादि के अनुमोदन का परित्याग सम्मिलित है। ये तीन करण कहलाते हैं। जिनका तीन योग- मन, वचन, और काया से होने का प्रतिषेध किया गया है। इस प्रकार कुल नव प्रकार के निषेध हैं-

१.मन से करना	२.मन से करवाना	३.मन से अनुमोदन करना
४.वचन से करना	५. वचन से करवाना	६.वचन से अनुमोदन करना
७. काया से करना	८.काया से करवाना	९. काया से अनुमोदन करना

इस प्रकार नौ कोटियों से यह प्रत्याख्यान या त्याग किया जाता है।

जैन धर्म में जीव और अजीव का अति सूक्ष्म रूप से विश्लेषण किया गया है। जीव और अजीव ये दो मुख्य और मूल तत्त्व हैं। ये दोनों ही ज्ञेय हैं। इन दो तत्त्वों का ज्ञान श्रमण के लिये आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है। यही ज्ञान उनके संयम-पालन का प्रधान आधार बनता है। इस ज्ञान के अभाव में संयम का स्पष्टरीत्या चित्र उभर ही नहीं पाता है। सांसारिक बन्ध हेय होते हैं और मोक्ष उपादेय है। जब बन्ध रूप संसार हेय है तो स्वतः ही संसार के कारण आस्रव, पाप और बन्ध भी हेय हैं। यहाँ पुण्य के विषय में यह जान लेना अनिवार्य है कि यह तत्त्व सर्वथा और मात्र हेय की कोटि में नहीं आता। जैन दर्शन में जीव और अजीव की गंभीर मीमांसा की गई है और तदनुसार ही हिंसा और अहिंसा का गहराई से निरूपण हुआ है। अहिंसा को क्या जैन दर्शन और क्या जैन आचार सभी क्षेत्रों में आधारभूत स्थान प्राप्त है। इस दृष्टि से श्रमण द्वारा अहिंसा व्रत नव कोटि से पालन होने के कारण अपेक्षाकृत अधिक व्यापक और अधिक सूक्ष्मता लिये हुए है। श्रमणजन पूर्ण अहिंसा का पालन करते हैं। यह न केवल अहिंसा, अपितु समस्त व्रतों के साथ घटित होने वाला तथ्य है। अतः ये महाव्रत कहलाते हैं। संक्षेप में पाँच महाव्रतों का स्वरूप इस प्रकार है-

(१) अहिंसा महाव्रत- जैन धर्म के अनुसार जीवों के छह विभाग हैं, जिसे षट्जीव निकाय कहते हैं। उनके नाम हैं -[५]

---

५ - क - आचारांग सूत्र - १,२-३ ख - सूत्रकृतांग सूत्र - ७/५-७/

ग - स्थानांग सूत्र - ६/४८० घ - दशवैकालिक अध्ययन- ४

ङ - प्रश्नव्याकरण सूत्र - आस्रवद्वार, अध्ययन - १

च - गोम्मटसार, ७९४ छ - प्रवचनसार - ३/४९

१. पृथ्वीकाय २. अप्काय ३. तेजस्काय

४. वायुकाय ५. वनस्पतिकाय ६.त्रसकाय

श्रमण द्वारा इन समस्त निकायों की हिंसा का नवकोटि प्रत्याख्यान किया जाता है। अतएव श्रमणों का यह व्रत 'सर्वप्राणातिपात विरमण' महाव्रत कहा जाता है। अहिंसा महाव्रत का पालक श्रमण अपनी प्रत्येक गतिविधि एवं सामान्य सी चेष्टा भी इतनी सतर्कता के साथ करता है कि किसी भी स्थूल या सूक्ष्म जीव को रंचमात्र भी कष्ट-व्यथा न हो, उनका घात न हो। श्रमण चाहे जागता हो, अथवा सुप्त हो, अकेला हो अथवा समूह में हो, कभी भी हाथ-पैर, अंगुली, अथवा किसी काष्ठादि के उपकरण से भूमि, दीवाल, धूल-धूसरित-शरीर, वस्त्रादि को झाड़ता नहीं है। न ही श्रमण इन्हें झटकते अथवा छेदते हैं। अत्यावश्यक होने पर वे कोमल वस्त्र या पूंजनी से उन्हें सावधानी के साथ स्वच्छ कर लेते हैं। वे ओस, हिम आदि को भी नहीं छूते हैं। अग्नि प्रज्वलित नहीं करते हैं। जलती हुई अग्नि, चिनगारी उल्का आदि को बुझाने का कार्य भी नहीं करते हैं। श्रमण अग्नि को बिखेर कर शान्त नहीं करता है और न जल डालकर उसका शमन करता है। पंखे, पत्र, वस्त्रादि का व्यजन के रूप में प्रयोग करते हुए वह न हवा करता है और न फूंक लगा कर स्थिर हवा को गतिशील करता है। अंकुर, घास, पौधे आदि को वह पददलित नहीं करता है, न ही हाथ से उन्हें छेड़ता है, उनका संस्पर्श भी नहीं करता है। उन पर बैठता भी नहीं है, लेटता भी नहीं है।

श्रमण अपने प्रयोग में आने वाली वस्तु में चींटी आदि देख लेता है तो वह उसे बड़ी कोमलता के साथ सुरक्षित और निरापद स्थान पर छोड़कर सुख और संतोष का अनुभव करता है। जीव चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा हो, आत्मा की दृष्टि से सभी एक समान हैं। सभी जीव दुःख से बचना और सुख को प्राप्त करना चाहते हैं। सभी जीव जीना चाहते हैं। मरना कोई नहीं चाहता है। किसी भी प्राणी के प्राणों का घात नहीं करना चाहिये। किसी को किसी के लिये कोई दुःख या पीडा का कारण भी नहीं बनना चाहिये। जैन धर्म की शिक्षाओं को बड़ी विशिष्टता के साथ श्रमण अपने जीवन और आचरण में ढालता है। वह स्पष्टरूपेण-मानता है कि साधारण सी शारीरिक गतिविधि- उठना, बैठना, लेटना, चलना, फिरना आदि-यदि असावधानी से की जाय तो उससे पाप कर्म बन्धता है और वह इस बन्ध से सदा ही

चेष्टापूर्वक बचा रहता है। यह तो सुनिश्चित है कि इतनी सूक्ष्मता के साथ अहिंसा का पालन करने के लिये जीव-अजीव, पुण्य-पाप आदि का तलस्पर्शी-परिज्ञान अति आवश्यक होता है। श्रमण के लिये सर्वप्राणातिपात विरमण महाव्रत की सुरक्षा का बडा महत्त्व है और इस हेतु पाँच भावनाएँ प्रतिपादित हैं।[६]

१. ईर्या समिति- चलने-फिरने से सम्बन्धित सावधानी

२. मनोगुप्ति

३. एषणा समिति

४. भण्डोपकरण विषयक समिति

५. भक्तपान विषयक आलोकिता

(२) सत्यमहाव्रत – षट्काय की हिंसा के सर्वथा परित्याग की ही भांति श्रमण मृषावाद से भी सावधानी पूर्वक असंलग्न रहता है। श्रमण सदा निर्दोष, अकर्कश, छेदकारी, भेदकारी, मर्मकारी और असंदिग्ध वचनावली का ही प्रयोग करता है और सत्य की साधना में निरत रहता है। श्रमण अन्तर्हृदय से यह स्वीकार करता है कि असत्य हिंसा का एक आधार बनता है और हिंसा को परित्यक्त समझने वाला श्रमण असत्य का सर्वदेश से परित्याग करता है। क्रोध, मान, माया, लोभादि विकारों से जन्य कठोर वचनों का उच्चारण श्रमण के लिये संभव नहीं होता। वह अनिश्चय की स्थिति में हो, तो कभी भी निश्चय के रूप में ढाल कर किसी के समक्ष ऐसी किसी बात को प्रस्तुत नहीं करता है। निश्चयपूर्वक तभी बोलना चाहिये, जब वक्ता को स्वयं किसी बात में दृढ निश्चय हो। श्रमण कभी ऐसे कठोर-वचनों का उच्चारण नहीं करता है, जो किसी जीव के लिये कष्टप्रद हो, उसके मन को चोट पहुँचायें। वह सत्य, तथ्य, कोमल, सुखकर, वाणी का प्रयोग करता है। सत्य को भी वह कभी कटुतापूर्ण और अप्रिय रूप नहीं देता है। वह सत्याचरण करता हुआ भी किसी का अपमान नहीं होने देता है।

सत्य महाव्रत की पाँच भावनाएँ हैं, यथा- १. निर्भयता २. लोभ-त्याग ३. क्रोध-त्याग ४. हास्य-त्याग ५.अनुवीचि भाषण। (क्रमशः)

---

६ - प्रश्नव्याकरण सूत्र - संवरद्वार - १

७ - आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, १५ वाँ भावना अध्ययन

८ - प्रश्नव्याकरण सूत्र - संवर द्वार अध्ययन - ८/

प्रवचन

स्वयं सजग हो करें साधना

श्री योगेशमुनि जी म.सा.

२२ दिसम्बर २००७ को कराड़ (महाराष्ट्र) में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाए गए प्रवचन का संक्षिप्त लेखन श्री जगदीश जी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

वीतराग उपासकों!

अनन्त पुण्यवानी से हमें सच्चे देव-गुरु-धर्म का शरणा मिला है। सन्त भगवन्तों का सान्निध्य मिला है। किन्तु हम इसका महत्त्व नहीं पहचान रहे हैं। आज श्रद्धालुजन धर्म-श्रवण, शास्त्र-श्रवण के लिये स्थानक पहुँच रहे हैं, लेकिन धर्मस्थान पर आने मात्र से भी उत्थान होने वाला नहीं है। शास्त्रवादी एवं धर्मवाणी को कानों से सुना लेकिन भीतर उतारा नहीं तो सिद्धि मिलने वाली नहीं है। यदि सच्ची श्रद्धा से साधना की जाए तो मात्र एक सामायिक से मुक्ति मिल सकती है। हमारी आत्मा का उत्थान हुआ नहीं, कारण कि हमने सुना लेकिन जाना नहीं, जाना पर माना नहीं, यदि माना भी तो आचरण नहीं किया।

मुक्तिगामी पुरुषों से सुना-

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थिं ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, किण्णु विहिंसा अजया गहिंति।।

यह जीवन असंस्कृत है। क्यों? समझने का प्रयत्न करें-सोने एवं चांदी के घड़े को टूट जाने पर दुबारा बनाया जा सकता है। लकड़ी, प्लास्टिक की वस्तुओं को फेविकोल व फेविक्विक से जोड़ा जा सकता है किन्तु इस जीवन की डोर के टूटने पर इसे जोडा नहीं जा सकता। इस सत्य को समझकर धर्मकरणी करने की आवश्यकता है। आज आदेश-उपदेश देने वाले बहुत हैं, कार्य-सिद्धि में सहयोग करने वाले न्यून हैं। इस बात को समझ लें कि धर्मकरणी स्वयं करने पर ही उसका फल मिलने वाला है। दूसरों के खाना खाने से हमारा पेट नहीं भर सकता। यदि भर सकता है तो हम खाना खाना छोड़कर इसका प्रत्यक्ष अनुभव करें। धर्मकरणी जो

करेगा, पुरुषार्थ जो करेगा, उसे ही फल की अभीष्ट प्राप्ति होगी।

एक राजकुमार, उर्दू में जिसे हम शहजादा कहते हैं, भ्रमण करते-करते जंगल में पहुँच गया। वहाँ उसे प्यास लगी। समीप ही कुआँ था, कुएँ पर लोटा डोर भी थी, लेकिन साथ में सेवक या दास नहीं था। सोचा यदि कुएँ से पानी खींचते किसी ने देख लिया तो हँसी का पात्र बन जाऊँगा, देखने वाला कह सकता है शहजादा होकर पानी खींच रहा है। अतः उसने अहंकारवश एवं शर्म के कारण स्वयं खींचकर पानी नहीं पिया और कुएं के बाजू में बैठ गया। सोचा कोई न कोई दूसरा आएगा और पानी पिला देगा। थोड़ी देर में सेठ साहब का लड़का भी घूमता हुआ उधर की ओर आया। शहजादा ने कहा- भाई प्यास लग रही है, पानी पिला दो। सेठ के लड़के ने कहा- प्यास तो मुझे भी लग रही है। लेकिन आपने लोटा डोर होते पानी क्यों नहीं पिया? राजकुमार ने कहा- मैं शहजादा जो हूँ। इस पर सेठ के लड़के ने कहा- यदि आप शहजादा हैं तो मैं रईसजादा हूँ? यह कहकर वह भी राजकुमार के पास जा बैठा। दोनों बैठे रहे। संयोग से थोड़ी देर में एक भाई आया, वह भी प्यासा था। उसने कुएँ से पानी निकाला, पीया और चलता बना। दोनों ने पुकार कर कहा- "अरे भाई! हमें भी पानी पिला जाओ।" उस भाई ने कहा- "अरे! सभी सुविधा होते हुए भी आप दोनों प्यासे क्यों?" उत्तर मिला- "भाई मैं शहजादा हूँ और ये रईसजादा हैं," हम खुद काम नहीं करते। इस पर वह भाई बोला- भाइयों में हरामजादा हूँ। मैं दूसरों का काम नहीं करता। यह दृष्टान्त हमें अपना कार्य स्वयं करने की प्रेरणा करता है।

माला पत्नी फेर लेगी, माँ फेर लेगी- उससे मेरा बेड़ा पार हो जाएगा। ऐसा सोचने से बेड़ा पार होने वाला नहीं। सामायिक, तप, पौषध पत्नी कर लेगी उससे आपका बेड़ा पार होने वाला नहीं है। प्रतिदिन ५०० पाडे मारने वाला काल सौकरिक कसाई का पुत्र सुलस, अभयकुमार के कहने से हिंसा का कारोबार छोड़कर अहिंसक बन गया। पुत्र का दृढ़ निश्चय सुनकर परिवार वालों ने व्यवसाय करने के लिये दबाव डाला। सुलस ने युक्ति से काम लिया। वह बोला- परलोक में मेरे कर्म मुझे ही भोगने पड़ेंगे। पारिवारिक जनों ने समवेत स्वर में कहा- आधा-आधा कर लेंगे। इस पर सुलस ने अपने पैर पर तलवार डाल ली, तलवार की धार से पैर की चमड़ी कट गई एवं खून निकलने लगा। सुलस ने कहा- आप मेरी पीड़ा को

भी भोगने में सहभागी बनिये। सभी ने कहा- खुद का दर्द तो खुद को ही भोगना पड़ेगा। इस पर सुलस बोला- जब मेरा दर्द मुझे ही भोगना पड़ रहा है तो इसी तरह स्वयं के बांधे हुए कर्म भी स्वयं को ही भोगने पड़ेंगे। अतः करणी सोच समझकर करनी है। यदि भीतर को नहीं संवारा, तो व्यक्ति संसार से तिरने वाला भी नहीं। उपयोग सहित करणी करनी है।

एक युवा मण्डली नशे में नदी किनारे पहुँची। नाव में बैठकर सभी युवक चप्पू हिलाते रहे, हिलाते-हिलाते दिन उग आया, लेकिन वे जहाँ के तहाँ थे; क्योंकि नाव बंधी हुई थी। हमारी स्थिति भी यही है- जब तक कषायों की खूँटी नहीं हिलेगी, आगे बढने वाले नहीं है। यह जीवन क्षण भंगुर है-

आदमी का जिस्म क्या है, जिस पे फिदां है जहाँ।
एक मिट्टी की इमारत, एक मिट्टी का मकाँ।।
खून क़ा गारा है जिसमें, ईंट जिसमें हड्डियाँ।
चंद श्वासों पर खडा है, ये खयाली आसियाँ।।

यह शरीर की इमारत भी ध्वस्त हो जाएगी। साधना-आराधना में बाहर की दो आँखों के साथ, भीतर की तीसरी आँख खुलना जरूरी है। अन्तर की दृष्टि कारगर नहीं हो तो जीवन का कल्याण होने वाला नहीं।

सुनले घड़ी की टिक-टिक, घड़ियाँ लगाने वाले।
क्षण हाथ ये ना आए, हाथों से जाने वाले।।

सुना है जब घड़ी कम व्यक्तियों के हाथों में थी तब घड़ी पहनकर चलने वाला व्यक्ति अपने आपको शाही समझता था। बात घड़ी के समय की चल रही है- घड़ी का जो काँटा आगे निकल गया वह वापस आने वाला भी हो सकता है, पर जो श्वास चला गया, आयुष्य बीत गया वह लौटने वाला नहीं है।

साधना में सभी को आगे आना है। आपकी नाक पर बैठी हुई मक्खी अपने आपको उड़ानी पड़ती है, इसी तरह धर्म की आराधना भी स्वयं को ही करनी चाहिए। दीना बहिन की विनति है कि आचार्यप्रवर श्रीमुख से प्रवचनामृत फरमाएँ। चाहे भगवन्त बोले नहीं, लेकिन उनका जीवन बोल रहा है। उनके जीवन को देख हम भी संयम के नन्दनवन में आ जाएं, उनकी भव्य आकृति देख हम भी प्रकृति में लौट आएं तो हमारी साधना सिद्धिदायक बन सकेगी। इन्हीं मंगल भावों के साथ....

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः ३९)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(अजीव पर्याय)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.२६७ एक पुद्गल की दूसरे पुद्गल से तुलना कितने प्रकार से की जा सकती है?

उत्तर एक पुद्गल की दूसरे पुद्गल से तुलना वैसे तो अनेक तरह से की जा सकती है, किन्तु उनमें भी मुख्य पाँच प्रकार हैं- १.द्रव्य की अपेक्षा २. प्रदेश की अपेक्षा ३. अवगाहना की अपेक्षा ४. स्थिति की अपेक्षा ५. वर्णादि बोलों की अपेक्षा।

प्र.२६८ द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना, स्थिति व वर्णादि बोलों की अपेक्षा से तुलना करने का क्या आशय है?

उत्तर यद्यपि 'द्रव्य' शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, किन्तु अजीव पर्याय के थोकड़े में द्रव्य से तात्पर्य वस्तु की संख्या है। जिस वस्तु की, जिस दूसरी वस्तु से तुलना की जाती है, वे गिनती में कितनी हैं, उस संख्या को द्रव्य कहा गया है।

'प्रदेश' का अर्थ है- परमाणु जितना पुद्गल जो स्कन्ध से जुड़ा हुआ है, सूक्ष्म है, अविभाज्य है। जिस पुद्गल की दूसरे जिस पुद्गल से तुलना की जा रही है वे दोनों कितने-कितने परमाणुओं से मिलकर बने हैं। उनके प्रदेशों में कितना अन्तर है, इसे प्रदेश की अपेक्षा जाना जाता है।

अवगाहना का अर्थ है कि वह पुद्गल कितने आकाश प्रदेशों पर रहा हुआ है। दो पुद्गलों में आकाश प्रदेशों पर रहने की अपेक्षा कितना अन्तर है, उसे अवगाहना की अपेक्षा से जाना जाता है।

स्थिति अर्थात् समय सीमा। जिन पुद्गलों की आपस में तुलना की जा

रही है, वे अपने वर्तमान स्वरूप में कितने-कितने समय तक रह सकते हैं, स्थिति के आधार पर दोनों में कितना अन्तर होता है, उसे स्थिति की अपेक्षा जाना जाता है।

पुद्गलों में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श पाये जाते हैं। इन वर्णादि की अपेक्षा उनमें जितना अन्तर हो सकता है, उसे वर्णादि बोलों की अपेक्षा से तुलना करके जाना जाता है। उनमें समानता, न्यूनता व अधिकता की जानकारी उक्त पाँचों ही प्रकारों से की जाती है।

प्र.२६९ समानता, न्यूनता व अधिकता की अपेक्षा से कौन-कौन से स्थान बनते हैं?

उत्तर समानता, न्यूनता व अधिकता की अपेक्षा से अजीव पर्यायों में (पुद्गलों में) मुख्य रूप से ६ स्थान (ठाण) बनते हैं, जो इस प्रकार हैं- १. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, २. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक ३. असंख्यात भाग हीन, असंख्यात भाग अधिक ४. असंख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण अधिक ५. अनन्त भाग हीन, अनन्त भाग अधिक और ६. अनन्त गुण हीन, अनन्त गुण अधिक।

इन ६ स्थानों को संक्षेप में द्विस्थानपतित, चतुःस्थान पतित और षट्स्थान पतित इन तीन रूपों में भी विभाजित किया जा सकता है।

प्र.२७० द्विस्थानपतित, चतुःस्थान पतित तथा षट्स्थान पतित का क्या आशय है?

उत्तर द्विस्थान पतित से आशय- १. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, २. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक इन दो स्थानों की हानि-वृद्धि से है।

चतुःस्थान पतित से आशय- उपर्युक्त दो के साथ - ३. असंख्यात भाग हीन, असंख्यात भाग अधिक तथा ४. असंख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण अधिक इन चार स्थानों तक की हानि-वृद्धि से है।

षट् स्थान पतित से आशय- उपर्युक्त चारों के साथ ५. अनन्त भाग हीन, अनन्त भाग अधिक तथा ६. अनन्त गुण हीन, अनन्त गुण

अधिक, इस प्रकार इन छहों स्थानों तक में होने वाली हानि-वृद्धि से है।

उक्त स्थानों में हानि-वृद्धि प्रदेश, अवगाहना, स्थिति तथा वर्णादि की अपेक्षा से घटित होती है। द्विस्थान पतित में संख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि होती है। चतुःस्थान पतित में संख्यात-असंख्यात गुणी तक तथा षट् स्थान पतित में संख्यात-असंख्यात व अनन्त गुणी तक हानि वृद्धि होती है।

प्र.२७१ द्विस्थानपतित में होने वाली संख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि को उदाहरण से कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर माना कि १० संख्यात है, १०० असंख्यात है तथा १००० अनन्त है। एक पुद्गल १०००० गुणा काला है, दूसरा पुद्गल ९००० गुण काला है। दोनों में १००० का अन्तर है। १०००, दस हजार का दसवां भाग है। १० की संख्या को हमने संख्यात माना है, अतः इन दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर संख्यात भाग हीन-संख्यात भाग अधिक का स्थान बनेगा।

एक पुद्गल १०००० गुण काला है, दूसरा पुद्गल १००० गुण काला हे। १००० से १०००० दस गुणा है। दस को संख्यात माना है। अतः इन दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर संख्यात गुण हीन-संख्यात गुण अधिक का स्थान बनेगा।

निष्कर्ष के रूप में तथा सामान्य बोलचाल की भाषा में यह कहा जा सकता है कि दो पुद्गलों की आपस में जब तुलना करते हैं तब उनमें प्रदेश, अवगाहना, स्थिति, वर्णादि, इन बोलों की अपेक्षा दुगुने से कम अन्तर होता है तब संख्यात भाग हीन संख्यात भाग अधिक का स्थान बनता है। जब उक्त बोलों में दुगुना अथवा दुगुने से अधिक (संख्यात गुणा तक) अन्तर होता है तब संख्यात गुण हीन- संख्यात गुण अधिक का स्थान बनता है।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

युवा-स्तम्भ

आत्मघाती महापापी

अभयकुमार जैन

आत्म-हत्या को सभी धर्मों में महापाप की संज्ञा दी गई है, किन्तु फिर भी प्रतिवर्ष आत्म-हत्याओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष आत्महत्या के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। आत्महत्या करने वालों में महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक होते हैं, जो गृह-क्लेश, आर्थिक स्थिति में गिरावट, निराशा, असाध्य रोग, नशीले पदार्थों का सेवन, प्रेम में असफलता, एकाकीपन, प्रतिशोध, परीक्षा में असफलता, रोजगार के अवसर नहीं मिलना आदि से आत्म-हत्या के लिए प्रेरित होते हैं।

दुनियाभर में जितने लोग हत्या, अपराध, युद्ध और दुर्घटनाओं में नहीं मरते हैं, उनसे ज्यादा खुदकुशी या आत्महत्या से मरते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष २० से ६० लाख लोग आत्महत्या करने का प्रयास करते हैं, उनमें से लगभग १३ लाख लोग इस प्रयास में सफल हो जाते हैं। भारत में भी प्रतिवर्ष कम से कम पाँच लाख लोग खुदकुशी की कोशिश करते हैं और लगभग १ लाख ३० हजार उसमें कामयाब हो जाते हैं। चिंता की बात यह है कि आत्महत्या की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। सन् १९९१ में एक लाख जनसंख्या की तुलना में केवल ९ व्यक्ति आत्महत्या से मरते थे। सन् १९९७ में यह अनुपात बढ़कर १० हो गया। वर्तमान में यह १२ से अधिक हो गया है। यानी प्रतिदिन तीन सौ से अधिक लोग खुदकुशी से मर रहे हैं। आँकड़े यह भी बतलाते हैं कि प्रतिदिन कम से कम पन्द्रह सौ लोग खुदकुशी करने का प्रयास करते हैं। खुदकुशी का प्रयास करने वालों में स्त्रियाँ ज्यादा होती हैं, किन्तु खुदकुशी से मरने वालों में पुरुषों की संख्या अधिक होती है। हाल ही में किसानों, व्यापारियों, सैनिकों और युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति ज्यादा बढ़ी है। आर्थिक संकट और ऋणग्रस्तता भी आत्महत्या का एक कारण है।

आधुनिक समय में मानव स्वभाव में भयंकर परिवर्तन आये हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि धैर्य, सहनशीलता, प्रेम, सहिष्णुता, सौहार्द, परोपकार, करुणा, ईमानदारी इत्यादि मानवीय व नैतिक मूल्यों में तेजी से गिरावट आई है।

परस्पर विश्वास नहीं है। आधुनिकता, स्वच्छंदता और स्वतन्त्रता का ऐसा संगम हुआ है कि संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं एवं होते जा रहे हैं। बुजुर्गों की कोई सुनता ही नहीं, क्योंकि बड़ों को कहना नहीं आता एवं छोटों को सुनना नहीं आता है।

नवयुवक-नवयुवतियों पर टी.वी. का प्रभाव है। नवयुवकों और नवयुवतियों का मेलजोल इस कदर बढ़ा है कि विवाह जैसे अनुष्ठान, जो कि पूर्व में माता-पिता एवं बुजुर्गों की सहमति के बिना सम्पन्न नहीं किए जाते थे, आजकल मन्दिर या न्यायालय में जाकर बिना पारिवारिक जनों की सहमति के कर लिए जाते हैं। अन्तरजातीय विवाहों की भी बाढ़ आ गई है। विवाह के बाद आने वाली कठिनाइयों से लड़के-लड़कियाँ तनावग्रस्त हो जाते हैं। लड़कियों की हालत तो कुछ ज्यादा ही खराब हो जाती है। कई बार इसकी परिणति आत्महत्या में होती है। नशाखोरी की प्रवृत्तियों ने भी आत्महत्या को बढ़ाने में योगदान दिया है। टी.वी. कार्यक्रम एवं विज्ञापन भी कभी-कभी आत्महत्या की प्रेरणा करते हैं।

आज के लड़के/लड़कियों से माता-पिता आवेश में आकर कुछ कह देते हैं या हल्की सी फटकार लगा देते हैं तो बच्चे घर से चले जाते हैं। परीक्षा में असफल होने, नौकरी, धन्धा न मिलने, प्रेम में असफल होने, दाम्पत्य जीवन में दरार आने, व्यापार इत्यादि में घाटा हो जाने पर या अन्य किसी कारण से निराश हो जाने या तनावग्रस्त हो जाने पर वे डिप्रेश हो जाते हैं। आदमी अपने जीवन को भार समझने लगता है और कुछ ऐसा कर गुजरने की सोचता है, जो कि उसे नहीं करना चाहिए। परिवार और पीड़ाओं से त्रस्त, जीवन से निराश एवं ऊबा हुआ, हर तरफ से ठुकराया हुआ, धोखा खाया आदमी विचार करने लगता है कि इस जिन्दगी से कोई लाभ नहीं है। वह अन्ततः आत्महत्या की योजना बनाने लगता है।

कभी असह्य एवं गुप्त रोगों के कारण भी आत्महत्या का मन बनता है। हम कई बार पढ़ते हैं, सुनते हैं कि बड़े-बड़े वैज्ञानिकों, चिंतनशील व्यक्तियों और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भी आत्म-हत्या कर ली जाती है। ऐसी आत्महत्याओं के पीछे मौजूदा राजनीतिक, सामाजिक कारणों का बहुत बड़ा हाथ रहता है, कुछेक मामलों में पारिवारिक कारण भी निमित्त होते हैं।

आत्महत्या के लक्षण :- परिभाषा की दृष्टि से आत्महत्या वह कृत्य है जिसके

द्वारा कोई व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से जानबूझकर अपने जीवन की लौ बुझा देता है। ऐसी.हर असफल कोशिश या मनोवृत्ति आत्महत्या के प्रयास की परिभाषा के अन्तर्गत आती है। जब व्यक्ति के दिमाग में यह बात हावी हो जाती है कि उसे आत्महत्या करनी है तो उसके स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। कुछ लक्षण इस प्रकार हैं–

१. **निराशापूर्ण दृष्टिकोण**- वह हर बात को निराशा की दृष्टि से देखता है, उसकी बातों से यह लगने लगता है कि जीवन व्यर्थ है और वह सुधर नहीं सकता है।

२. **एकाकीपन** - ऐसे व्यक्ति प्रायः एकांतमुखी हो जाते हैं, विचार करते रहते हैं और अपने आप में खोये रहते हैं। वे मित्रों एवं पारिवारिकजनों से पृथक् रहने लगते हैं।

३. **व्यवहार में परिवर्तन**- ऐसे व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। शांत और गम्भीर व्यक्ति भी सक्रिय हो जाते हैं। हर प्रतिकूल स्थिति के लिये स्वयं अपने को उत्तरदायी समझने लगते हैं।

आत्महत्या रोकने के उपाय :

➢ अमरीकी संस्था यूथ सोसायटी नेशनल सेंटर की निर्देशिका शारटोल रास को विश्वास है कि 'आत्महत्या मृत्यु का ऐसा कारण है जिसे कि रोका जा सकता है।' आत्महत्या का विचार आने के समय यह विचार करें कि आत्महत्या तो कायरता है। वास्तव में जीवन संघर्ष ही जिन्दगी का दूसरा नाम है। जीवन में सफलता–असफलता, सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय, उतार-चढ़ाव आदि की स्थिति आती रहती है।

➢ हर स्थिति में धैर्य एवं साहस रखें तथा यह विचार करें कि मर जाने के बाद कितने लोग मेरे कारण दुःखी तथा परेशान होंगे। वृद्ध माता–पिता, जिनको कि जिन्दगी का सहारा चाहिये, को अकेला व बेसहारा छोड़कर जाना कहाँ तक मुनासिब है। पत्नी एवं बच्चों की देखभाल व परवरिश करने वाला कौन रहेगा ?

➢ आत्महत्या से किसी समस्या का समाधान नहीं होता, इससे दूसरी समस्याएँ विकराल एवं भयावह रूप से प्रकट होंगी। केवल एक नादानी की हरकत का पारिवारिकजनों को कितना खामियाजा भुगतना पड़ेगा। आज तक किसी भी

चिन्तक, विचारक, धर्म-प्रचारक, समाज-सुधारक, दार्शनिक या किसी अन्य ने भी आत्महत्या को उचित नहीं ठहराया है।

- भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३०१ तथा ३०६ के अनुसार आत्महत्या दण्डनीय अपराध है जिसके अन्तर्गत आत्महत्या का प्रयास करने तथा इसमें सहयोग देने वाले को दण्डनीय अपराधी माना गया है। मनुष्य-जीवन बड़ा दुर्लभ है, इस जीवन के लिए देव भी तरसते हैं तो फिर इस दुर्लभ जीवन को गंवाने से क्या लाभ ?
- जीवन को सद्कार्यों में व्यतीत करना चाहिये। मनुष्य को भविष्य की व्यर्थ की चिन्ताओं से ग्रसित व आशांकित नहीं होना चाहिये। आदमी को हमेशा व्यस्त रहना चाहिये। अवकाश के क्षणों का भरपूर आनन्द लेना चाहिये। अच्छी धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ना चाहिए। मनुष्य को आध्यात्मिक होना चाहिए। महापुरुषों की जीवनियां पढ़नी चाहिये। अपनी आवश्यकताएँ सीमित होनी चाहिए तथा विलासिता से दूर रहना चाहिये।
- मद्यपान, धूम्रपान एवं नशीले पदार्थों के सेवन से हमेशा दूर रहना चाहिये। मद्यपान के बाद तो जीवन में दूसरी बुराइयाँ स्वतः ही शुरु हो जाती हैं, परिवार के परिवार तबाह हो जाते हैं।
- लालच के वशीभूत होकर जुआ नहीं खेलें। न ही कोई ऐसा गलत कार्य करें, क्योंकि हर गलत कार्य के गलत नतीजे होते हैं तथा हर कार्य के परिणाम भुगतने पड़ते हैं। यह तो विज्ञान ने भी माना है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती हैं। सत्य, ईमानदारी, वफादारी से कभी डिगना नहीं चाहिये। चाहे कितनी ही विषम परिस्थितियाँ आ जायें, उनसे जूझना सीखें। मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के प्रति सहज रहें। अधिक महत्वाकांक्षी न बनें, संतोषी बनें।
- हमेशा प्रसन्न रहने का प्रयास करें, तनाव रहित रहें। स्वस्थ रहने के लिये प्राकृतिक तौर-तरीकों से रहें। सुबह-शाम पैदल घूमना, समय पर सोना एवं समय पर उठना अपनी दिनचर्या होनी चाहिये।
- आधुनिक समय में लोग डिप्रेशन के शिकार होने लगते हैं। डिप्रेश होने पर व्यक्ति का झुकाव आत्महत्या की तरफ हो जाता है। अतः सम्बन्धित लोग

उसको डिप्रेशन की स्थिति से उबारें। कुशल मनोचिकित्सक से परामर्श लेकर डिप्रेशन को कम किया जा सकता है। इसमें परिवारजनों को सजग रहना चाहिये। यदि कोई आत्मघाती प्रयास कर चुका हो तो घर के सदस्यों, मित्रों, रिश्तेदारों तथा सामाजिक संस्थाओं का यह दायित्व है कि उसमें आत्मविश्वास का संचार करें, निराशाजन्य भावों को न पनपने दें।

आत्महत्या से बचने हेतु आत्म-चिंतन के लिए कुछ विचारणीय बिन्दु :-

- हमेशा व्यस्त रहें, दिमाग को सदैव रचनात्मक कार्यों में लगाये रखें।
- असफलता मिलने पर पुनः विचार करें। असफलता के कारणों को खोजें और सफलता की ओर अग्रसर हों।
- मन को संकीर्ण विचारों से हटायें, उदार तथा विशाल दृष्टिकोण रखें, इससे असंतोष की भावना दूर होगी।
- संतोषी सदा सुखी। असंतोष से बचें, मनुष्य में गलत विचार एवं आपराधिक भावनाएँ-असंतोष के कारण ही पनपती हैं।
- कठिनाइयों, मुसीबतों एवं उलझनों का डटकर मुकाबला करें। जीवन में धैर्य रखें। आत्मविश्वास व आत्म संयम बहुत जरूरी है।
- सदैव प्रसन्न रहें, हर हाल में मस्त रहें, क्योंकि समय तो परिवर्तनशील है, अच्छे, बुरे सभी दिन आते हैं और चले जाते हैं।
- साधु-संतों एवं महापुरुषों के संसर्ग में रहें, निश्चित रूप से आपको मानसिक शांति का अनुभव होगा।

'तृप्ति', बंदा रोड, भवानीमण्डी-३२६५०२, जिला-झालावाड़ (राज.)

अनमोल वर्तमान

गया समय न लौटकर आता, वह तो केवल सपना है,
कल को किसने देखा रे प्राणी, वह भी कपोल कल्पना है।
जो करना है कर ले इस पल, वर्तमान ही अपना है,
अन्तर्मन से सोच रे अप्पा, आखिर देह को जलना है।
भूत-भविष्य की आस करे क्या, वर्तमान ही अपना है।।

-अरिहन्त (अप्पा), सिद्धान्तशाला, महावीर उद्यानपथ, बजाज नगर, जयपुर

आध्यात्मिक लेख

ज्ञान-अज्ञान का जीवन पर प्रभाव

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

महत्त्व या मूल्य उसी का है, जिससे हित हो। यही बात ज्ञान पर भी चरितार्थ होती है। जिस ज्ञान से अपना हित हो, वही ज्ञान है, जिस ज्ञान से अहित हो, वह अज्ञान है। जिस ज्ञान का अनुसरण करने से परिणाम में दुःख मिले, वह ज्ञान अहितकर है। वह अज्ञान है। यहाँ अज्ञान का अर्थ ज्ञान का अभाव नहीं है। प्रत्युत भ्रान्त ज्ञान है। जैसे यह मानना कि बाह्य पदार्थ, वस्तु, व्यक्ति, घटना, परिस्थिति आदि सुख-दुःख के कारण हैं- यह ज्ञान भ्रान्त ज्ञान है, अज्ञान है, क्योंकि वस्तुतः बाह्य पदार्थ या घटनाएँ सुख-दुःख के कारण नहीं हैं। यदि ये सुख-दुःख के कारण होते, तो सुखद वस्तु सदा सुख ही देती रहती, परन्तु ऐसा नहीं होता है। उदाहरणार्थ ताजमहल देखने के सुख को ही लें, एक व्यक्ति ताजमहल के सौन्दर्य की प्रशंसा पढ़कर या सुनकर, हजारों रुपया व्यय कर विदेश से भारत आया और आगरा गया, वहाँ ताजमहल देखा और उसके सौन्दर्य को देखकर बड़ा हर्षित हुआ। परन्तु वह हर्ष या सुख कुछ ही घंटों में क्षीण होता हुआ खत्म हो गया। अब उसे ताजमहल देखने में कोई रस या सुख नहीं रहा और वह वहाँ से जाने के लिए आतुर होने लगा। यहाँ विचारणीय बात यह है कि यदि ताजमहल देखने में कोई रस या सुख होता, तो ताजमहल भी वही व वैसा का वैसा है, व्यक्ति भी वही है, आँखों में देखने की शक्ति भी ज्यों की त्यों है। अर्थात् वस्तु, वस्तु को देखने वाला व्यक्ति, देखने की शक्ति आदि सब ज्यों की त्यों ही है। अतः सुख भी ज्यों का त्यों बना रहना चाहिये, परन्तु सबके ज्यों के त्यों विद्यमान रहते हुए भी सुख का अंत हो जाता है। ताजमहल के पहरेदार को तो ताजमहल देखने में सुख लगता ही नहीं है। इससे यह परिणाम निकलता है कि ताजमहल सुख नहीं देता। यदि ताजमहल देखने से सुख मिलता, तो उसे देखने वाले सब व्यक्तियों को, सब काल में, सदा एक-सा सुख मिलता। यही तथ्य खाने-पीने-सुनने आदि पर भी लागू होता है। वास्तविकता यह है कि कोई भी बाह्य पदार्थ वस्तु, व्यक्ति, घटना आदि सुख-दुःख नहीं देते, इन्हें सुख-दुःख का कारण मानना या समझना भूल है, भ्रान्ति है, अज्ञान है।

अपने सुख-दुःख का कारण बाहरी वस्तु, व्यक्ति, घटना आदि को

मानना बहिर्दृष्टि है, यही अज्ञान है, क्योंकि बाहरी वस्तुएँ या घटनाएँ वास्तव में सुख–दुःख की कारण हैं नहीं। यदि ये सुख–दुःख का कारण होतीं, तो सबको एक समान सुख–दुःख देतीं तथा सुखद वस्तु सदा सुख देती और दुःखद वस्तु सदा दुःख देती। एक ही वस्तु या घटना जो किसी एक व्यक्ति के लिए सुखद होती है वही किसी दूसरे व्यक्ति के लिए दुःखद होती है। जो वस्तु या घटना किसी एक व्यक्ति के लिए सुखद होती है, वही किसी दूसरे व्यक्ति के लिए दुःखद होती है। इसी प्रकार जो वस्तु या घटना किसी व्यक्ति के लिए अभी सुखद है वही कालान्तर में उसके लिए दुःखद हो जाती है। यदि बाहरी वस्तु, घटना आदि सुख–दुःख का कारण होती, तो सबको, सब काल में, सब क्षेत्र में, सब अवस्थाओं में एक–सा सुख या दुःख देती। इससे यह फलित होता है कि सुख–दुःख का कारण वस्तु, व्यक्ति, घटनाएँ आदि बाह्य सामग्री नहीं है। इस सत्य ज्ञान को स्वीकार न करना और बाह्य सामग्री को सुख–दुःख का कारण मानना अज्ञान है।

वस्तुतः सुख–दुःख का कारण वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, घटना आदि बाहरी सामग्री न होकर प्राणी के अन्तरंग में होने वाली राग–द्वेषात्मक प्रतिक्रिया है। यदि व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि की कोई प्रतिक्रिया न करे, उनके प्रति तटस्थ रहे, केवल ज्ञाता–द्रष्टा रहे, तो उसे सुख– दुःख नहीं होता है। इससे यह फलित होता है कि सुख–दुःख का कर्त्ता –अकर्त्ता अन्य कोई न होकर प्राणी स्वयं ही है। इस तथ्य को स्वीकार करना ही ज्ञान है। जैसा कि कहा है– *अप्पा कत्ता–विकत्ता य दुहाण य सुहाण य।* (उत्तरा. अध्ययन 20 गाथा 37) अर्थात् आत्मा स्वयं ही अपने सुख–दुःख का कर्त्ता–अकर्त्ता है। अपने सुख–दुःख का कारण अपने अन्तर में देखने वाला ही अंतर्दृष्टि है, वही ज्ञानी है।

जो दुःख का कारण अपने को मानता है, वही दुःख से मुक्ति पा सकता है। जिस ज्ञान से दुःख से सदा के लिए आत्यन्तिक मुक्ति मिले, वही सम्यक् ज्ञान है। इसके विपरीत जो दुःख का कारण अन्य को मानता है, वह दुःख से कभी भी मुक्ति नहीं पा सकता, क्योंकि उसका दुःख से छुटकारा पाना 'पर' पर निर्भर है, वह पराधीन है, पराधीनता स्वयं दुःख है। दुःख उत्पत्ति का कारण अन्य को मानना दुःख से मुक्ति नहीं दिला सकता। अतः अपने दुःख का कारण 'पर' को मानना अज्ञान है, भ्रान्ति है। शान्ति, स्वाधीनता, सरसता, अमरता आदि सिद्धों के समस्त गुण जीव के स्वभाव हैं। अतः सभी जीवों को ये गुण सर्वदा सर्वत्र इष्ट

हैं। यह स्वभाव का ज्ञान ही स्वाभाविक ज्ञान है। इस स्वाभाविक व स्वभाव के ज्ञान को ही विवेक भी कहते हैं, यह निज ज्ञान है। यह ज्ञान घटता-बढ़ता व नष्ट नहीं होता है। इसी ज्ञान पर आवरण आता है। जैसे सूर्य के प्रकाश पर मेघ का आवरण आने से उसका प्रकट न होना, उस पर आवरण आना कहलाता है। आवरण का अर्थ है- प्रभा का प्रकट न होना। ऐसा ही ज्ञान का अनादर करने पर होता है। ज्ञान का जितना अनादर होता है, आवरण उतना ही अधिक सघन होता है। ज्ञान के विपरीत श्रद्धान या विश्वास अज्ञान है अर्थात् पराधीनता को स्वाधीनता मान्नना, सुखाभास (क्षणिक सुख) को सुख मानना आदि, यही मिथ्यात्व है। मोह व कषाय के घटने से ज्ञान का आवरण घटता है। जिससे ज्ञान गुण प्रकट होता है- इसे ही ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम कहते हैं। ज्ञान गुण के प्रकटीकरण के साथ-साथ इन्द्रियों की संरचना में वृद्धि होती है। इन्द्रियों का विकास होता है। इन्द्रिय के विषयों के भोग में सुख का जो आभास है, उसे ही सुख मानना अज्ञान व मिथ्यात्व है। भोग के सुख को, भोग या धन-सामग्री को ही जीवन मानना, अनन्तानुबंधी कषाय है।

स्वाभाविक ज्ञान का, स्वभाव के ज्ञान का, निजज्ञान का प्रकट न होना या अनादर करना, ज्ञानावरणीय कर्म है। ज्ञान गुण का विपरीत श्रद्धान होना, मिथ्यात्व व अज्ञान है। ज्ञान गुण का कार्यान्वित होना उपयोग है। ज्ञान का उपयोग न करने व कम-ज्यादा करने से ज्ञान गुण घटता-बढ़ता नहीं है और न ज्ञान गुण का आवरण घटता-बढ़ता है। यही बात अज्ञान पर भी चरितार्थ होती है। अज्ञान के उपयोग का विस्तार बढ़ने से अज्ञान नहीं बढ़ता है- उपयोग कम होने से अज्ञान घटता नहीं है। अज्ञान का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ज्ञान गुण का विपरीत रूप में परिणमन होना ही अज्ञान है। मिथ्यात्वी का आगम ज्ञान तथा पूर्वों का ज्ञान भी अज्ञान ही है।

ज्ञान गुण जो जीव का स्वभाव है उसी का विपरीत रूप 'अज्ञान' है। ज्ञान गुण प्रकट न हो, तो अज्ञान संभव ही नहीं है। मिथ्यात्व युक्त ज्ञान ही अज्ञान है। अज्ञान में से मिथ्यात्व को निकाल दें, तो वही अज्ञान ज्ञान हो जाता है। मोहनीय कर्म में जितनी कमी होगी, उतना ही दर्शन व ज्ञान गुण का विकास होता है। जिससे दर्शन व ज्ञान की उपयोगिता की क्षमता बढ़ती है। उस क्षमता का उपयोग करना या न करना, कम करना या अधिक करना प्राणी पर निर्भर है।

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (७)

प्रश्न१३. क्या पुण्य सोने की कटार (तलवार) है?

उत्तर– उत्तर अपेक्षाकृत दिया जा सकता है। पुण्य सोने की कटार नहीं भी है और सोने की कटार है भी।

पुण्य सोने की कटार नहीं है– क्योंकि कटार काटने का और काटने पर गिराने का काम करती है। जबकि पुण्य काटने का या गिराने का नहीं, अपितु सहयोग देकर आगे बढ़ाने का कार्य करता है। निगोद में अव्यवहार राशि में अकाम निर्जरा द्वारा पुण्योपार्जन करता हुआ जीव व्यवहार राशि में प्रविष्ट होता है। एकेन्द्रिय से द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय से यावत् पंचेन्द्रिय तक पहुँचाने में सहयोग पुण्य ही तो देता है। पुण्य के बिना साधक धर्म नहीं कर सकता; क्योंकि धर्म करने के लिए जिस मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय जाति की आवश्यकता होती है वह पुण्य से ही तो प्राप्त होती है। सम्यक्त्व मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है। जब तक पुण्य का द्विस्थानिक अनुभाग, चतुःस्थानिक नहीं होता तब तक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता और पुण्य का यह अनुभाग जब तक उत्कृष्ट नहीं होता तब तक केवलज्ञान नहीं हो सकता। पुण्य के बिना साधक देश व सफल चारित्र का पालन नहीं कर सकता। अंतगडदसा सूत्र में दीक्षा व व्रत पालन के संदर्भ में कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि से यही कहते हैं कि 'अहं अधम्मे, अकयपुण्णे' मैं पुण्य हीन हूँ इसलिए व्रत आराधन व संयम पालन नहीं कर सकता। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी जैन दीक्षा लेने वाली आत्माएँ अनन्त पुण्यशाली होती हैं। पुण्य की बहुलता हुए बिना दीक्षा नहीं हो सकती। आशय यही है कि पहले गुणस्थान से सीधा चौथे गुणस्थान में पहुँचाने वाला, पाँचवें गुणस्थान देशचारित्र, छठे/सातवें गुणस्थान में सर्वचारित्र की आराधना कराकर, गुणश्रेणि में अनंत गुणी विशुद्धि के द्वारा, घाति कर्मों के वृंद को क्षय कर तेरहवें गुणस्थान में पहुँचाने वाला तथा चौदहवें गुणस्थान के अंत में जिस तरह गंतव्य स्थान के आने पर साधन (वाहन) अपने आप छूट जाता है, उसे छोड़ने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं होती। ठीक इसी प्रकार

बिना पुरुषार्थ पुण्य स्वयमेव छूट जाता है और गंतव्य प्राप्त हो जाता है। पुण्य धर्म के द्वारा साधक को मोक्ष-प्राप्ति के लिए सहयोग देता है, आगे बढ़ाता है, अतः उसे कटार (तलवार) नहीं कहा जा सकता।

पुण्य सोने की कटार है– १. क्योंकि कटार हमेशा अपनी सुरक्षा के लिए अपने पास रखी जाती है, ताकि संकट के समय अपने प्राणों की रक्षा हो सके। ठीक इसी तरह पुण्य भी सुरक्षा कवच है। पुण्य से ही हम सुरक्षित हैं। पुण्य क्षीण होने पर संकट आते देर नहीं लगती। भगवती सूत्र में गौतम स्वामी द्वारा पृच्छा की गई कि हे भगवन्! यह लवण समुद्र अपनी अथाह जलराशि से जम्बूद्वीप को आप्लावित क्यों नहीं करता? उत्तर फरमाया गया कि इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में ऐसी-ऐसी पुण्यवान, न्यायनीतिवान, धर्मसंस्कारों से सम्पन्न आत्माएँ रही हुई हैं जिनके त्याग के प्रभाव से, धर्म/पुण्य के प्रभाव से यह लवण समुद्र सीमाओं में बंधा हुआ है, मर्यादित है। जिस दिन दान/पुण्य में कमी आयेगी उस दिन यह प्रकृति अपना उत्पात दिखाना शुरु कर देगी। द्वारिका का विनाश तब तक नहीं हो पाया जब तक आयंबिल की ओली शुरु थी, उसके बंद होते ही द्वारिका का विनाश हो गया। धर्म के साथ पुण्य स्वभाव से ही होता है, उसे करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और जब धर्म/पुण्य साथ होता है तब हमारा जीवन सुरक्षित रहता है। पुण्य से ही जीवन सुरक्षित है। अतः वह सोने की कटार है। २. कटार काटने का कार्य करती है, शत्रु का संहार करती है, ठीक इसी तरह पुण्य के द्वारा न्याय नीति के कार्यों में रुचि होने से हिंसा, झूठ, चोरी आदि शत्रुओं का हनन करने के कारण पुण्य कटार समान है।

प्रस्तुत शास्त्र में देव द्वारा कामदेव जी के लिए तथा रेवती द्वारा महाशतक जी के लिए 'पुण्णकामया' विशेषण का प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ होता है पुण्य की कामना करने वाला। श्रावक भी पुण्य की कामना करता है क्योंकि कर्म रूपी शत्रुओं को परास्त करने के लिए पुण्य कटार का कार्य करता है और जिन व्रत/नियमों की पौषधशाला में वे आराधना कर रहे थे वह आराधना बिना किसी व्यवधान के निर्व्याघात रूप से सम्पन्न हो जाए, आत्मगुणों पर आँच न आए, इसलिए पुण्य सुरक्षा कवच रूप था। पुण्य रूपी कटार पास में रहने से सुरक्षा बनी रहती है, संभव है इसी उद्देश्य से पुण्य की कामना की गई हो।

शोधालेख

जीवन-मृत्यु का आधार : आयुष्यकर्म

श्री गौतमचन्द जैन

यह संसार भांति-भांति की भिन्नताओं का एक समुच्चय है। यहाँ हम देखते हैं कि कोई मनुष्य सौ वर्ष तक जीता है, तो कोई गर्भ में ही मर जाता है। बड़े उत्साह के साथ यात्रा पर गए मानव दुर्घटना आदि में अचानक चल बसते हैं। कोई चढती जवानी में मरता है तो कोई वृद्धावस्था में मरता है। कई लोग सदा की भांति सोते हैं और सोते-सोते ही मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में टी.वी. चैनलों पर लोगों के समय असमय चल बसने के समाचार हम पढ़ते ही रहते हैं।

संसार में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं और अनेक ही प्राणी मरण को प्राप्त होते रहते हैं। संसरण को ही संसार कहा गया है। जन्म-मरण की यह अविरल परम्परा अनादि काल से गतिमान है और अनन्त काल तक यह विद्यमान रहने वाली है। यह एक सनातन एवं शाश्वत तथ्य है कि मृत्यु जीवन का परम सत्य है, मृत्यु से बढकर इस दुनिया में और कुछ भी नियत नहीं है, मृत्यु का होना सुनिश्चित है। जीवन मिला है तो जीवन में धान मिले न मिले, जीवन में पद, प्रतिष्ठा मिले,यह भी जरूरी नहीं, लेकिन मृत्यु मिलेगी, यह सुनिश्चित है। आदमी पैदा हुआ, पढ़ लिख पाये या नहीं, पर मृत्यु अवश्य पायेगा। परन्तु प्रश्न है – कब ?
जिसने जन्म लिया है, उसे एक न एक दिन मरना ही होता है। कहा भी है –

राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार।

अर्थात् बड़े-बड़े बलशाली, प्रतापी चक्रवर्ती, वासुदेव आदि समर्थ पुरुष इस भूतल पर आए, मगर उनमें से एक भी मृत्यु से नहीं बच पाया। वास्तव में मृत्यु से बच पाना असंभव है।

तीर्थंकर महावीर का मोक्ष का समय निकट जानकर शक्र वंदन करने को आया और अंजलि जोड़कर बोला–

"भगवन् ! आपके जन्म-काल में जो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र था, उस पर इस समय भस्मग्रह संक्रान्त होने वाला है, जो कि जन्म नक्षत्र पर दो हजार वर्ष तक रहेगा। अतः उसके संक्रमण काल तक आप आयु को बढ़ा लें तो वह निष्फल हो जायेगा। भगवान् ने कहा- "इन्द्र ! आयु के घटाने-बढाने की किसी में शक्ति नहीं है। ग्रह तो केवल आगामी काल में शासन की जो गति होने वाली है, उसके दिग्दर्शक मात्र हैं।"[१] अतः तीर्थंकर भी मृत्यु को टाल पाने में असमर्थ हैं।

इसी सत्य को उद्घाटित करने वाला आख्यान अन्तकृद्दशांग सूत्र में षष्ठ वर्ग के पन्द्रहवें अध्ययन में वर्णित है। अतिमुक्त कुमार अपने पिता से कहते हैं - *"एवं खलु अहं अम्मयाओ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि।"*[२]

अतिमुक्त कुमार ने जब अपने माता-पिता से एक ही विषय को जानने और न जानने की बात कही तो माता-पिता आश्चर्यचकित हो गए। तब अपनी बात को स्पष्ट करते हुए वे अपने माता-पिता से कहते हैं-

"जाणामि अहं अम्मयाओ! जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ! काहे वा कहिं वा कहं वा कियच्चिरेण वा ?"[३]

अर्थात् - 'माता-पिता ! मैं जानता हूँ कि जो जन्मा है, उसको अवश्य मरना होगा, पर यह नहीं जानता कि कब, कहाँ, किस प्रकार और कितने दिन बाद मरना होगा?

उक्त समग्र विश्लेषण मन में सहज ही जिज्ञासा उत्पन्न करता है कि जीवन और मृत्यु का नियामक कोई तत्त्व अवश्य ही होना चाहिए जो उक्त संपूर्ण जिज्ञासाओं का तर्क पूर्ण समाधान प्रस्तुत कर सके।

दर्शनशास्त्र में किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए पंचसमवाय का कथन किया गया है - काल, स्वभाव, नियति, पुरुषार्थ और कर्म। जैन दर्शन में 'कर्म' संबधी विशद विवेचना उपलब्ध होती है। आगमों एवं कर्म ग्रन्थ आदि में तथा श्वेताम्बर, दिगम्बर आदि सभी परम्पराओं में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

---

१. जैन धर्म का मौलिक इतिहास-भाग १, जैन इतिहास समिति-जयपुर एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर। पृष्ठ ६९०-६९१

२. अन्तकृद्दशा सूत्र- श्री आगम प्रकाशन समिति-ब्यावर, वर्ग ६, अध्ययन-१५, सूत्र-१९

३. वही

कर्मसिद्धान्त के अनुसार हमें उपर्युक्त जिज्ञासाओं का तार्किक समाधान उपलब्ध होता है।

प्रस्तुत लेख में जैन कर्म-सिद्धान्त के आधार पर यह मीमांसा की गई है कि आयुष्य कर्म क्या है? यह कितने प्रकार का होता है? इसका बंध कैसे व कब होता है? एक बार बांधा गया आयुष्य क्या कम-ज्यादा किया जा सकता है? आयुष्य कर्म हमें किस प्रकार प्रभावित करता है एवं अकाल मृत्यु का क्या रहस्य है?

परिभाषा एवं स्वरूप

(१) जिस कर्म के रहते प्राणी जीता है तथा पूरा होने पर मरता है, उसे आयुष्य कर्म कहते हैं।

(२) आयुष्य कर्म का स्वभाव कारागृह के समान बताया गया है।[४] जिस प्रकार राजा की आज्ञा से कारागृह में डाला हुआ पुरुष चाहते हुए भी नियत अवधि के पूर्व वहाँ से निकल नहीं सकता उसी प्रकार आयुष्यकर्म के कारण जीव नियत समय तक अपने शरीर में रुका रहता है।

(३) 'गोम्मटसार' में इसे पैर में पड़ी हुई बेड़ी के समान बताया गया है। जैसे पैर में बेड़ी पड़ जाने पर प्राणी एक ही स्थान से बंध जाता है, वैसे ही आयुष्यकर्म आत्मा को अमुक जन्म में निर्धारित अवधि तक रोके रखता है और उसके उदय काल में उससे छुटकारा पाना संभव नहीं है।

(४) तत्त्वार्थराजवार्तिक के अनुसार "जिस कर्म के उदय से जीव, देव, मनुष्य, तिर्यंच और नारक के रूप से जीता है और उसके क्षय होने पर उन-उन रूपों का त्याग करता है, यानी मर जाता है उसे आयुष्य कर्म कहते हैं।"[५]

(५) जिस कर्म के उदय से जीव एक गति से दूसरी गति में स्वेच्छा से न जा सके, अर्थात्-जिस प्रकार पैरों में पड़ी हुई बेड़ी का बंधन जीव को एक स्थान पर रोके रखता है, उसी प्रकार जिस कर्म के उदय से जीव चाहने पर भी दूसरी गति में न जा सके, जो विवक्षित गति में ही जीव को रोके रखे, उसका नाम आयु कर्म है।[६]

(६) जिसके उदय में आने पर भवविशेष में भोगने लायक सभी कर्म फल

---

४. कर्मग्रन्थ भाग १, मरूधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर, गाथा-२३ पृष्ठ ८९;

५. तत्वार्थ राजवार्त्तिक, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, ८.१०.२

६. उत्तराध्ययन सूत्र पर प्रियदर्शिनी टीका भाग-४, पृष्ठ ५७८

देने लगते हैं, वह आयु कर्म है।

इस प्रकार आयुष्यकर्म हमारे जीवन की काल मर्यादा का निर्णायक तत्त्व है। "आयुष्य कर्म की अनुभूति करता हुआ जीव जिस पर्याय में अवस्थित रहता है, वह स्थिति कहलाती है। इसलिए स्थिति, आयुष्यकर्मानुभूति और जीवन ये तीनों पर्यायवाची शब्द हैं।"[७]

आयुष्य कर्म का प्रभाव

अनेक लोग संसार में रही हुई आधि-व्याधि-उपाधि से ग्रस्त हो इच्छा मृत्यु का वरण करने के अभिलाषी होते हैं। पाश्चात्त्य देशों में गम्भीर बीमारियों से ग्रसित रोगी करुण मृत्यु (Mercy Killing) की प्राथना करते हैं। आधुनिक समाज का एक वर्ग आजकल करुण हत्या की वकालात भी करता हुआ नजर आता है। परन्तु यह जानना आवश्यक है कि आयुष्यकर्म का प्रभाव ही ऐसा है कि एक बार जब यह जितनी स्थिति के लिए बांध लिया जाता है, तो उसके फल का भोग किए बिना उससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता। उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित है कि *'कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं'*[८] अर्थात् कर्म कर्त्ता का अनुसरण करते हैं। अन्यत्र कहा गया- *'कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि'*[९] अर्थात् कृत कर्मों का फल भोगे बिना मुक्त नहीं हुआ जा सकता।

संसारस्थ विभिन्न प्राणियों में बालकपना, किशोरावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था आदि जो-जो भी विभिन्न पर्यायें दृष्टिगोचर होती हैं, वे भी आयुष्य कर्म का ही प्रभाव है। देवगति में जहाँ सुख ही सुख है, वैभव का विशाल स्वामित्व जिनके पास है, वे अपने देवत्व को नहीं छोड़ना चाहते, परन्तु आयुष्य कर्म की स्थिति पूर्ण होते ही, उन्हें सारी समृद्धि बरबस ही छोड़नी पड़ती है। इसी प्रकार नारकी जीव जो अपनी अत्यधिक लंबी स्थिति में निरन्तर देवकृत, क्षेत्रकृत व परस्पर वेदनाओं से संक्लिष्ट रहते हैं, प्रतिपल मौत की कामना करते हैं, परन्तु मौत उनसे कोसों दूर भागती है। अनेक मनुष्य भी अपने सुख साधनों के उपयोग में इतने

---

७. "स्थीयते-अवस्थीयते अनया आयुः कर्मानुभूत्येति स्थितिः।
स्थितिरायुः कर्म्मानुभूतिर्जीवनमिति पर्यायः। -प्रज्ञापना मलयगिरि वृत्ति, पृष्ठ-१६९

८. उत्तराध्ययन सूत्र १३.२३

९. उत्तराध्ययन सूत्र ४.३

आसक्त रहते हैं कि वे मृत्यु से भयभीत रहते हैं। निम्न दृष्टांत से यह स्पष्ट होता है-

एक राजा था, जिसे हर घड़ी यह डर लगा रहता था कि कहीं कोई हमला करके उसे मार न डाले। वह सुरक्षा के ढेरों उपाय सोचता, पर उसकी किसी भी उपाय से संतुष्टि नहीं होती। अन्ततः एक दिन एक उपाय उसे सूझा। उसने सोचा कि एक ऐसा महल बनवाया जाए, जो चारों ओर से बंद हो। न उसमें रोशनदान हो, न जंगलें और न खिड़कियाँ। बस आने-जाने के लिए मात्र एक दरवाजा हो। ऐसे महल पर किसी का भी हमला कारगर नहीं हो सकता। राजा ने कुछ ही दिनों में मनचाहा महल तैयार करवा लिया। उस महल को सभी देखने वालों ने बहुत सराहा और शुभ मुहूर्त से राजा उस महल में रहने लगा। दुश्मन तो क्या, परिंदा तक भी उसमें आ, जा नहीं सकता था।

संयोग से एक दिन एक वृद्ध आदमी भी उस महल को देखने आया। राजा ने बड़े उल्लास से उसे अपना महल दिखाया, परन्तु उस वृद्ध ने कोई खुशी या उल्लास अभिव्यक्त नहीं किया। राजा ने पूछा, "कहो, महल कैसा लगा?" वृद्ध ने गंभीर होकर कहा "राजन्! महल तो अच्छा है, लेकिन आपने एक भूल की है।" राजा ने विस्मित हो पूछा, "क्या?" वृद्ध ने कहा, "आपने एक दरवाजा रखा है। उस दरवाजे से दुश्मन तो नहीं आ सकता, पर अगर मौत आ गई तो?" वृद्ध की बात सुन कर राजा चुप हो गया। उसने जाना कि मृत्यु के आक्रमण से कोई भी बचा नहीं सकता है। उक्त दृष्टांत से परिलक्षित होता है कि जब आयुष्य कर्म समाप्ति की ओर होता है, तब दुनिया की कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती। बड़े-बड़े मंत्रवादी, तन्त्रवादी भी इसका रहस्य समझ पाने में असमर्थ हैं। आज का विज्ञान जो नित नई-नई खोजें कर रहा है, वह भी इस गुत्थी को नहीं सुलझा पाया है। चाहे मनुष्य भोजन कर रहा हो, या भजन कर रहा हो, बिस्तर पर सो रहा हो या दुकान पर बैठा हो, यदि आयुष्य कर्म अर्थात् स्थिति पूर्ण हो गई तो जीवन लीला उसी क्षण समाप्त हो जाती है।

आयुष्य कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ :-

तत्त्वार्थसूत्र में जीव दो प्रकार के निरूपित हैं- "**संसारिणो मुक्ताश्च**"।[१०] 'संसारी' जो कर्मों से युक्त हैं एवं 'मुक्त' जो कर्मों का क्षय कर मोक्ष

१०. तत्त्वार्थ सूत्र, विवेचक-सुखलाल संघवी, प्रकाशक-पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, २.१०

को प्राप्त कर चुके हैं। 'संसारी' जीव चार गतियों में पाए जाते हैं, इस अपेक्षा से आयुष्य कर्म की चार प्रकृतियों का निर्देश किया गया-

"नारकतैर्यग्योनमानुषदेवानि।'[११]

अर्थात् नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव-ये चार आयु के भेद हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में-

नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य।

देवाउयं चउत्थं तु आउकम्मं चउव्विहं।'[१२]

अर्थात् आयु कर्म चार प्रकार का है- नैरयिकआयु, तिर्यक्आयु, मनुष्यायु और चौथा देवायु।

(१) नरकायुष्य उत्तर प्रकृति एवं बंध के कारण- नरकायु कर्मप्रकृति के उदय से नरक के सात प्रकारों में से किसी भी नरक में स्थित जीव वहाँ महाभयंकर वेदनाओं को भोगता हुआ प्रतिक्षण दुःखों से त्रस्त रहता है। दुःखों से छुटकारा पाने के लिए वह हरपल मरने की कामना करता है, पर नरकायु कर्म के उदय से वह इसकी स्थिति पूरी हुए बिना काल को भी प्राप्त नहीं कर सकता है। नारकी जीवों की जघन्य स्थिति १०,००० वर्ष एवं उत्कृष्ट स्थिति ३३ सागरोपम है। वस्तुतः नरकगति संसारी जीवों के लिए महाभयंकर यातना गृह है जहाँ पूर्वकृत पापकर्मों का घोर दुःख भोगा जाता है।

आगमकारों ने नरकायु बंध के निम्न चार कारण बताए हैं- 'चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयाउयत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा- महारंभताए, महापरिग्गहयाए, पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं।'[१३]

(अ) महारंभ करने से- महान् हिंसाकारी कार्य करना जिससे निरन्तर षट्कायिक जीवों की हिंसा होती है, महारम्भ कहलाता है। तीव्र, क्रूर भावों से ऐसी हिंसक वृत्तियों में आसक्त अज्ञानी आत्माएँ नरकायु का बंध करती हैं। सच्चे श्रावक को १५ कर्मादानों से विमुख रहने की प्रेरणा जैन शास्त्रों में की गई

---

११. तत्त्वार्थ सूत्र, विवेचक-सुखलाल संघवी, प्रकाशक-पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, ८.११

१२. उत्तराध्ययन सूत्र ३३.१२- आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, पृष्ठ ५६५

१३. स्थानांग सूत्र-चतुर्थ स्थान-चतुर्थ उद्देशक, सूत्र ६२८

है जो वस्तुतः अत्यधिक हिंसाकारी एवं दुर्गति बंधक है।

(आ) महापरिग्रह- सांसारिक वस्तुओं में अत्यधिक मूर्च्छा भाव रखना एवं संग्रह या संचय की प्रवृत्ति से निरंतर परिग्रह के अभिवर्धन की उधेड़ बुन में ही रहना महापरिग्रह है। बहुत से लोग अपने जीवन का अधिकांश समय इसी में व्यतीत कर देते हैं। वे जीवन के इस अटल सत्य से अपरिचित होते हैं कि-

जिन्दगी भर का कमाया, साथ में क्या जायेगा,
इस धरा का इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।
बीतने वाली घड़ी को, कौन लौटा पाएगा,
यह सुअवसर खो दिया तो, अंत में पछताएगा।।

परन्तु यहाँ यह समझना भी आवश्यक है कि प्रभु महावीर ने दशवैकालिक सूत्र में मूर्च्छा को यानी ममत्व को परिग्रह कहा है "मुच्छा परिग्गहो वुत्तो", न कि धन-संपति को। आनन्द आदि श्रावक विशाल धन संपत्ति, गोकुल, क्षेत्र आदि के स्वामी होते हुए भी उनमें आसक्त न होने से अल्प परिग्रही थे, जबकि कुण्डरीक जो मात्र सात दिन की राज्य लिप्सा, भोगलिप्सा के कारण ही नरकगामी बना, महापरिग्रही कहलाया।

(इ) पंचेन्द्रिय वधः- गर्भपात कराना, कत्लखाने चलाना, आतंकवादी घटनाएँ, मछलियों, पक्षियों का शिकार आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनमें निरंतर पंचेन्द्रिय जीवों की घात होती है, नरकायु का कारण है। आज की ज्वलंत समस्या कन्या भ्रूण हत्या भी नरकायु का कारण है। बड़ी विडंबना है कि अनेक जैन परिवारों में भी गर्भ-परीक्षण करवाकर, कन्या भ्रूण की उपस्थिति का पता चलने पर गर्भपात करवा दिया जाता है जो महावीर के अनुयायियों के लिए कलंक है।

(ई) मांसाहारः- मांसाहार करने वाले अत्यन्त ही क्रूर,बीभत्स एवं वहशी किस्म के मनुष्य होते हैं। इनके हृदय में प्राणिमात्र के प्रति दया-करुणा की कोई भावना नहीं होती है। माँस का उत्पादन कोई खेत में तो होता नहीं है, बल्कि मूक-मासूम प्राणियों के शरीर की बलि लेकर ही मांस का उत्पादन किया जा सकता है अतः ऐसे वहशी, वीभत्स कार्य वस्तुतः नरकायु के बंध का कारण है।

तत्त्वार्थ सूत्र में बताया गया- बह्वारंभ परिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः।[१४]

अर्थात् बहु-आरम्भ और बहु-परिग्रह से नरकायु का बंध होता है। आरम्भ-प्राणियों को दुःख पहुँचे ऐसी कषायपूर्वक प्रवृत्ति। परिग्रह- यह वस्तु मेरी है और मैं इसका स्वामी हूँ ऐसा संकल्प। आरंभ और परिग्रह- वृत्ति का बहुत तीव्र होना तथा हिंसा आदि क्रूर कामों में सतत प्रवृत्ति होना, दूसरे के धन का अपहरण करना अथवा भोगों में आसक्ति रहना, नरकायु के बंध के कारण हैं।

कर्मग्रन्थ में नरकायु बंध के कारणों का उल्लेख करते हुए कहा गया-

'बंधइ नरयाउ महारंभपरिग्गहरओ रुद्दो।[१५]

अर्थात् बहु-आरंभी, बहु-परिग्रही और रौद्र परिणाम वाला जीव नरकायु का बंध करता है।

'आचार रत्नाकर' ग्रन्थ में नरकायु बंध के निम्न कारण भी बताए गए हैं-

अतिलोभ करना, अति मत्सरता करना, अति क्रोध करना, मिथ्याकर्म करना, पंचेन्द्रिय वध करना, बड़ा असत्य बोलना, बड़ी चोरी करना, व्यभिचार सेवन करना, कामभोगों में आसक्त होना, मर्मस्थान का भेदन करना, पाँच इन्द्रिय के विषयों में तीव्र लुब्धता होना, संघ की घात करना, जिनवचन का उत्थापन करना, तीर्थंकर के मार्ग की प्रतिष्ठा कम करना, मदिरापान करना, मांसभक्षण करना, रात्रि भोजन करना, कंदमूल आदि अभक्ष्य खाना, रौद्र ध्यान करना, कृष्णादि तीन अशुभ लेश्या में मृत्यु होना।[१६]

(क्रमशः)

---

१४. तत्त्वार्थ सूत्र- ६.१६

१५. कर्मग्रन्थ-भाग १, मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर- गाथा ५७, पृष्ठ-१५२

१६. जैन तत्त्व प्रकाश, अमोलक ऋषि जी, श्री अमोल जैन ज्ञानालय, धुले। पृष्ठ-१६२

Maturity

A mature person is able to say, "I was wrong". He is also able to say, "I am sorry" and when proved right, he does not have to say, "I told you so". Maturity means self-dependability, integrity, keeping one's word. Maturity is the ability to live in peace.

धारावाहिक (क्रमशः४५)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जम्बूकुमार की सातवीं पत्नी रूपश्री ने अरिष्टनेमि और भगवान् महावीर की घटनाओं को प्रस्तुत कर संयम के विचार को कुछ दिनों के लिए स्थगित करने का निवेदन किया। प्रत्युत्तर में जम्बूकुमार ने अपने निर्णय को अधिक दृढ़ करते हुए कहा कि शरीर भी छोड़कर चला जाता है तो इस शरीर के साथी माता-पिता, पुत्र, कलत्र आदि कब तक साथ दे सकते हैं? अतः धर्म ही एक मात्र सच्चा सहारा है। इस सम्बन्ध में जम्बूकुमार कहते हैं-

धर्मः शर्म भुजङ्गपुङ्गवपुरीसारं विधातुं क्षमः,
धर्मः प्रापितमर्त्यलोकविपुलप्रीतिस्तदाशसिनाम्।
धर्मः स्वर्गनगरीनिरन्तर सुखस्वादोदयस्यास्पदम्,
धर्मः किन्न करोति मुक्तिललनासम्भोगयोग्यं जनम्।।

अर्थात् धर्म ही धरणेन्द्रपुरी के सारभूत सुख को प्राप्त करने वाला है, धर्म ही मध्यलोक के चक्रवर्ती आदि के सुखों को देने वाला है, धर्म ही स्वर्ग में निरन्तर रहने वाले सुखों का आस्वादन कराने में समर्थ है। धर्म क्या नहीं कराता ? धर्म की बदौलत ही प्राणी मुक्ति रूपी ललना के भोगने योग्य बनता है।

अतएव रूप श्री ! तत्त्व का विचार करो। मोह की जो गांठ तुम्हारे दिल में बनी हुई है उसे काट डालने का प्रयत्न करो। वास्तव में मोह बड़ा दुष्ट है। इसी की संगति के कारण प्राणी संसार के माता-पिता, पति, पुत्र आदि को अपना मानता है। तब किसी से राग करता है, किसी से द्वेष करता है। इस राग-द्वेष के कारण तीव्र पाप का बन्ध होता है और पाप बन्ध से संसार रूपी अटवी में भ्रमण करता है। यह संसार अटवी अत्यन्त भयानक है। जरा और मरण-यह दो भंयकर सिंह इसमें बसते हैं। वे किसी को पकड़ कर सताते हैं, किसी को दुःखी करते हैं और अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक क्लेश पहुँचाते हैं। इस भव-अटवी में चार गतियां हैं। प्राणी जहाँ जाता है वहीं व्याकुलता और विविध प्रकार की वेदना भोगता है। मोह के वश में होकर आत्मा अनन्तकाल से इस अटवी में चक्कर काट रहा है। तीव्रतर पुण्य के

उदय से यह मानव-भव प्राप्त हुआ है। अतएव मोह का परित्याग करके ऐसा कोई उद्योग करना चाहिए जिससे समस्त दुःखों का सदा के लिए अन्त हो सके।

दुःखों से त्राण पाने के लिए जो उद्योग किया जाना चाहिए वही उद्योग मैं करना चाहता हूँ। मिथ्यादर्शन के विष का वमन करना, सम्यग्दर्शन रूपी अमृतरस का पान करना, आत्मा का अनुभव-ज्ञान प्राप्त करना, आत्मिक सुख के सरोवर में विलास करना, यह एक ऐसा उद्यम है जिसके द्वारा मोह रूपी महामल्ल को पछाड़ा जा सकता है। इसी अमोघ अस्त्र से मोह-शत्रु का संहार हो सकता है। मोह का संहार होने से आत्मा के आगे का पर्दा दूर हो जाता है और शुद्ध चेतना की अभिव्यक्ति होती है। उससे आत्मा-अनात्मा का भेद-विज्ञान होता है। भेद-विज्ञान ही वैराग्य की आधारशिला है। जिसके हृदय में भेद-विज्ञान का प्रकाश उदित हो जाता है वह आत्मा को संसार के समस्त द्रव्यों से, समस्त पर्यायों से भिन्न अनुभव करने लगता है। अभ्यास की वृद्धि होने पर उसे आत्मिक आनन्द का स्वाद आने लगता है। इन्द्रिय-जन्य सुख उसे निःस्सार और तुच्छ प्रतीत होने लगते हैं। जो आत्मा ज्ञान के अभ्यास से चित्त को निश्चल बना लेता है, जो निश्चल वैराग्य के द्वारा संसार के काम भोगों से अपनी रुचि हटा लेता है, जिसे आत्म-सुख को भोगने की तीव्र रुचि पैदा हो जाती है, उसे संसार के राग-रंग फीके, निःस्सार और निःस्वाद जान पड़ने लगते हैं। अतएव आत्मज्ञान को प्राप्त करना आवश्यक है।

रूपश्री ! तुम कहती हो कि कुछ समय ठहर कर, गृहस्थ-अवस्था का अनुभव प्राप्त करके फिर मैं संयम-धारण करूं, किन्तु काल का क्या भरोसा है? मृत्यु चील की भांति सिर पर चक्कर काट रही है। जब वह झपटती है तब कोई किसी की रक्षा नहीं कर सकता। कहा भी हैः-

न वैद्या न पुत्रा न विप्रा न शक्रा,
न कान्ता न माता न भृत्या न भूपा!
यमालिंगितं रक्षितुं सन्तिशक्ताः,
विचिन्त्येति कार्यं निजं कार्यमार्यैः ।।

भावार्थ- जब यमराज किसी का आलिंगन करता है तब वैद्य औषध करके नहीं बचा सकते। पुत्र, कलत्र, माता-पिता, नौकर-चाकर, राजा आदि कोई भी रक्षा करने में समर्थ नहीं होता है। ऐसा विचार कर श्रेष्ठ पुरुषों को अपना कर्त्तव्य करना चाहिए।

ऐसी अवस्था में वर्तमान की अनुकूलता का त्याग करके कौन विवेकशील पुरुष अनियत भविष्य पर निर्भर होकर बैठा रह सकता है ?

अद्यैव हसितं गीतं, पठितं यः शरीरिभिः।
अद्यैव ते न दृश्यन्ते, कष्टं कालस्य चेष्टितम्।।

अर्थात् जो आज ही हँस रहे थे, गा रहे थे, पढ़ रहे थे, वे आज ही दृष्टिगोचर नहीं हो रहे हैं- न जाने किधर चल दिए हैं। काल की चेष्टा सचमुच कष्टकारी है।

अतएव आयु के यह अनमोल क्षण, जिनमें शरीर समर्थ है, इन्द्रियाँ अपने-अपने व्यापार में शक्त हैं, मन में विकृति नहीं है, वृथा खो देने योग्य नहीं है। इनका सदुपयोग करो। मेरे पथ में रोड़ा न बनो।

रूपश्री ! तुमने जो दृष्टान्त दिया है वह मेरे विषय में लागू नहीं होता है। सिचानक पक्षी जिह्वालोलुपता के कारण दुःख का भागी हुआ था। लोलुपता इस जन्म और पर जन्म में दुःखों की परम्परा को उत्पन्न करती है, यह मैंने पहले ही कहा था। मैं उससे अब विरक्त हो चुका हूँ, तुम स्वयं इन्द्रिय-लोलुपता के फेर में पड़ी हो, अतएव सिचानक का उदाहरण तुम्हीं पर ठीक घटता है।

इसके अतिरिक्त संयम को तुम सिंह के स्थान पर बतलाती हो पर मैं ऐसा कायर और निर्वीर्य नहीं कि उस सिंह से भयभीत होकर भोगों की भट्टी में पड़ कर अपने मूल्यवान् जीवन को वृथा गंवा दूँ। संयम वह सिंह है जो-पराक्रम का प्रचण्ड प्रतीक है जिसका सहारा लेकर मनुष्य भोगों के भेड़ियों से सुरक्षित हो जाता है और अपना इच्छित कार्य सफल कर लेता है। प्रिय ! विश्वास रखो, मैं उस सिंह के मुँह में निर्भय, निःसंकोच होकर प्रवेश करूँगा और उसके जबड़ों से स्वर्ग और मोक्ष का अनुपम, अनिर्वचनीय और अनन्त सुख प्राप्त करूँगा।

रूपश्री ! मैं तुम्हारी भूलभुलैया में भूलकर अपने निर्णीत पथ से विमुख नहीं हो सकता। तुम सब स्वार्थ के लिए चेष्टा कर रही हो। वह स्वार्थ भी वास्तव में स्वार्थ नहीं हैं। सच्चा स्वार्थ आत्म कल्याण है, इन्द्रिय तृप्ति का आयोजन तो जघन्य और निकृष्ट स्वार्थ है और वह दुर्गति में ले जाता है। तुम्हारा कहना मानकर यदि मैं भोगों का खिलौना बन जाऊँगा तो परलोक की वेदनाएं भोगते समय क्या तुम साथ दे सकोगी ? कदापि नहीं। मैं कुछ समय संसार में ठहर जाता, मगर-

आयुर्नश्यति पश्यति प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम्,
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्नदिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरंगभंगचपला विद्युच्चलं जीवनम्,
तस्मान्मां शरणागतं शरण ! त्वं रक्ष रक्षाद्यामुना।।

अर्थात् देखते-देखते आयु प्रतिदिन नष्ट होती जा रही है, यौवन अवस्था क्षण-क्षण में जीर्ण होती है, जो दिन चला जाता है वह सदा के लिए ही चला जाता है-फिर कभी लौट कर नहीं आता, इधर काल सारे संसार का भक्षण करने में लगा हुआ है, लक्ष्मी पानी की तरंगों के समान अत्यन्त चपल है, और क्या कहा जाए, सारा जीवन ही बिजली की भांति क्षण-विनश्वर है। यहाँ कल का कोई ठिकाना नहीं है, अतएव मैं गुरु महाराज से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवन् ! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। शरणदाता ! तुम्हीं मेरी रक्षा करो।

तुल्यजातिवयोरूपान्हतान् पश्यसि मृत्युना।
कथं ते नास्ति निर्वेदो लोहं हि हृदयं तव।।

रूपश्री ! तू अपनी समान जाति वालों को, उम्र वालों को और समान रूप वालों को मृत्यु के पंजे में पड़ा हुआ देख रही है , फिर भी तुझे वैराग्य नहीं आता ! सचमुच तेरा हृदय लोहे का है, अत्यन्त कठोर है।

एक कवि महानुभाव ने भविष्य पर निर्भर होने वालों को सम्बोधित करके कितनी मार्मिक उक्ति कही है-

यस्य वा मृत्युना सख्यं यो वा स्यादजरामरः।
तस्येदं युज्यते वक्तुमिदं श्वो मे भविष्यति।।

अर्थात् जिन्होंने मौत के साथ दोस्ती कर ली हो, या जिन्होंने अजर-अमर होने का पट्टा लिखा लिया हो, वही लोग ऐसा कह सकते हैं कि-यह कार्य मैं कल करूँगा।

कवि ने कितने सुंदर शब्दों में अनुभव पूर्ण बात कह दी है। कल अमुक करूँगा, परसों वहाँ जाऊँगा, बुढ़ापा आने पर संयम धारण करूँगा, ऐसा मन्सूबा करने वाले लोग कितने भोले हैं। रूपश्री! उन्हें यह पता नहीं कि कल तक जीवन बना रहेगा या नहीं। बिल्कुल यथार्थ ही कहा है :-

इदमद्य करिष्यामि, श्वःकर्त्ताऽस्मीति वादिनम्।
कालो झटिति सम्प्राप्तः, नदीवेग इव द्रुमम्।।

अर्थात् इधर आदमी सोचता है कि मैं आज यह काम करूँगा और कल वह काम करूँगा। इसी समय काल लपकता है और वह उसे उठा ले जाता है उसके समस्त मनोरथ ऐसे ही रह जाते हैं।

रूपश्री ! मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह काव्य की कल्पना नहीं है। वह ऐसी बात भी नहीं है जो परोक्ष हो और जिसे तुम जान न सकती हो। यह संसार की दशा का प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला वर्णन है। सारे संसार में यही हो रहा है। फिर भी तुम मुझे अपने पथ से विचलित करने का प्रयास कर रही हो। तुम कहती हो कि कुछ समय तक ठहर कर संसार के वैभव का भोग करो फिर संयम धारण कर लेना। किन्तु जो मनुष्य मृत्यु को अपने सिर पर सवार हुई देख रहा है, उसे संसार की अन्य विभूतियों की तो बात ही क्या, आहार भी नहीं रुच सकता। कहा भी है-

स्वमस्तकसमारूढं मृत्युं पश्येज्जनो यदि।
आहारोऽपि न रोचेत, किमुतान्यविभूतयः ।।

क्या रूपश्री ! इतना होने पर भी तुम संयम लेने में बाधा डालना चाहती हो? तुम्हें तो शीघ्र ही मेरा अनुसरण करना चाहिए और भयंकर संसार से अपना पल्ला छुड़ा लेना चाहिए।

(क्रमशः)

चिन्तन-कण

- सच्चा गुरु वही है जो सेवा, समर्पण एवं सहिष्णुता के द्वारा अनेक गुरुओं का निर्माण करता है।
- आज उपदेश एवं आगम तो हैं, लेकिन उपयोग एवं आचरण नहीं, जिसकी परम आवश्यकता है।
- दोषों से दूरी, जीव से नजदीकी रखना, अपनी निर्दोषता के लिए आवश्यक है।
- अपना मूल्यांकन कम नहीं आंकें, अनन्त धैर्य रखें तथा अपनी नवीन उपलब्धि को सदा प्रस्फुटित करें।
- निज विवेक को जानकर उसका आदर करें, सुने हुए पर श्रद्धा तथा मिले हुए का सदुपयोग करें।
- आज का पुरुषार्थ कल का भाग्य बनता है।

संकलन : श्री जितेन्द्र कोठारी, निमाज

(तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के प्रवचन से संकलित)

उपन्यास (४)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- यज्ञदत्त अपनी पहली पत्नी कमला और दोनों बच्चों को भुलाकर विमला की ही जी हुजुरी करता। विमला अपने पति के सामने तो निर्मला और सोमू से प्यार से बोलती, किन्तु पति के बाहर चले जाने पर अपनी मनमानी करती। तीन वर्ष बाद विमला के भी एक पुत्र और पुत्री का जन्म हो गया। अब तो निर्मला को घर के काम के साथ उसके बच्चों को भी रखना पड़ता। एक दिन निर्मला भोजन न बना सकी तो उसकी सौतेली माँ ने भला-बुरा कहा, उत्तर में सोमू ने भी माँ को अपशब्द कह दिए। यज्ञदत्त ने घर में प्रवेश करते हुए सोमू के अन्तिम शब्द सुने तो लकड़ी लेकर उसकी खूब पिटाई की, उसकी बहिन बचाने आई तो दोनों को ही पीटने लगा। अब आगे....

यज्ञदत्त की आँखों में आज खून उतर आया था। यह नहीं देखा कि मार कहाँ पड़ रही है, निर्दयी बनकर दोनों को बस मारता ही चला जा रहा था।

कुछ देर तक तो विमला चुपचाप देखती रही। उसको शांति मिल रही थी। उसके मन की हो रही थी। लेकिन वह चतुर कलाकार भी तो थी। पलंग से उठी और आगे आकर पति का हाथ पकड़ लिया, बोली-

"ऐसे निर्दयी होकर मत मारो। लड़की है, कुठौर लग गई तो ब्याह में बड़ी कठिनाई हो जायेगी।"

पत्नी के हाथ पकड़ते ही पति नरम पड़ गया, बोला-

"ये तुम्हें ऐसी जली-कटी सुनाते रहें और मैं देखता रहूँ, यह नहीं हो सकता। मुझे बहुत बुरा लगता है।"

विमला ने कहा-"मैं तो बुरा मानती ही नहीं। आप भी बुरा मत मानो। बच्चे हैं, रोज ही ऐसी बातें कहते रहते हैं। मैं माँ हूँ, बच्चों की बातों का क्या बुरा मानूँ। माँ तो सब कुछ सहने के लिए ही होती है।"

यज्ञदत्त का रोष फिर भड़का- "तुमने मुझे पहले क्यों नही बताया? मैं इन्हें सीधा कर देता।"

"ऐसी बातें बताकर मैं आपको दुःखी नहीं करना चाहती थी। अब आप गुस्सा थूंको। दूर से आये हो। थके हुए हो। नहा-धोकर ताजा हो लो, तब तक मैं भोजन बनाती हूँ।" विमला ने शब्दों का मरहम लगाकर पति को ठंडा किया।

इस घटना से विमला ने समझ लिया कि अगर निर्मला और सोमू को घर से निकाल भी दिया जायेगा तो पति को बुरा नहीं लगेगा। अब वह अवसर की ताक में रहने लगी।

कुछ दिन बाद यज्ञदत्त को फिर दूसरे गाँव जाना पड़ा। इस अवसर का विमला ने भरपूर लाभ उठाया। पति की अनुपस्थिति में निर्मला और सोमू को उसने खूब मारा और कह दिया-"इस घर में कदम रखा तो टाँगें तोड़ दूँगी, जान से मार दूँगी" और दोनों को घर से निकाल कर उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

भयभीत निर्मला और सोमू दरवाजे के बाहर काफी देर तक रोते-सुबकते रहे, लेकिन विमला का दिल न पसीजा। विमाता से प्रताड़ित निर्मला और सोमदत्त काफी देर तक रोते रहे, लेकिन जब घर के दरवाजे न खुले तो उन दोनों ने समझ लिया कि इस घर के द्वार अब हमारे लिए हमेशा के लिए बन्द हो चुके हैं। तब निराश-निरुपाय होकर उन दोनों ने वह राह पकड़ी जो नगर के बाहर जाती थी।

चलते-चलते वे दोनों नगर-द्वार तक पहुँच गये। उनके आँसू बह रहे थे, अनेक व्यक्ति मार्ग में मिले थे, उनमें से किसी ने भी उनसे न रोने का कारण पूछा और न ही उनके प्रति सहानुभूति भरे दो शब्द ही कहे।

दो दिन बाद यज्ञदत्त आया और निर्मला-सोमू के बारे में पूछा तो विमला ने कह दिया-"आप जब भी बाहर जाते हैं तो दोनों इसी तरह निकल जाते हैं और आपके आने के कुछ घण्टे पहले ही लौट आते हैं।"

यज्ञदत्त ने भी कह दिया- "जायेंगे कहाँ, कुछ दिन बाद खुद ही ठोकरें खाकर वापिस आ जायेंगे, तुम चिन्ता मत करो।"

और वह भी निश्चिन्त हो गया। उसने निर्मला और सोमू की कोई खबर ही न ली।

यद्यपि निर्मला और सोमदत्त घर से निकल तो पड़े थे पर यह उनके जीवन की प्रथम घटना थी।

सोमदत्त तो अभी अबोध था, नौ वर्ष का ही था, घटना का कोई गम्भीर

प्रभाव उसके मन मस्तिष्क पर नहीं था; फिर उसे बड़ी बहन निर्मला का सहारा भी तो था।

लेकिन निर्मला तो सोलह वर्ष की थी। दुनिया की ऊँच-नीच को पहचानने लगी थी। वह चिन्तित थी-घर से निकलकर कहाँ जायेंगे, कहाँ आश्रय मिलेगा? फिर भी वह भाग्य के भरोसे चली जा रही थी- भूखी प्यासी अंधेरी अनजान राह पर.......... ।

उसकी स्थिति इस समय उस बूँद की तरह थी जो अपने आश्रयदाता मेघ से बिछुड़ जाती है, पवन के झकोरे उसे इधर-उधर भटकाते हैं, तब वह अपने अनिश्चित भविष्य पर घबराती है। लेकिन वही बूँद जब संयोग से सीप में गिर जाती है तो मोती बनकर चमक उठती है, अपने भाग्य पर इठलाने लगती है।

निर्मला का भाग्य भी उसे उसी निर्मल जल की बूँद के समान अनजानी-अनदेखी राहों पर ले जा रहा था। अभी तो भटका रहा था उसे निर्मल मोती के समान चमकाने के लिए। लेकिन भाग्यद्रष्टा कौन है? अदृष्ट को पहले से कौन जान सका है और यदि कोई जान ले तो वह अदृष्ट ही कैसा। प्रारम्भिक कठिनाइयों से तो घबराहट होती ही है। निर्मला के हृदय में भी भय व्याप्त था। उसे अपने चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई दे रहा था, कहीं भी आशा की कोई किरण ही नहीं थी। निराशा ही निराशा थी उसके चारों ओर। भीड़-भाड़ भरा संसार उसे शून्य दिखाई दे रहा था और वह अकेली असहाय सी जैसे तूफानी सागर की गोद में उत्तर रही है........ ।

फिर भी वह चली जा रही थी अपने छोटे भाई सोमदत्त को अपने साथ लिए। सोमू की अब वही एकमात्र संरक्षक थी, सारा उत्तरदायित्व उसी पर था।

नगर का बाहरी मैदान समाप्त होकर वन प्रारम्भ हो चुका था और साथ ही सूर्य भी डूबने को था। निर्मला को भोजन की और आश्रय की फिकर हुई। रात को इस भयावने जंगल में कहाँ रहेंगे ? क्या खायेंगे?

दोनों भाई-बहन सुबह से भूखे थे, पेट सिकुड़ रहा था। लेकिन वन में क्या था वहाँ तो वृक्ष ही वृक्ष थे। उसने वृक्षों पर दृष्टि दौड़ाई-कुछ खाने योग्य फल मिल सकें।

दोनों भाई-बहनों का भाग्य अनुकूल ही था कि चारों ओर नजर दौड़ाते

हुए उनकी दृष्टि में कुछ ऐसे वृक्ष आ गये जिनमें खाने योग्य फल लगे हुए थे। फल तो दिखाई दे रहे थे; पर मिलें कैसे? दोनों में से किसी को भी वृक्ष पर चढ़ना नहीं आता था। पहले ऐसा काम कभी पड़ा नहीं था।

लेकिन विपत्ति सब कुछ सिखा देती है। निर्मला ने छोटे भाई सोमदत्त को नीचे खड़ा किया और कहा-

"मैं वृक्ष पर चढ़कर फल तोड़ कर नीचे गिराती जाऊँगी। तू उन फलों को बीनकर इकट्ठे कर लेना।"

सोमदत्त ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। निर्मला वृक्ष पर चढ़ने का प्रयास करने लगी। लेकिन अभ्यास न होने से बार-बार फिसल जाती। कभी पाँव नहीं जमते तो कभी हाथों की पकड़ ढीली पड़ जाती। वह कई बार गिर पड़ी।

संसार में सबसे बड़ी पाठशाला पेट है। भूखा पेट सब कुछ सिखा देता है। आखिर निर्मला वृक्ष पर चढ ही गई। उस समय उसे ऐसी खुशी हुई जैसे बहुत बड़ा काम कर लिया हो।

उसने पके फल वृक्ष से नीचे गिराये और धीरे-धीरे खिसकती हुई स्वयं भी वृक्ष से नीचे उतर आई। भाई-बहन दोनों ने फल खाकर अपनी दिनभर की क्षुधा शांत की। वन अभी सघन नहीं हुआ था। हिंसक पशुओं का कोई भय नहीं था। अतः दोनों उसी वृक्ष के नीचे सो गये।

अब उन दोनों का यही काम हो गया। दिन भर वन में चलते, वृक्षों के फल तोड़कर खाते, वन के सरोवरों-नदियों के जल से प्यास बुझा लेते और रात में किसी बड़े वृक्ष पर चढकर भाई-बहन दोनों सो जाते।

नौ वर्षीय सोमदत्त चलते-चलते थक जाता तो निर्मला कभी उसके पाँव दबा देती तो कभी चलने को उत्साहित करती हुई कहती- उस वृक्ष तक पहले कौन पहुँचेगा- मैं या तू ? और सोमदत्त दौड़कर उस वृक्ष तक पहुँच जाता। फिर ताली बजाकर हँसकर कहता-मैं जीत गया।

वन सघन होता जा रहा था। असुरक्षा तो यहाँ भी थी। लेकिन घर से वन में एक विशेषता थी, वह थी- स्वतन्त्रता। घर में दोनों भाई-बहन विमाता के डर से कभी खुलकर हँस नहीं पाते थे, जबकि यहाँ उन्मुक्त हँसी हँसते थे।

घर में तो खुशी का नाम भी नहीं था, हर समय विमाता का डर ही लगा

रहता था, दम मारने को भी अवकाश नहीं मिलता था; जबकि यहाँ अवकाश ही अवकाश था।

घर उनके लिए एक भयंकर यंत्रणा से भरा ऐसा कैदखाना था, जहाँ रातदिन मार पड़ती, घर का गोरख-धन्धा करना पड़ता और फिर भी भरपेट खाना नहीं मिलता। चारों तरफ भय, पीडा और आतंक की छाया थी। जंगल में आजादी थी- न कोई डराने वाला, न कोई पीटने वाला, न था विमाता का आतंक और न पिता का डर। इसलिए दोनों ही बहन-भाई जंगल में सुखी थे, प्रसन्न थे। आधा खाली पेट रहने पर भी दोनों खुश थे। जंगल के खूंखार जानवर भी उनको विमाता से कम डरावने लगते थे। इसलिए दोनों का मन वन में लग गया था। अपनी मरजी से सोते, अपनी मरजी से उठते, मन होता तो चलते और मन होता तो आराम करते। किसी का दबाव तो था ही नहीं, यहाँ तो उन दोनों की इच्छा ही सर्वोपरि थी।

छोटा भाई सोमदत्त बहन से तरह-तरह की जिज्ञासाएँ करता- इन खरगोशों के पाँव इतने मुलायम हैं, फिर भी इनको काँटे नहीं लगते, मुझे क्यों लग जाते हैं ? और ऐसे भोले प्रश्नों का निर्मला हँसकर समाधान करती।

हँसी-हँसी में निर्मला सोमदत्त को व्यावहारिक ज्ञान भी सिखाती जा रही थी। जानती थी-संसार में व्यावहारिक ज्ञान सफलता के लिए बहुत उपयोगी होता है। व्यवहारकुशल व्यक्ति ही सफल होता है। (क्रमशः)

गोमूत्र मूल्यवान है

पशुपालकों के लिए खुशखबरी है। गाय का दूध ही नहीं अब उसका मूत्र भी बिकेगा। आयुर्वेदिक दवाओं में गोमूत्र के उपयोग से उसकी कीमत दूध से महंगी होगी। उत्तराखंड डेरी फेडरेशन गोमूत्र का कारोबार करने जा रहा है। फेडरेशन दुग्ध संघों के जरिये पशुपालकों से दूध के साथ गोमूत्र की खरीद करेगा। गोमूत्र परिशोधित कर उसे दवा बनाने वाली कम्पनियों को बेचा जाएगा। फेडरेशन को पाँच हजार लीटर गोमूत्र की डिमांड मिल चुकी है। ऋषि मुनियों के समय से ही गोमूत्र कई बीमारियों के लिए रामबाण रहा है। गोमूत्र पर पंतनगर विश्वविद्यालय में हुए वैज्ञानिक शोध के साथ बाबा रामदेव आदि संतों ने इसकी उपयोगिता को उजागर किया है।

-'गोग्रास' मासिक पत्रिका, वर्धा से साभार

संगठन

आर. प्रसन्नचंद चोरड़िया

अब तक हम बहुत बंट चुके
अब और भी बंट रहे हैं।
टूटती माला की मणियों की तरह
पड़ जमीं पर छंट रहे हैं।

इस तरह हम कब तक
अपना अस्तित्व खोते रहेंगे ?
मजबूत थे कभी हम
कब तक कमजोर होते रहेंगे ?

जो चाहे, जब भी चाहे, जहाँ चाहे
बीज फूट के बो रहा है।
कोमल दिलों में, अपनों के लिए
नफरत घोल रहा है।

क्या होगा फायदा इस तरह हम
आपस में टूट जायेंगे।
जमाने की आँधी में
तिनकों की तरह बिखर जायेंगे।

हमारा वजूद हमारे संगठन
हमारे प्रेम में है।
मजा तो जिन्दगानी का
कबड्डी के खेल में है।

कभी हम तुम्हारे पाले में
कभी तुम हमारे पाले में आते रहो।
इसी तरह गीत खुशी के
मिलकर गाते रहो।

-५२, कालाथी पिल्लई स्ट्रीट, चेन्नई-७९

नारी-स्तम्भ

प्रेम से कीजिये अपने बालकों का लालन-पालन (२)

डॉ. भीकमचन्द प्रजापति

३.प्रारम्भिक शिक्षा-काल में आपका व्यवहार : अपने बालक की शिक्षा के सम्बन्ध में आप निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें -

(१) स्कूल भेजना : पांच वर्ष की आयु तक माता-पिता ही बालक के गुरु होते हैं। इसलिए आपको ही उन्हें सामान्य बातचीत के दौरान कुछ बातें सिखानी चाहिये ताकि अच्छी आदतों का निर्माण हो, अच्छे संस्कार अंकित हों। अच्छे संस्कारों से बालक अतिशीघ्र विभिन्न विषयों से सम्बन्धित तथ्यात्मक ज्ञान को समझ व पकड़ लेगा। यदि पाँच वर्ष से पहले ही आप उसे स्कूल भेजेंगे तो वह आपके प्यार से वंचित रहेगा, उसके अपरिपक्व मस्तिष्क पर अनुचित बोझा पड़ेगा, उससे मानसिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न हो जायेंगी। वर्तमान सामाजिक-व्यवस्था के अन्तर्गत यदि आपको छोटी आयु में ही अपने बालक को स्कूल भेजना पड़े तो आप निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें - बालक अधिक समय तक स्कूल में न रहे, उसके मस्तिष्क पर अनुचित बोझ न पड़े, उसे दूसरे शहर में नहीं भेजें, उसे आपका समुचित स्नेह एवं समय मिले, उसे स्कूल जाने में प्रसन्नता हो।

स्मरण रहे, आप जिस प्यार से उसे पढ़ायेंगे, वैसा प्यार उसे किसी भी स्कूल में नहीं मिलेगा।

(२)आपका बालक पढ़ने में कमजोर हो तो क्या करें?: यदि आपको ऐसा महसूस हो कि हमारा बालक पढ़ने में कमजोर है तो उसे होशियार बनाने के लिए उसके साथ इस प्रकार व्यवहार करें -

(क) मन को संभालें, कमजोर न समझें : आप अपने मन में यह नहीं सोचें कि हमारा बालक पढ़ने में कमजोर है। आप मन में यह भावना रखें कि सभी मनुष्यों को एक जैसा शरीर मिला है। शरीर की बाह्य व भीतरी रचना एकदम समान है। हमारे बालक में किसी भी प्रकार की कमी नहीं है। वर्तमान कमजोरी एक अत्यन्त अस्थायी तत्त्व है, यह दो चार दिन की चीज है। आप मन में यह भाव रखें - सृष्टि का यह मेहमान

बहुत होशियार है, पढ़ने में बहुत तेज है। आप पायेंगे कि बहुत जल्दी ही आपका बालक पढ़ने में पहले से होशियार हो गया है। आपके चिंतन का बालक पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। स्मरण रहे, कछुवे के बच्चे और कुछ विशेष पक्षियों के अंडे उनके मन की भावना से पल व पक जाते हैं।

(ख) गुणों की स्थापना करें : आप बालक में जिन गुणों को विकसित करना चाहते हैं, उन गुणों को बालक में स्थापित करें, अर्थात् अपने मन में बार-बार यह सोचें कि हमारे बालक में वे गुण मूल रूप में विद्यमान हैं और विकसित होंगे।

(ग) कमजोर न कहें : आप व आपके परिवारजन अपने मुंह से बालक को ये शब्द कभी नहीं कहें - तुम पढ़ने में बहुत ही कमजोर हो, तुम पढ़ते ही नहीं हो, तुम पढ़ने से कतराते हो, तुम खराब हो, आदि। अपने बालक की उपस्थिति में दूसरों को भी आप ऐसा न कहें - क्या बतायें, यह बालक पढ़ता नहीं है, यह पढ़ने में कमजोर है आदि। यदि आप व आपके परिवारजन उसे बार-बार कमजोर, खराब आदि कहेंगे तो उसके सरल हृदय व अपरिपक्व मस्तिष्क में यह बात बैठ जायेगी कि मैं कमजोर हूँ, जो बालक के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होगी। इस हीन भावना से उसका जीवन बर्बाद हो जायेगा।

(घ) निवेदन - आप अपने मित्रों, पड़ोसियों, अध्यापकों आदि से भी यह निवेदन कर दें कि वे आपके बालक को बार-बार कमजोर कह कर उसमें हीनता की भावना पैदा नहीं करें।

(च) क्रोध न करें : अनेक बार समझाने पर भी यदि आपका बालक किसी बात को नहीं समझ पाये और बार-बार भूल करे तो आप उस पर लेशमात्र भी क्रोध न करें। यदि आप उस पर क्रोध करेंगे तो बालक पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा - वह भयभीत हो जायेगा, दब्बू व डरपोक बन जायेगा, उसकी मानसिक शक्तियां कुंठित हो जायेंगी, वे विकसित नहीं होंगी, उसमें हीनता की भावना पैदा हो जायेगी, वह क्रोधी स्वभाव का बन जायेगा। आपके हृदय में उत्पन्न क्रोध के परमाणु उसके हृदय में जमा होते रहेंगे, धीरे-धीरे वहाँ क्रोध का पहाड़ बन जायेगा। जब आप उस पर क्रोध करेंगे तो उसे बहुत बुरा लगेगा, लेकिन भय के कारण वह कुछ नहीं बोलेगा। कुछ समय बाद वह आपके सामने बोलने लगेगा, क्रोध करने लगेगा, आपकी बात नहीं सुनेगा और आपका दुश्मन बन जायेगा। यदि बालक को पढ़ाते समय आपको अपने मन में भी क्रोध आता है तो आप उसको पढ़ाने के अधिकारी नहीं हैं।

(छ) क्रोध का नाटक कर सकते हैं : दो बातें एकदम अलग अलग हैं – क्रोध आना और क्रोध करना। क्रोध आना बहुत बड़ा अवगुण है, अपने एवं दूसरों के साथ गंभीर अत्याचार है, पाप है, बुराई है। इसके विपरीत जहाँ जरूरत हो, वहाँ 'क्रोध करना' एक अभिनय है। जिसको क्रोध आता है, वह क्रोध के आवेश में पागल हो जाता है। लेकिन जो 'क्रोध करता है' वह भीतर से एकदम सावधान रहता है। क्रोध करने का अर्थ है – जानबूझ कर क्रोध का अभिनय या नाटक करना, क्रोध का दिखावा करना। जिस प्रकार रामलीला या नाटक में दो सहोदर भाई एक दूसरे के दुश्मन के रूप में घोर युद्ध करते हैं, तलवारें चलाते हैं, कटु बोलते हैं, पर वे अपने मन में इस बात को भलीभांति जानते हैं कि हम सहोदर भाई हैं और यहां एक दूसरे के दुश्मन का अभिनय कर रहे हैं। उनके हृदय में लेशमात्र भी क्रोध नहीं होता है। इसी प्रकार आवश्यकता होने पर आप भी अपने बालक पर क्रोध का अभिनय कर सकते हैं। जिस प्रकार एक डॉक्टर हितभाव से रोगग्रसित अंग को काट देता है, ऑपरेशन करके उसकी गंदगी को बाहर निकाल देता है, उसी प्रकार बालक के हित को ध्यान में रख कर आप जोर से बोलने, डांटने, फटकारने व क्रोध करने का अभिनय कर सकते हैं। आप उसे हल्की सजा भी दे सकते हैं। लेकिन ऐसा करते समय आपके हृदय में क्रोध का लेश भी न रहे, केवल हित की भावना रहे।

(ज) प्रशंसा : उत्साह : जब आप बालक को पढ़ाना आरंभ करें तो चार पाँच ऐसे सरल प्रश्न पूछें जिनका बालक तत्काल सही उत्तर दे सके। यदि वह एक प्रश्न का भी सही उत्तर दे तो आप उसकी प्रशंसा करें। उससे कहें, बेटा ! तुम बहुत होशियार एवं अच्छे हो, तुम्हारी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है, तुम बहुत मेहनती व पढ़ने वाले हो, तुम प्रसन्नता से स्कूल जाते हो। इससे बालक में आत्मविश्वास व उत्साह जाग्रत होगा, वह अत्यन्त प्रसन्न रहेगा। प्रसन्नता से अनन्त शक्तियों का निर्माण स्वतः होगा। आप पढ़ाने के क्रम को जारी रखें। यदि वह गलत उत्तर दे तो आप इतना ही कहें – कोई बात नहीं, एक दो भूलें तो सभी बालकों से हो जाती है। ऐसा करने से उसका उत्साह बना रहेगा। प्रशंसा, उत्साह व प्रसन्नता से बालक का तीव्र विकास होगा।

(झ) स्नेह, सम्मान व प्रेम दीजिये : अपने मान-अपमान का आभास बहुत छोटे बालकों को भी हो जाता है। बालक के कोमल व सरल हृदय पर मान-अपमान का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिये बालक को भरपूर स्नेह, सम्मान व प्रेम दें। उसकी

अवहेलना न करें।

(ट) समुचित प्रबन्ध : बालक की पढ़ाई, खेल व मनोरंजन का समुचित प्रबन्ध कीजिये। आप स्वयं उसे समय दीजिये।

(ठ) उचित व्यवहार : बालक को संसार का मेहमान मानकर उसकी सेवा करें। सेवा का अर्थ है – उसका हित सोचें, हित करें। बालक की सभी इच्छाओं को भी पूरी न करें। वह बालक है, उसे अपने हित अहित की जानकारी नहीं है। आप उसकी उन्हीं इच्छाओं को पूरी कीजिये जिसमें उसका हित निहित हो। जिन इच्छाओं की पूर्ति से उसका अहित हो, वे इच्छाएँ पूरी मत कीजिये। अनुचित इच्छाओं की पूर्ति न करने से उसे दुःख न हो, इसके लिये उसे प्रेम पूर्वक समझाइये। यदि वह प्रेम से नहीं समझे तो क्रोध व कठोर भाषा का नाटक कीजिये, उसके रोने की परवाह मत कीजिये। आपके हृदय के प्रेम से उसे शीघ्र ही यह अहसास हो जायेगा कि अनुचित इच्छाओं की पूर्ति में मेरा हित नहीं है। *(क्रमशः)*

रोको भ्रष्टाचार की आँधी

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

भ्रष्टाचारी, धोखेबाज़ी, फैली चारों ओर है।
मानवता के ऊपर आया, संकट यह घनघोर है।।
क्या करें विश्वास किसी का, चारों ओर लुटेरे हैं।
न्याय नीति के दरवाजे पर, हैवानों के पहरे हैं।।
नहीं रहा ईमान यहाँ पर, दौलत के दीवाने हैं।
पैसा ही बन गया राम अब, मतलब के परवाने हैं।।
राम, कृष्ण, महावीर की धरती, नहीं जगत में सानी है।
ऋषि, मुनियों का देश है यह, जिसकी अमर कहानी है।।
नैतिकता की कद्र करो तुम, भारत माँ के लाल हो।
तुम राष्ट्र के रखवाले हो, दुश्मन हित भूचाल हो।।
मत करो बदनाम देश को, गौरव गाथा याद करो।
नेकी की राहों पर चल कर, मानवता के काम करो।।
रोको भ्रष्टाचार की आँधी, अपना फर्ज़ निभाओ तुम।
सदाचार को अपना करके, नया सवेरा लाओ तुम।।

–स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

नये साल का इनाम

डॉ. दिलीप धींग

दिसम्बर २००७ के पहले सप्ताह में नगर परिषद् , उदयपुर का एक प्रतिनिधि मेरे पास आया। शहर में साफ-सफाई, स्वच्छता और जल संरक्षण पर कुछ नारे (स्लोगन) लिखने के लिए उसने मुझसे अनुरोध किया।

"नारे लिखने से मुझे क्या मिलेगा ?" मैंने पूछा।

उसने कहा - "नगर परिषद् की ओर से आपको धन्यवाद पत्र लिख दिया जाएगा और आपके द्वारा रचित नारे शहर में जगह-जगह लिखवाये जायेंगे, यह कोई कम बात है क्या ?"

मैंने कहा- "बात कम नहीं तो अधिक भी नहीं हैं।" इस पर उसने कहा कि नगर परिषद् से कोई काम हो तो बताना।

बातचीत आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा - "अहिंसा में मेरी गहरी आस्था है। नगर परिषद् यदि इस दिशा में मुझे सहयोग करे तो अनुगृहीत रहूँगा। पौष बदि दशमी, तीन जनवरी २००८ को जन-जन की आस्था के केन्द्र भगवान पार्श्वनाथ का जन्म-कल्याणक दिवस आ रहा है। ऐतिहासिक तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ करुणा के महासागर थे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि उस दिन नगर परिषद् की ओर से अगता (अहिंसा दिवस) घोषित हो। अगर ऐसा होता है तो मेरे लिए वह किसी भी धन्यवाद पत्र, सम्मान और पुरस्कार से कई गुना अधिक ही होगा।"

कई वर्षों से मेरा यह क्रम रहा है कि शासन की ओर से घोषित अहिंसा दिवसों का समुचित अनुपालन हो, इस उद्देश्य से मैं एक-दो दिन पूर्व समाचार पत्रों में विज्ञप्ति जारी कर समाचार लगवाता हूँ। मेरा यह उपक्रम भी उसे अच्छा लगा। मेरी बात सुनकर उस युवा प्रतिनिधि ने अहिंसा और शाकाहार में आस्था व्यक्त की और इस दिशा में सहयोग करने का भरोसा दिलाया।

सप्ताहभर में मैंने हिन्दी और राजस्थानी में करीब छह दर्जन नारे लिखकर नगर परिषद् को पहुँचा दिये। सम्बन्धित महिला अधिकारी उन नारों को पढ़कर प्रसन्न व सन्तुष्ट हुई। वह बोली - "नारे बहुत अच्छे हैं। हम लम्बे समय से ऐसे नारों के बारे में सोच रहे थे, आपने हमारे उद्देश्य के अनुरूप नारे रचकर अभिनन्दनीय कार्य किया है।"

इस बीच उस प्रतिनिधि को मैंने अहिंसा दिवस सम्बन्धी मेरी भावना से

अवगत कराया। किसी भी कार्य की प्रक्रिया होती है। अतः मैंने समाज के कुछ संगठनों के लैटर हैड पर परिषद् सभापति व आयुक्त महोदय को संबोधित करते हुए पार्श्वनाथ जयंती पर अहिंसा दिवस की मांग व आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए पत्र लिखा और लिखवाया तथा समाजजनों के साथ कार्यालय में सौंपा।

वर्ष २००८ की पहली तारीख को मुझे मेरा पुरस्कार मिल गया। परिषद् आयुक्त ने पार्श्वनाथ जयंती पर अगता रखने का आदेश जारी कर दिया। दो जनवरी को समाचार पत्रों में अगता की आधिकारिक घोषणा प्रकाशित हो गई। तीन जनवरी को अहिंसा दिवस के रूप में भगवान् पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक मनाया गया।

मेवाड़ रियासत की ओर से जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी की प्रेरणा से पाँच स्थायी अहिंसा दिवस घोषित थे, जिनमें एक पार्श्वनाथ जयंती (पौष बदि दशमी) का भी था। पार्श्वनाथ जयन्ती पर अगता रखने के लिए मेवाड़ रियासत की ओर से २१ नवम्बर १९२६ को जारी आदेश की फोटोप्रति भी मैंने परिषद् को लिखे पत्र के साथ संलग्न की थी। दिवाकरजी की प्रेरणा से अन्य रियासतों की ओर से भी पार्श्वनाथ जयन्ती पर स्थायी अगतें घोषित थे। जिनका रियासत काल में पूरी तरह से अनुपालन होता था। पार्श्वनाथ जयन्ती पर उदयपुर नगर परिषद् की ओर से संभवतः यह प्रथम अहिंसा दिवस रहा, जिसकी मुझे अपार प्रसन्नता हुई।

महापुरुषों की जयन्तियों को अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का अर्थ है- सहअस्तित्व और पर्यावरण-संरक्षण के कार्यों को आगे बढ़ाना। जिनकी संसार को आज अत्यधिक आवश्यकता है। महात्मा गांधी के निमित्त से संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अहिंसा की महत्ता स्वीकार की है और दो अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस घोषित किया है। जरूरत है अहिंसा के व्यापक अर्थ को ध्यान में रखते हुए इस दिवस को मनाया जाए। यदि वैसा होता है तो विश्व की अनेक समस्याएँ नौ दो ग्यारह हो जायेंगी।

५३-बी, डोरे नगर, उदयपुर-३१३००२

लेखकों के लिए सूचना

'जिनवाणी' जनवरी २००८ के अंक में इस वर्ष जिनवाणी में प्रकाशित विविध श्रेष्ठ लेखों/रचनाओं को पुरस्कृत किए जाने की सूचना प्रकाशित की गई थी। लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी मौलिक उपयोगी एवं उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री प्रेषित करें। आवश्यक होने पर विभिन्न स्तम्भों में पुरस्कार योग्य लेखों में द्वितीय, तृतीय पुरस्कार भी दिए जा सकते हैं। श्रेष्ठ पुरस्कार ५१००/-, ३१००/- एवं २१००/- के देय हैं। *-प्रेमचन्द जैन, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-३०२००३*

स्वास्थ्य-विज्ञान

स्वास्थ्य का अमूल्य साधन : स्वमूत्र

श्री जवाहरलाल बाघमार

शरीर को स्वस्थ रखने की दवा आपके खुद के पास है। आपको कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है और न ही कोई मूल्य देना है। उस अमूल्य साधन का नाम है 'स्वमूत्र'। अगर आपने इसका सेवन चालू कर दिया तो आपका स्वास्थ्य हमेशा रोममुक्त बना रहेगा।

मैं पिछले १४ साल से स्वमूत्र का नित्य सेवन कर रहा हूँ। मुझे एक पुस्तक 'आरोग्य का अमूल्य साधन : शिवाम्बु-स्वमूत्र प्रयोग लेखक रावजी भाई, मणि भाई पटेल अहमदाबाद पढ़ने को मिली और इस पुस्तक को पढ़ते ही उसी दिन से मैंने स्वमूत्र का सेवन नियमित रूप से नीचे लिखे अनुसार लेना चालू कर दिया और अब तक बराबर चल रहा है।

१. स्वमूत्र सहज प्राकृतिक और स्वाधीन साधन है २. स्वमूत्र, विषनाशक रसायन है ३. स्वमूत्र रोगनाशक और आरोग्य का रक्षक है ४. स्वमूत्र वात, पित्त और कफ का नाशक है ५. स्वमूत्र पोषक, पाचक और अद्वितीय रोचक है ६. स्वमूत्र आबालवृद्ध के लिए सर्वथा कल्याणकारी है ७. स्वमूत्र प्रत्येक प्राणी के शरीर का संतरी और वैद्य है ८. स्वमूत्र धर्म संगत निर्दोष तथा हानि रहित है ९. स्वमूत्र सादा और संयमी जीवन का सहायक है १०. स्वमूत्र अर्थ और गुण की दृष्टि से अमूल्य है ११. स्वमूत्र रोग का निदान स्वयं कर लेता है १२. स्वमूत्र प्राकृतिक नियम के चक्र को पूरा करता है।

स्वमूत्र प्राकृतिक देन है। शरीर के स्वास्थ्य की किसी प्रकार की कमी को पूरा करने के लिए यह एक अद्‌भुत एवं वैज्ञानिक दृष्टि में सम्पूर्ण द्रव्य है। इसका उपयोग करने के लिए धातु या कागज के सिक्कों की जरूरत नहीं, किन्तु मुख्य और प्रधान बात यह है कि इसमें विश्वास और निष्ठा का होना बहुत ही जरूरी है। आपको घृणा नहीं करना है। आप श्रद्धा और निष्ठा रखेंगे तब ही आप इसका सेवन कर सकेंगे और पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ होगा।

१. शुरू-शुरू में अपने स्वमूत्र से दांत साफ कीजिए और गरारे कीजिए जिससे घृणा दूर हो जायेगी। इसका लाभ यह होगा कि आपके दाँत हिलते होंगे तो उनका हिलना बन्द हो जाएगा और दाँत मजबूत हो जायेंगे। पायरिया, दाँतों से खून आना इत्यादि रोग समाप्त हो जायेंगे।

२. धीरे-धीरे जब आपकी आदत हो जाये तो सुबह का पहला मूत्र जब आप विसर्जित करें तो १.२ चम्मच प्रथम का और १-२ चम्मच अन्तिम धारा का छोड़ दें और बीच का स्वमूत्र आप कांच के छोटे गिलास में लेकर आँख बंद करके गट-गट पी जावें। सुबह का प्रथम मूत्र सबसे उत्तम माना जाता है उसे ही विशेष रूप से पीना चाहिए। आप थोड़ा लेना चालू करें फिर उसकी मात्रा बढ़ाते रहें।

३. स्वमूत्र पान करते समय सबसे खास बात ध्यान में रखनी है कि आप कोई भी दवाई या इन्जेक्शन या प्रयोग नहीं करें। इसमें डॉक्टर और वैद्य की दवाई लेना बिल्कुल वर्जित है। अगर आपको दवाई लेना आवश्यक है तो चार दिन पहले स्वमूत्र का सेवन बंद कर दें।

४. इसमें नशीले पदार्थ, तम्बाकू, पान-पराग, गुटखा तथा धूम्रपान इत्यादि बिल्कुल बंद करना आवश्यक है। इसके अलावा हवाबंद डिब्बे का आहार, मेदे के व्यंजन, अंडे, बिस्कुट, केक, तीखे आचार तथा ज्यादा नमकीन पदार्थ का सेवन करना मना है।

५. भोजन में पत्ती, भाजी के सलाद तथा फलों की मात्रा खूब रखें। आपका आहार-विहार तथा मनोव्यापार जितना शुद्ध एवं सात्त्विक होगा उतना ही आपको लाभ होगा और रोग शीघ्र ठीक हो जायेगा।

मूत्र से आप मालिश भी करें और आधा घंटा बाद नहायें तो बहुत ही अच्छा है, नहीं तो १५ मिनट बाद नहाएँ तब भी ठीक रहेगा। इसकी आप मालिश करते हैं तो उस समय आप किसी भी प्रकार के साबुन, शेम्पू इत्यादि का प्रयोग न करें। रोगी अपनी प्रकृति के अनुसार ठण्डे या गुनगुने पानी से स्नान करें। स्वमूत्र के मालिश करने से चर्म रोगों का नाश होता है।

मैं सुबह स्वमूत्र पीता हूँ और नहाते समय मालिश भी करता हूँ। स्नान से पूर्व रात को रखे हुए स्वमूत्र से आँखे धोता हूँ, गरारे एवं नेति करता हूँ तथा दाँतों पर रगड़-रगड़ कर घिसता हूँ और नाक में सुड़क कर ४-५ बार चढ़ा

लेता हूँ और निकाल देता हूँ। सर्दी, जुकाम और सिर दर्द से मुक्त रहने के लिए उपर्युक्त क्रियाएँ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि अनुसार करनी चाहिए।

स्वमूत्र मेरे लिए अंजन, मंजन, तेल, साबुन और दुःख भंजन सिद्ध हो रहा है। सबसे बड़ा लाभ मुझे स्वमूत्र सेवन करने से यह हुआ कि पिछले ४ वर्षों से मैंने किसी दवाई का सेवन नहीं किया। यह सब स्वमूत्र सेवन करने से ही लाभ प्राप्त हो रहा है।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि आपको अगर इसमें रुचि हो तो आप भी इसका सेवन नित्यप्रति करें और घृणा को मन से हटा दें और श्रद्धापूर्वक उपर्युक्त लिखे परहेजों को ध्यान में रखकर स्वमूत्र का सेवन करेंगे तो आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और यह अमूल्य साधन है जो हमको भगवान् ने हमारे अन्दर ही दिया है। अगर आपको इसका सेवन गुणकारी लगे तो दूसरों को भी लेने की सलाह दें।

-६, चन्द्रप्पा मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई

जिनवाणी पर अभिमत

सन् २००७ को विदाई देते हुए वर्ष २००८ का स्वागत करें। जिनवाणी परिवार को नये वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। आपकी पत्रिका मुम्बई में पढ़ने को मिली। आपकी सकारात्मक एवं रचनात्मक सोच हमेशा बनी रहे। पत्रिका में हर विषय को प्रधानता दी है, आपकी लेखनी स्वतंत्र और निष्पक्ष चलती रहे। जन-जन के हाथों तक पत्रिका पहुँचे। समाज को सच्चा और उचित मार्गदर्शन देती रहे, इसी मंगल कामना के साथ।

-सम्पतकुमार सेठी, हावड़ा (पं. बंगाल)

जिनवाणी के पिछले अंकों में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी का लम्बा प्रवचन/लेख 'पुण्य की पूँजी : मोक्ष की कुँजी' बहुत अच्छा लगा। पुण्य की उपादेयता को इतने सारे संदर्भों और प्रसंगों से उन्होंने सप्रमाण सिद्ध किया है। व्यापक अध्ययन और विराट् चिन्तन है उनका।

संजीवनी पीकर भी पापी है अधमरा,
पुण्यशाली मरुस्थल में भी रहता हरा-भरा।
कैसे नकार दें महत्त्व पुण्य-तत्त्व का?
पुण्य की छाँव में होते हैं संवर-निर्जरा।

-डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर (राज.)

जीवन-व्यवहार

रेस्ट में न करें, समय को वेस्ट

श्री नितेश नागोता

मानव जीवन में सबसे अधिक कद्र करने योग्य कुछ चीज है तो वह है समय। क्योंकि समय की अपनी गति, अपना वेग है। समय का सब इंतजार करते हैं, समय किसी का नहीं। इसीलिए ज्ञानीजन समय के महत्त्व को दर्शाते हुए यही फरमाते हैं कि- "जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है।" वस्तुतः समय के सदुपयोग से मानव का उपयोग बढ़ जाता है। जबकि समय की बर्बादी से मानव भी बर्बाद हो जाता है। इसीलिए सर्वज्ञ-सर्वदर्शी, भगवान् महावीर स्वामी ने भी हम संसारी प्राणियों के लिए यही शिक्षा फरमाई है कि- " हे भव्य प्राणियों समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।" अर्थात् समय अनमोल है, एक-एक पल बहुमूल्य है। अतः हम सभी को आवश्यकता है समय के मोल, महत्त्व को समझते हुए दिशाबद्ध पुरुषार्थ करने की, समय एवं जीवन की सार्थकता के लिए सम्यक् पुरुषार्थ करने की।

हम सभी समय के महत्त्व व समय की गति को जानते हैं। हम यह भी समझते हैं कि बीता हुआ समय लौट कर नहीं आता। समय पर किया हुआ काम ही हमारे जीवन को सार्थक बनाता है, किन्तु फिर भी हम समय के सदुपयोग व जीवन की सार्थकता के लिए समय का पूर्ण विवेक दृष्टि से उपयोग नहीं कर पाते हैं। क्योंकि हम सभी का अधिकांश समय "रेस्ट में हो जाता है वेस्ट।" सुखशीलता से घंटों तक स्नान, शृंगार करना, विविध व्यंजनों के निर्माण में व्यस्त रहना, ८ घंटे रात्रि में, १-२ घंटे दोपहर को सोना बस इसी रेस्ट की प्रवृत्ति में हमारा अनमोल समय हो जाता है वेस्ट, जो कि नहीं है श्रेष्ठ।

समय की सार्थकता व महत्त्व पर ज्ञानी गुरु भगवन्तों के मुखारविन्द से कई बार सुना-

सुबह गई और शाम हुई, फिर रात गई और दिन निकला।
सुबह-शाम के चक्कर में ही, जीवन का रथ जाय चला।।
आज करे सो करले रे भाई, कल की पक्की आस नहीं।
जीवन चल रहा तरल पनन सा, पर इसका विश्वास नहीं।।
मौत के दाव के आगे किसी की, चलती नहीं है कोई कला।
सुबह शाम के चक्कर में ही, जीवन का रथ जाय चला।।

अर्थात् ज्ञानी महापुरुषों के मार्मिक चिन्तन का मर्म समझते हुए समय को वेस्ट करने के बजाय समय को बेस्ट बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि अनादि अनंत काल से मनोज्ञ रस, मनोज्ञ स्पर्श, मनोज्ञ वस्तुओं के लिए हमने जीवन जीया है, अनेक भवों में शरीर के शृंगार, स्वस्थता, सुदृढ़ता के लिए पराक्रम किया। अब इस भव में हमें जब उत्तम कुल, उत्तम धर्म, पाँचों इन्द्रियों की पूर्णता, आत्मार्थी गुरु भगवन्तों का सान्निध्य व जिनवाणी रूपी अमृत प्राप्त हुआ है। तब आवश्यकता है जीवन के सच्चे आनन्द व आत्म-शांति की प्राप्ति के लिए धर्म-साधना में अनुरक्त रहने की। समय के पूरे-पूरे सदुपयोग की। समय की सार्थकता के लिए हम आराम व सुखशीलियेपन में कटौती करें, प्रमाद के समय को धार्मिक प्रवृत्तियों में लगायें, अपने ज्ञान का विकास करें तथा अपना अधिक से अधिक समय आत्मार्थी प्रवृत्तियों में लगाने का पुरुषार्थ करें क्योंकि-

बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा,
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।
रेस्ट में जो कर दिया अनमोल समय को वेस्ट।
तो प्राणी बाद में पछतायेगा।।
जो करेगा समय की कद्र,
और समय पर सम्यक् पराक्रम।
वो ही शाश्वत सुखों को पायेगा।
जो करेगा समय को रेस्ट में वेस्ट,
वह प्राणी सदा पछतायेगा।
समय को जो बनायेगा धार्मिकता से बेस्ट
वह प्राणी आत्म उन्नति को पायेगा।।

अन्ततः इस लेख के माध्यम से निवेदन यह है कि हम अपने अनमोल समय को गृह सज्जा व भौतिक पदार्थों की साफ-सफाई, रख-रखाव और आराम के लिए लगा रहे हैं। अगर उतना ही समय सामायिक संवर, आगमिक ज्ञान, चिंतन-मनन व संत-संगति में लगायें। तो हम आत्मलक्ष्य सिद्ध करने वाले आदर्श आत्मार्थी श्रमणोपासक बन सकते हैं, जो हम सभी को बनना है। आइये हम सभी मन में दृढ़ संकल्प करते हैं कि अबसे हम अपने जीवन में इस अनमोल समय को "रेस्ट में नहीं करेंगे वेस्ट, हम बढ़कर धर्म-साधना एवं आत्मार्थी प्रवृत्तियों, अपने समय को बनायेंगे बेस्ट।"

-१७५, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी

बाल-स्तम्भ

भावना की महिमा

डॉ. श्वेता जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० मार्च २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

बात बहुत पुरानी है। आलनपुर नामक एक नगर धन-धान्य से परिपूर्ण, हरा-भरा और रमणीय स्थल था। वहाँ के लोग स्वभाव से ऋजु, शान्त और सौम्य थे। पड़ौसी गाँवों व कस्बों के लोगों का व्यापार के लिए उस नगर में अधिक आवागमन होता था। धीरे-धीरे वह नगर व्यापारियों का केन्द्र बनता जा रहा था।

वीरम की एक छोटी सी दुकान उसी नगर की प्राक् दिशा में थी। वह अपने वृद्ध माता-पिता की आँखों का तारा था। उसका व्यवहार अत्यन्त मृदु और मिलनसार था। उसकी माता ने उसमें ईमानदारी, सेवा भावना के संस्कार कूट-कूट कर भरे थे। परिणामस्वरूप वीरम गरीब होकर भी अपना व्यापार बहुत ईमानदारी से करता था। एक बार श्रावण मास में अत्यधिक वर्षा होने से दुकान में पानी भर गया और उसमें रखा सामान नष्ट हो गया। यह बात जानकर उसके माता-पिता बहुत दुःखी हुए। वीरम मन ही मन सोचने लगा कि यह तो कंगाली में आटा गीला हो गया। अब तो उसके घर में खाने के लाले पड़ने लगे। आखिर एक दिन अपने पिता से सहमति प्राप्त कर अपने परिचित सेठ से २५ स्वर्णमुद्राएँ उधार लेने गया। चूंकि वह ईमानदार था, सभी उसकी ईमानदारी से प्रभावित थे, अतः सेठ ने उसे २५ स्वर्णमुद्राएँ दे दीं। उसके ईमान पर इतना भरोसा था कि सेठ ने उससे कुछ भी

लिखवाया नहीं।

स्वर्णमुद्राएँ पाकर वीरम बहुत प्रसन्न हुआ और सीधे अपने घर आ गया। वह शहर से बाहर जाकर अपना भाग्य आजमाना चाहता था। माता-पिता ने यह बात सुनकर उसे सलाह दी कि तुम इन स्वर्णमुद्राओं से एक रत्न जटित अंगूठी बनवा लो ताकि तुम्हें कम भार वहन करना पड़ेगा और अंगुली में पहन लेने से रखने में भी सुविधा रहेगी तथा खोने का भी भय न होगा। अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर वीरम ने रत्नजटित अंगूठी बनवाई और प्रातः कालीन वेला में अपने घर से प्रस्थान किया।

अपने तेज कदमों से वीरम खेत-खलिहानों को, तालाब-बावड़ियों को, बाग-बगीचों को पार करता हुआ आगे बढ़ रहा था। उत्साह भरे मन ने उसमें इतनी शक्ति भर दी थी कि कई कोस चलने पर भी थकान का नाम नहीं था। भोजन करने के लिए उसने एक बरगद के पेड़ के नीचे शरण ग्रहण की। भोजन करते-करते उसने सोचा- "सेठ ने लिखाया तो कुछ नहीं है, न ही किसी के सामने मुझे रुपये दिए हैं। अतः यदि मैं हजम कर जाऊँ तो सेठ के पास कोई सबूत नहीं है।"

समीप में एक तालाब देखा तो वहाँ हाथ-मुँह धोने हेतु उद्यत हुआ। तभी मन में विचार आया कि वहाँ अंगूठी हाथ में से निकल सकती है, अतः पेड़ के एक कोटर में उसे रख दूँ, आकर ले लूँगा। कोटर में अंगूठी रखकर वह तालाब पर गया। तालाब से लौटकर आया और अपनी अंगूठी पहनने के लिए कोटर की ओर देखा तो उसके होश उड़ गये। वहाँ पर अँगूठी नहीं थी। इधर-उधर देखा आस-पास कोई व्यक्ति नहीं था। इधर सूर्य अस्त होने वाला था, पेड़ के घोंसलों में बैठे हुए बच्चे अपनी माँ के मिलन से चहक रहे थे। उधर वीरम अंगूठी के न मिलने से व्याकुल हो रहा था।

रात भर यही सोचता रहा कि वह अंगूठी कहाँ चली गई। प्रातः उठकर पुनः अपने नगर की ओर चलने लगा। मार्ग में विचार करते-करते उसे अचानक यह महसूस हुआ कि मेरे मन में बेईमानी आ गई, इसीलिए अंगूठी खो गई। फिर वह सोचने लगा अब तो २५ स्वर्णमुद्राएँ और लानी होंगी। नहीं तो आजीविका कैसे चलेगी? अब ५० स्वर्णमुद्राएँ चुकानी होंगी। लेकिन अब उसका मन पूर्णतया दृढ़ता धारण कर चुका था, उसने सोचा कि चाहे जैसे भी हो मैं इस धन को चुकाऊँगा।

इस प्रकार निश्चय करके उसने सेठ के पास जाकर अपने मन की बेईमानी सच-सच बता दी। सेठजी बहुत अनुभवी व्यक्ति थे, वे जान गए कि अब यह मरकर भी धन चुकायेगा। अतः सेठजी ने पुनः २५ स्वर्णमुद्राएँ उधार दे दीं।

एक बार पुनः अपने भाग्य के भरोसे वीरम परदेश की ओर रवाना हो गया। चलते-चलते वह सोचने लगा- "अब बेईमानी का कोई विचार मन में नहीं लाना है और जैसे भी हो, सेठजी का सारा रुपया चुकाना है" इस प्रकार की विशुद्ध भावानाओं में बहता हुआ और अपने मन की पूर्व बेईमानी पर प्रायश्चित्त करता हुआ चला जा रहा था कि अचानक एक चमक से उसकी आँख चुँधिया गई, पैर ठिठक गये। उसने देखा कि एक सूखी हुई बींट में अंगूठी चिपकी हुई पड़ी है। जल्दी से उस अंगूठी को उठाकर उसने अपने पास रख लिया। ऊपर की ओर देखा तो वही बरगद का पेड़ जिसके कोटर से अंगूठी खो गई थी। तभी एक बाबा को उसने वहाँ देखा जो कोटर में दाना डाला रहे थे। उसे समझते देर न लगी कि किसी पक्षी ने दाना चुगते हुए अंगूठी को भी निगल लिया और उसकी बींट में निकल गई। इस समाधान के बाद उसके मन में विचार आया कि बाबा तो एक ज्ञानी व्यक्ति हैं क्यों न इनसे पूछा जाय कि आज तक मेरे मन में चोरी के अशुभ विचार नहीं आए तो उस समय क्यों आए ?

वह बाबा के समीप जाकर पूर्व वृत्तान्त के साथ अपने मन की शंका बताता है। बाबा इस पर विचार कर कहते हैं कि यह इस स्थान का प्रभाव है जिसके कारण तुम्हारे मन में बुरे विचार आये। इस बरगद के नीचे चोर इकट्ठे होकर चोरी करने की योजनाएँ बनाते थे और यहाँ आकर ही चोरी के माल को बाँटते थे।

कुछ दिन पहले ही राजा के सैनिकों ने उन चोरों को पकड़ लिया। अतः संभव है तुम्हारे भीतर विचारों का परिवर्तन आया हो। विचारों का प्रभाव मन एवं आचरण पर पड़ता है।

हे बालक! भावों की महिमा का तुमने साक्षात् अनुभव अपने जीवन में किया। चोरी के भाव आते ही पक्षी के निमित्त से अंगूठी तुमसे अलग हो गई और पुनः शुभ विचारों के दृढ होने पर खोई हुई अंगूठी पुनः मिल गई। पदार्थ का गायब होना और प्रकट होना मात्र ही भावों का प्रभाव नहीं है, अपितु उसके साथ जीव पापार्जन और पुण्यार्जन भी करता है। अतः मन में आने वाले बुरे विचारों को तटस्थ होकर देखो तथा उनसे प्रभावित होकर अपना आचरण मत बदलो। विचार अच्छे

और बुरे दोनों तरह के होते हैं। अच्छे विचारों का पुनः पुनः चिन्तन कर उसे अपने भाव बना लो किन्तु बुरे विचारों पर पुनः चिन्तन मत करो तो वह स्वतः ही दूर हो जायेंगे। इस प्रकार भावों की गहनता एवं गम्भीरता हमारे भीतर संस्कार उत्पन्न करती हैं।

प्रश्न

१. हिन्दी महीनों के नाम लिखिये।

२. चोरी का विचार आने के बाद भी क्या आप वीरम को ईमानदार कहेंगे ? कारण सहित उत्तर दीजिये।

३. मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिये।

(१) कंगाली में आटा गीला (२) आँखों का तारा

४. अर्थ लिखिये- शिरोधार्य, ऋजु, प्राक् दिशा, पुण्यार्जन, शरण-ग्रहण

५. क्या स्थान का भी विचारों परप्रभाव पड़ता है? आप धर्मस्थान, में जाने पर कैसा अनुभव करते हैं?

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-२००७] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-२००७ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'सबसे बड़ा धर्मात्मा' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ३५ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २५ में से दिये गये हैं

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	प्रीतम जैन-जोधपुर	२४
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	२३.५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	मनोज जैन-सवाईमाधोपुर	२३.२५
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	नेहा जैन-जोधपुर	२३
	दर्शना जैन-जोधपुर	२३
	यशवन्त गुलेच्छा-ब्यावर	२३
	कमलेश जैन-पादरू	२२.५
	वैभव मेहता-जोधपुर	२२.५

Story

JEALOUSY KILLS JUSTICE

Two men, both seriously ill, occupied the same hospital room. One man was allowed to sit up in his bed for an hour each afternoon to help drain the fluid from his lungs. His bed was next to the room's only window. The other man had to spend all his time flat on his back.

The men talked for hours on end. They spoke of their wives and families, their homes, their jobs, their involvement in the military service and where they had been on vacation. And every afternoon when the man in the bed by the window could sit up, he would pass the time by describing to his roommate all the things he could see outside the window. The man in the other bed began to live for those one-hour periods where his world would be broadened and enlivened by all the colourful activities of the outside world.

The window overlooked a park with a lovely lake, the man said. Ducks and swans played on the water while children sailed their model boats. Lovers walked arm in arm amid flowers of every colour of rainbow. Grand old trees graced the landscape and a fine view of the city skyline could be seen in the distance. As the man by the window described all this in clear detail, the man on the other side of the room would close his eyes and imagine the beautiful scene.

One warm afternoon the man by the window described a parade passing by. Although the other man could not hear the band, he could see it in his mind's eye as the gentleman by the window explained it with descriptive words. Unexpectedly an ugly thought entered his head.

Why should he have all the pleasure of seeing everything while I never get to see anything?

It did not seem fair. As the thought became intense the man felt ashamed at first. But as the days passed and he missed seeing more sights, he was envious of the other patient. He began to dislike him and found himself unable to sleep. He should be by that window- this thought now controlled his life.

Late one night as he lay staring at the ceiling, the man by the window began to cough. He was choking on the fluid in his lungs. The other man watched in the dimly lit room as the struggling man by the window searched for the button to call for help. Listening from across the room he never moved, never pushed his own button which would have brought the nurse running. Within five minutes the coughing and choking stopped along with the sound of breathing. Now there was only deathly silence.

The following morning the day nurse arrived to bring water for their baths. When she found the lifeless body of the man by the window, she was saddened and called the hospital attendants to take it away. As soon as it seemed appropriate, the other man asked if he could be moved next to the window. The nurse was happy to make the shifting and after making sure he was comfortable, she left him alone.

Slowly, painfully he pushed himself up on one elbow to take his first look. Finally he would have the joy of seeing it all himself. He strained to slowly turn to look out the window beside the bed. It faced a blank wall. He wept endlessly while realizing that the other man weaved lovely scenes of imagination to keep him happy.

Collected by- Madhurika jain, Jodhpur

निवेदन

जिनवाणी पत्रिका श्रेष्ठ पत्रिका बने तथा पाठकों के लिए निरन्तर उपयोगी बने, एतदर्थ आप अपनी प्रतिभा एवं लेखनी से इस पत्रिका को समृद्ध बनाएँ। *-सम्पादक*

एक श्रमण को समर्पित भाव

श्री दिलीप जैन

अनवरत लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं कदम।
विरत कर कामना तोड़ दिया अहम्।।

दृष्टि निर्मल है सदा, कर्मवीर आप हैं,
क्रोध शून्य प्रमोदजन्य, करत विशिष्ट जाप है।
उपकारी के उपकार की सम्यक् सरल नाप है,
रत्नसंघ के रत्नों में आपकी बड़ी छाप है।।१।।

देह दृष्टि से मुक्त, उच्चतम भाव है,
जिनवाणी श्रद्धा युक्त संयममय चाव है।
हलुकर्मी जीव पर पड़ता सतत प्रभाव है,
आप जैसे गुरुवर से तिरती मेरी नाव है।।२।।

प्राप्त कर सिद्धि को सिद्ध-बुद्ध बनोगे,
प्रभु वीर शासन में संयम पथ चलोगे।
ज्ञानपुँज अध्यात्म में और अधिक फलोगे,
दिनकर ढलेगा कदापि, आप ना ढलोगे।।३।।

जान लिया मैंने भी संसार खलु खार है,
सत्यकर देखूँ तो संयम जीवन सार है।
मुक्त हो जीव ये 'दिलीप' को इन्तजार है।
आप जैसे प्रज्ञ को वन्दन कोटि बार है।।४।।

-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर

संवाद (१०)

जनवरी २००८ की जिनवाणी में पूछे गए निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर प्राप्त हुए हैं, जो यहाँ प्रकाशित हैं-

८. प्रश्न-''हमारा बच्चा इतना ढीठ हो गया है कि वह अपने मन की ही करता है एवं हमारा कहना नहीं मानता है। हम क्या करें?''

-करुणा (काल्पनिक नाम)

श्री नौरतन मेहता, सह सम्पादक : जिनवाणी- बच्चा मन से कोमल होता है। वह माता-पिता, भाई-बहिन एवं परिवारजनों के बीच रहकर सीखता है। बच्चों में माता-पिता एवं घर-परिवार के सदस्य जैसे संस्कार भरते हैं तदनुसार बच्चा अमल करता है। बच्चों में नया करने की सहज भावना होती है। भावना की पूर्ति में बच्चा टी.वी. के दृश्य चाव से देखता है, खेल को खेल की भावना से खेलता है और अपनी रुचि के अनुसार खाना-पीना चाहता है।

कोमल मन-मस्तिष्क वाले बालक को संस्कार देने वाले चाहे वे माता-पिता हों, भाई-बहिन हों, दादा-दादी या घर-परिवार के अन्यान्य सदस्य हों वे यदि बच्चे पर बलात् कोई बात थोपते हैं तो बच्चा एक दो बार तो बात मान लेगा लेकिन हमेशा बात मान ले यह संभव नहीं। ढीठ बनने की शुरूआत तब होती है जब परिवारजन अपनी इच्छा से बच्चे को चलाते हैं और बच्चा अपनी भावना से चलना चाहता है।

बच्चे को मनोवैज्ञानिक रूप से नहीं समझने की गलती बड़े करते हैं। बड़ों की पुनः पुनः गलती देखकर बच्चा ढीठ बनता है और ढीठ बच्चा घर में न माँ-बाप की मानता है न अन्य सदस्यों की बात सुनता है। बच्चा तो बच्चा ही है, बड़े उसे ताड़ना-तर्जना देकर यह दर्शाते हैं कि बड़ों की बात मानें। जितनी बच्चे पर सख्ती होती है उतनी मात्रा में बच्चा भी जिद्द करता रहता है। बच्चे की जिद्द के आगे बड़ों को हार माननी पड़ती है और जीत-हार का खेल जैसे-जैसे आगे बढ़ता है बच्चा अपने मन की ही करना चाहता है, दूसरों की बात सुनना उसे पसन्द नहीं होता और वह किसी का कहना भी नहीं मानता।

बच्चा कहना माने इसके लिए बड़ों को बच्चे की मनोवैज्ञानिक स्थिति समझकर ऐसी पहल करनी होगी जिससे बच्चा यह समझे कि जो बात कही जा रही है वह मेरे हक में है, हित में है। बच्चे को प्रेम से कहें तो वह हर बात सहज मान लेगा अतः प्रेम के साथ बात करें, समझायें। बच्चे की आवश्यकता पूर्ति का खयाल रखा जाय तो बच्चा मन ही मन समझेगा कि उसकी बात बड़े सुन रहे हैं। बड़े बच्चों की बात सुनेंगे तो बच्चे भी बड़ों की बात सुनने लगेंगे। खाने, पीने, खेलने, दृश्य देखने और साज-शृंगार जैसी जरूरतों की पूर्ति में बड़े बच्चों को भी संयुक्त करके सोचें और करें तो बच्चों के ढीठपने में कमी आती जायेगी। बच्चों को बड़े यह एहसास भी करा दें कि वे उसके हितैषी हैं, बच्चों की भावना को गौण नहीं करते और बच्चों की आवश्यकता-पूर्ति में जागरूक हैं। ढीठपना मिटाना हो तो प्रेम स्नेह से बच्चों को पालें, उन्हें गुण-दोष के आधार पर सोचने की आदत डालने का प्रयास करें। बच्चे ढीठपना तभी छोड़ सकते हैं जबकि बड़े व्यक्ति बच्चों को अपनापन दें। बच्चों को रचनात्मक कार्यों में लगायें तो भी ढीठपन कुछ कम हो सकता है।

बच्चों को व्यवस्थित दिनचर्या के आधार पर ढ़ालना भी जरूरी है। बड़े अपनी जिम्मेदारी समझें, बच्चों को उसका एहसास होगा तो जिद्दीपना-ढीठपना कम होता जायेगा।

श्री लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद-

(१) हम अपने-आपको उस बच्चे के अनुकूल बनायें, वह अपने मन की करता है उसे करने दें तथा उसके किए गये कार्यों के परिणामों के प्रति ध्यान दिलाते रहें। बच्चों में संवाद के माध्यम से सुधार करें।

(२) बच्चे को अधिक जवाबदारी सौंपी जाय। अन्य रुचिशील पुस्तक पढ़ने में व्यस्त रखा जाय। पढ़ने से प्रतिभा विकसित होगी।

(३) ढीठ है तो क्या हुआ, बच्चे को ढीठ बड़ों के व्यवहार ने बनाया है। बच्चे के गुणों की प्रशंसा करें, उसे प्यार दें।

नोट- इस प्रश्न के उत्तर क्रमशः चलते रहेंगे। नया प्रश्न भी आमंत्रित है।

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म में आराधना का स्वरूप (एक तुलनात्मक अध्ययन)*-** *साध्वी प्रियदिव्यांजना श्री,* ***प्रकाशक*-प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड, शाजापुर (म.प्र.)-४६५००१,* ***अन्य प्राप्ति स्थान****-सरस्वती पुस्तक भण्डार, हाथीखाना, रतनपोल, अहमदाबाद (गुजरात)* ***पृष्ठ*** *५००* ***मूल्य*** *२५० रुपये, सन् २००७*

आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि रचित संवेग रंगशाला का अपर नाम 'आराधना रत्न' है। प्राकृत की १००५४ गाथाओं में निबद्ध इस ग्रन्थ में गृहस्थ एवं मुनि जीवन की सामान्य आराधना के साथ-साथ अन्तिम आराधना समाधिमरण की साधना-विधि का भी विशद विवेचन है। साध्वी प्रिय दिव्यांजना श्री जी ने वैराग्य रंग से युक्त इस ग्रन्थ पर डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में पी-एच्.डी. हेतु शोधकार्य सम्पन्न किया था। 'जैन धर्म में आराधना का स्वरूप' पुस्तक उसी का संशोधित रूप है। ग्रन्थ में छह अध्याय हैं- प्रथम अध्याय में कृति एवं कृतिकार का परिचय है। द्वितीय अध्याय में गृहस्थ धर्म एवं मुनिधर्म की आराधना का स्वरूप वर्णित है। तृतीय एवं चतुर्थ अध्यायों में समाधिमरण का निरूपण है। पंचम अध्याय में आराधना सम्बन्धी ८० कथाओं का विवरण एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। षष्ठ अध्याय में ग्रन्थ का उपसंहार है। खरतरगच्छाचार्य जिनचन्द्रसूरि के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पर आधृत यह पुस्तक आराधना के स्वरूप को समग्रता से प्रस्तुत करती है।

UROPATHY :- Dr. *Chanchalmal Chordia,* ***Publisher-*** Kalyanmal Chanchalmal Chordia Trust, Chordia Bhawan, O/s Jalori Gate, Jodhpur-342003, Ph. 0291-2621454, Mo. 94141-34606 ***Pages-*** *32,* ***Price-*** *Rs. 15/-,* ***Edition-****2007*

Uropathy is an important pathy which is easily available to everybody. It can cure many inner and outer diseases of the body. It is a killer of poision and it can rejuvinate even old person. Vyavaharsutra mentions its utility for a monk. Dr. Chordia says that Urine is an antiseptic, disinfectant and best purifier. It stimulates the defensive mechanism of the body and increases it's resistance power. It acts like a tonic or elixir. This small book gives a full detail about Uropathy in nutshell.

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

१ फरवरी २००८ की स्थिति

१. परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ५	पूना के विबेवाड़ी स्थानक में गुरु हस्ती के जन्म-दिवस पर त्याग-तप की प्रभावना रही एवं पूना के विभिन्न क्षेत्रों में धर्म-साधना का अच्छा उत्साह रहा। चिंचवड़ से लोनावला की ओर विहार चल रहा है।
२. परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४	पीपाड़ शहर से ग्रामानुग्राम विहार कर १६.१.०८ को घोड़ों का चौक, जोधपुर पधारे। आचार्य भगवन्त के ९८वें जन्म दिवस एवं उपाध्यायप्रवर के ७४वें जन्म दिवस पर त्याग-तप का ठाट रहा। कुछ समय घोड़ों का चौक विराजें ऐसी संभावना है, तदनन्तर उपनगरों में विहार संभावित है।
३. सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा ३	बड़कीनाल से लोनावला की ओर विहार चल रहा है।
४. साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा १०	घोड़ों का चौक, जोधपुर को लाभान्वित कर रहे हैं।
५. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४	मदनगंज-किशनगढ़ क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे हैं। आस-पास में विहार की संभावना है।

६. तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ — सकारण पीपाड़ विराजित हैं।

७. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ — बालाघाट से भोपाल की ओर विहार की संभावना है।

८. विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ — अरसीकेरा विराजमान हैं। आसपास के क्षेत्रों में विचरण संभावित है।

९. विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ — स्वास्थ्य की अनुकूलता से कानपुर से से आगरा की ओर विहार संभावित है।

१०. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर म.सा. आदि ठाणा ८ — दूदू से अजमेर होते हुए मारवाड़ की ओर विहार संभावित है।

११. व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ — मालपुरा से अजमेर की ओर विहार चल रहा है।

१२. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ६ — गुलेजगढ़ से इड़कल क्षेत्र सिंचित कर रहे हैं।

१३. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ — अगास से सूरत की ओर बढ़ रहे हैं।

१४. व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ — पीपाड़ से विहार कर उपाध्यायप्रवर प्रभृति संतवृन्द, साध्वीप्रमुखा प्रभृति सतीवृन्द के जोधपुर में दर्शन-वन्दन का लाभ लेकर आगोलाई विराजमान हैं। आगोलाई से कोरना मंडली पाटोदी पचपदरा क्षेत्र स्पर्श करने की संभावना है।

१५. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ — चन्द्रायपाटन क्षेत्र को लाभान्वित कर रहे हैं। आसपास के क्षेत्र फरसने के भाव हैं।

१६. सेवाभावी श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ — सेनोली (कराड़) से सतारा की ओर विहार चल रहा है।

आचार्यप्रवर का सातारा एवं पूना में धर्मजागरण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ का कर्नाटक से महाराष्ट्र प्रदेश में पदार्पण हुआ तो महाराष्ट्र के गाँव-गाँव में ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्यप्रवर प्रभृति संत-मुनिराजों का सान्निध्य प्राप्त करने की भावना उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही है। आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संतों के साथ २८ दिसम्बर को सतारा पधारे और सतारा में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में नववर्ष पर अनेकानेक ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की और नए वर्ष में नया व्रत-नियम अंगीकार कर अपने जीवन को समुन्नत करने का प्रयास किया।

भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के पुनीत प्रसंग पर भाई-बहिनों में जप-तप एवं ध्यान-मौन के साथ संवर-साधना का उत्साह रहा। एक अठाई की तपस्या भी हुई वहीं उपवास-एकासन-आयंबिल जैसी कई तपश्चर्याएँ हुईं। सातारा में आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से ५१ बारहव्रती श्रावक बनना विशेष उपलब्धि रही। स्थानक में आकर सामायिक करने की प्रेरणा के कारण कई श्रद्धालुओं ने नियम अंगीकार किए। तप-साधिका श्रीमती सुनीता जी लूणिया धर्मपत्नी श्री दिलीप जी लूणिया ने ग्यारह दिवसीय तपश्चर्या के प्रत्याख्यान अंगीकार किए, वहीं एक अन्य बहिन ने पचोला किया। सातारा श्रीसंघ ने संघ-सेवा, संत-सेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा का भावनापूर्वक लाभ लिया। आचार्यप्रवर ने मूथा कॉलोनी एवं कपूर कॉलोनी को भी लाभान्वित किया। सातारा से विहार कर आचार्य प्रवर १८ जनवरी को पूना पधारे। विबेवाड़ी जैन स्थानक में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वाँ जन्म-दिवस त्याग-तप के साथ २१ जनवरी पौष शुक्ला १४ को मनाया गया जिसमें पूना के विभिन्न उपनगरों के भक्तों के अलावा समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने श्रद्धा समर्पित की। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने दीक्षा, अक्षय तृतीया एवं आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनति आचार्यप्रवर के श्री चरणों में रखी। मुम्बई के शिष्ट मण्डल ने मुम्बई चातुर्मास की आवश्यकता बताते हुए मुम्बई को लाभान्वित करने का निवेदन किया। पूना श्री संघ ने फाल्गुनी चौमासी, दीक्षा, अक्षयतृतीया एवं चातुर्मास की विनति प्रस्तुत की।

चिंचवड़ श्री संघ ने फाल्गुनी चौमासी एवं शेखेकाल की विनति रखी। श्री मदनलाल जी बाघमार ने जबलपुर चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। अहमदाबाद-सूरत जैसे बड़े-शहरों की फाल्गुनी चौमासी, अक्षय तृतीया एवं चातुर्मास की विनति चल रही है वहीं अनेक श्रीसंघ निकट भविष्य में दीक्षा की संभावना के परिप्रेक्ष्य में अपने-अपने क्षेत्र की भावपूर्ण विनति रख रहे हैं। आचार्यप्रवर विभिन्न श्रीसंघों की भावना सुन रहे हैं और विनति करने वालों से केवल इतना कह रहे हैं कि समय के साथ जो भी निर्णय होगा, आपको जानकारी हो सकेगी। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत के खंद एवं व्रती श्रावक बनाने का अभियान चल रहा है। त्याग-तप के कार्यक्रम में भी भारी उत्साह है।

आचार्यप्रवर के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने माधवनगर, सांगली, जयसिंगपुर, इचलकरंजी आदि क्षेत्रों में धर्मप्रभावना की। मुनि-मण्डल पूना शहर को सिंचित कर रहे हैं।

सूर्यनगरी में धर्म-प्रभावना

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १० के पावन सान्निध्य में अध्यात्मयोगी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वाँ जन्म-दिवस त्याग-तप के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द ने 'आचार्य भगवन्त के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं संघ-समाज को देन' विषय पर विस्तार से प्रवचन फरमाया। संघ पदाधिकारियों एवं प्रमुख श्रावक-श्राविकाओं ने आराध्य गुरुवर्य के गुण-स्मरण, गुण-कीर्तन कर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की। सामूहिक दया के आयोजन के अलावा उपवास-पौषध, ध्यान-मौन, जप-तप, लिखित प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति में सूर्यनगरी के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं के साथ समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने भी अपनी सहभागिता प्रदर्शित की। आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस पर घोड़ों का चौक में संवत्सरी तुल्य माहौल देख सभी प्रसन्नचित्त थे। सर्दी की तीव्रता में भी साधना-आराधना करने वालों में अच्छा उत्साह रहा। परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म-दिवस पर गुण-

स्मरण, गुण-कीर्तन में संत-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के दीर्घायु एवं स्वास्थ्य समाधि की मंगल कामना की। दया-संवर, उपवास-पौषध के कार्यक्रम में जोधपुरवासियों का अच्छा उत्साह रहा।

उपाध्यायप्रवर संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में पौष शुक्ला १० दिनांक १८.१.०८ को पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. के पुण्य दिवस पर त्याग-तप का उत्साह रहा वहीं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। पौष शुक्ला १५ दि. २२.१.०८ को छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. का पुण्य-दिवस पर भी त्याग-तप के आयोजन हुए। प्रवचन सभा में कड़कड़ाती सर्दी के बावजूद नित्यप्रति उपस्थिति बढ़ती जा रही है।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास के लिए पाली, विजयनगर, गढ़सिवाना की पुरजोर विनति चल रही है। वहीं क्षेत्र फरसने के लिए अनेकानेक ग्राम-नगरों के श्रीसंघ अपनी-अपनी प्रार्थना उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में निरन्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। जोधपुर के विभिन्न उपनगरों में भक्तजन उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में अपने-अपने क्षेत्र को सिंचित करने का बराबर निवेदन कर रहे हैं।

देशभर में आचार्य श्री हस्ती का जन्म-दिवस सामायिक-स्वाध्याय एवं त्याग-तप के साथ सम्पन्न

जन-जन को सामायिक-स्वाध्याय से जोड़ने वाले विशिष्ट संयम-साधक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वाँ जन्म-दिवस पौष शुक्ला १४ दिनाङ्क २१ जनवरी २००८ को गाँव-गाँव और नगर-नगर में स्वप्रेरित भावना से उत्साहपूर्वक मनाया गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में पूना में एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में जोधपुर में त्याग-तप की प्रभावना विशेष रही। रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के सान्निध्य में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी त्याग-तप, साधना-आराधना एवं जन-कल्याण के विविध कार्यक्रम पूरे उत्साह से सम्पन्न हुए। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बैंगलोर, हैदराबाद, जयपुर जैसे बड़े क्षेत्रों में गुणानुवाद सभा के आयोजन हुए वहीं हिण्डौन,करौली, सवाईमाधोपुर, नदबई, कानपुर, पाली, अजमेर, ब्यावर, मदनगंज-किशनगढ़, दूदू, पीपाड़ सिटी, भोपालगढ़ जैसे कई ग्राम-नगरों ने व्रत-प्रत्याख्यान के माध्यम से गुरु हस्ती के प्रति श्रद्धा समर्पित की गई।

चेन्नई- अध्यात्मयोगी परमपूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९८वां जन्म-दिवस एवं मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का २४वाँ स्मृति दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनांक २१ जनवरी २००८ को तीन-तीन सामूहिक सामायिक-साधना के रूप में स्वाध्याय भवन, साहूकार पेठ में उत्साहपूर्वक मनाया गया। एक घंटे तक सामूहिक जाप के अनन्तर उत्तराध्ययन सूत्र का अर्थ सहित वाचन स्वाध्यायी श्री विनोदकुमार जी ने किया। आचार्य भगवन्त के विशिष्ट गुणों पर अनेक वक्ताओं ने प्रकाश डाला। संघ के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुगड़ ने आचार्य भगवन्त के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री चम्पालाल जी बोथरा ने दोनों महापुरुषों की विशेषताओं का उल्लेख करते कहा कि वे जन-जन की आस्था के केन्द्र रहे और प्रत्येक भक्त दर्शन-वन्दन कर धन्य-धन्य हो जाता। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल ने व्रत-प्रत्याख्यान करवाये और मांगलिक प्रदान की। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, चेन्नई*

हैदराबाद- जैन समाज के तत्त्वावधान में काचीगुड़ा स्थानक में पौष शुक्ला चतुर्दशी पर गुणानुवाद सभा, स्वाध्याय संगोष्ठी, स्वास्थ्य जाँच शिविर एवं गौशाला निरीक्षण जैसे कार्यक्रम रखे गये। गुणानुवाद सभा में रत्नसंघ के संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया वहीं प्रमुख वक्ता के रूप में जिनवाणी के सम्पादक एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डॉ. धर्मचन्द जी जैन का सान्निध्य प्राप्त हुआ। गुणानुवाद सभा की अध्यक्षता श्री वर्द्धमान स्थानक जैन श्रावक संघ, हैदराबाद के अध्यक्ष श्री महावीरचन्द जी अलिजार ने की।

प्रातः ७ से ८ बजे स्वाध्याय संगोष्ठी में डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर ने स्वाध्याय से आत्मिक शान्ति विषयक विशद विवेचन प्रस्तुत कर स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। प्रातः ९.३० बजे से आयोजित गुणानुवाद सभा में विभिन्न सम्प्रदायों के सुज्ञजनों ने सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं संघ-समाज को देन विषय पर विचार रखे। मुख्य अतिथि श्री मोफतराज जी मुणोत ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के लिए कहा कि उस दिव्य-दिवाकर में सच्चा संतपना था। खाने, पीने, उठने, बैठने, बोलने और जीवन की हर क्रिया में वे सजग रहने वाले महापुरुष थे। आचार्य श्री हस्ती की कथनी-करनी में एकरूपता थी। मरुधर केसरी श्री

मिश्रीमल जी म.सा. की प्रेरणा से जैनत्व का गौरव अभिवृद्ध हुआ। प्रमुख वक्ता डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के बहुआयामी व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि सामायिक जहाँ आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रस्तुत करती है वहीं स्वाध्याय से सम्यक् सोच विकसित होती है। स्थानीय प्रबुद्धजनों ने आचार्य श्री हस्ती के जन्म-दिवस एवं मरुधर केसरी के पुण्य-दिवस पर श्रद्धा समर्पित की। जैन समाज हैदराबाद की गुणानुवाद सभा में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

श्राविका मण्डल के संयोजन में संघ के सुज्ञ श्रावकों ने मध्याह्न गौशाला का भ्रमण किया और पशु कल्याण की भावना से उदारता पूर्वक सहयोग किया। तप-साधकों को नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ भेंट कर उनका बहुमान किया गया।

पोरवाल क्षेत्र में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा १२ से १७ जनवरी २००८ तक पोरवाल क्षेत्र में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ की सचिव श्रीमती मोहनकौर जी जैन, उदयपुर शाखा के परामर्शदाता श्री फूलचन्द जी मेहता, पोरवाल शाखा के संयोजक श्री लल्लूलाल जी जैन, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा, स्वाध्याय संघ कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता एवं प्रचारक श्री रामपाल जी गोयल की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। पोरवाल शाखा के पूर्व संयोजक श्री पदमचन्द जी जैन-बजरिया, शाखा सह संयोजक श्री हरकचन्द जी जैन-बजरिया एवं अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार-कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुई। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, ५र्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक शिक्षण शाला प्रारम्भ करने, २५ बोल की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रेरणा के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान ६ नये स्वाध्यायी बनाए गए। दूनी में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के केन्द्र को सक्रिय किया गया। आलनपुर, श्योपुरकलां, चौथ का बरवाडा, अलीगढ़ में आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की पाठशाला का निरीक्षण किया गया। प्रचार कार्यक्रम के दौरान पचाला में श्रद्धेय श्री धर्मेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा २ तथा महावीर नगर, सवाईमाधोपुर में डॉ.

मधुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों का लाभ भी प्राप्त किया।

-चंचलमल चोरडिया, संयोजक

चेन्नई में श्राविका परिचय सम्मेलन एवं युवती मण्डल की स्थापना

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, चेन्नई की श्राविकाओं ने १२ जनवरी २००८ को अयनावरम दादावाड़ी में परिचय सम्मेलन आयोजित किया। मंगलाचरण के अनन्तर श्रीमती लीला जी भण्डारी अध्यक्ष, श्राविका मण्डल, चेन्नई ने स्वागत वचन कहे। मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) प्रिया जी जैन, विशेष अतिथि श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी एवं सम्मेलन की सफलता में विशेष सहयोगी श्रीमती वसन्ता जी सुराना का श्राविका मण्डल की ओर से माल्यार्पण कर स्वागत किया गया एवं शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) प्रिया जी ने बच्चों को संस्कारित करने पर बल देते हुए कहा कि हम बहिनें इस काम को कर सकने में सक्षम हैं। उन्होंने प्रमाद से दूर रहने की प्रेरणा तो की ही, सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से जीवन समुन्नत करने का आह्वान भी किया। परिचय में एक-दूसरे के निकट आने के साथ भावनात्मक लगाव की आवश्यकता बतलाई।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणा साहब ने सांसारिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में नारी की भूमिका पर प्रकाश डालते कहा कि आप घर को ही नहीं, समाज को भी स्वर्ग बनाने में सक्षम हैं। परिचय सम्मेलन पर साधुवाद ज्ञापित करते हुए सुराना साहब ने बहिनों को स्वाध्याय करने, स्वाध्यायी बनकर पर्युषण सेवा देने का आह्वान किया।

मध्याह्न सत्र में मुख्य अतिथि श्रीमती विजया जी कोचेटा का परिचय श्रीमती प्रमिला दुग्गड़ ने करवाया एवं परिचय पश्चात् श्राविका मण्डल ने उनका सम्मान किया। श्राविका मण्डल की मंत्री श्रीमती कनकमाला जी कुम्भट ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए मण्डल की गतिविधियाँ बताई। श्रीमती पारस बाईसा को 'विशिष्ट श्राविका रत्न' से सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि श्रीमती विजया जी कोचेटा ने नारी शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि नारी में न+ अरि समाहित है इसलिए नारी का कोई शत्रु नहीं हो सकता। नारी सद्गुणों को बढ़ाये यह पहली आवश्यकता है। परिचय सम्मेलन में युवती मंण्डल के गठन के साथ २१ युवतियों ने युवती मण्डल को सक्रिय करने की शपथ ली।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुग्गड़

ने श्राविका मण्डल की सदस्यों के उत्साह पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस तरह के आयोजन करके संस्कार सृजित करने का अनुरोध किया। श्रीमती कविता जी चोरडिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मधु जी सुराणा ने किया।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा २७ जुलाई ०८ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००८, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जाएगी। आवेदन करने की अन्तिम तिथि १० जुलाई २००८ है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- *सुशीला बोहरा, संयोजक, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. ०२९१-२६३०४९०, मो. ९४१४१३३८७९*

जयपुर में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर राजस्थान एवं अन्य प्रदेशों की बोर्ड परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्रों को संस्थान में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर प्रदान कर रहा है। इस संस्थान का उद्देश्य संस्कारशील जैन विद्वान तैयार करने के साथ उनका सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु छात्रों को प्राकृत, संस्कृत, न्याय एवं दर्शन विषय का अध्यापन कराया जाता है। साथ ही विद्यार्थियों को अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर का भी शिक्षण दिलाया जाता है। इसके लिए संस्थान में कम्प्यूटर उपलब्ध है। अधिष्ठाता के रूप में श्रीमती प्रेमदेवी जी ने कार्य सम्हाला है।

यहाँ अध्ययनरत छात्र धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ व्यावहारिक अध्ययन में भी वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करते हैं। छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु पूर्ण सहयोग दिया जाता है। संस्थान में अध्ययन करने वाले छात्रों को भोजन-आवास-शिक्षण आदि की व्यवस्था निःशुल्क है। संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य हेतु संघ व संस्थान पूर्णतः प्रयासरत रहेगा। अतः संस्थान में प्रवेश हेतु इच्छुक विद्यार्थी अपना सम्पूर्ण विवरण अपनी फोटो, समस्त प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपि, दूरभाष नं., सम्पर्क सूत्र इत्यादि के साथ ३० अप्रेल २००७ तक संस्थान में भिजवाएँ। *सम्पर्क सूत्र- शांता जी मोदी, संयोजिका- श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर (राज.) दूरभाष- ०१४१-२७१०९४६*

'चतुर्विध संघ-सेवा से कर्म-निर्जरा' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

श्री जैन रत्न युवक परिषद् (आन्ध्रप्रदेश) के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित 'चतुर्विध संघ-सेवा से कर्म-निर्जरा' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के ९८वें जन्म-दिवस के अवसर पर २० जनवरी २००८ को घोषित किए गए हैं। पुरस्कार संयोजन श्री किशोरचन्द जी एवं श्री सुभाषचन्द जी की स्मृति में छाजेड़-परिवार की ओर से किया गया। विजेता इस प्रकार रहे हैं-प्रथम पुरस्कार (३००० रुपये)- श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़-समदड़ी (राज.), द्वितीय पुरस्कार (२००० रुपये)- श्रीमती बीना जैन-अलीगढ़ (उ.प्र.), तृतीय पुरस्कार (१००० रुपए)- श्री कस्तुरचन्द जी जैन-अलवर (राज.), १० प्रोत्साहन पुरस्कार (प्रत्येक ५०० रुपए)- १. कु. अंकिता जैन-ब्यावर, २. श्रीमती सुदेश जैन-हैदराबाद, ३. श्री समीर जैन-जोधपुर, ४. श्री पारसमल चंडालिया-ब्यावर, ५. कु. स्मिता दिलीप छाजेड़-पिपलगांव बसवन्त, ६. श्रीमती संगीता के. जैन-बड़ौदा, ७. श्री अनिल कुमार जैन-कोटा, ८. श्री रेणुमल जी जैन-जोधपुर, ९. कु. बबिता जैन-सवाईमाधोपुर, १०. श्रीमती सुषमा जी सिंघवी-जोधपुर।

-श्रीपाल देशलहरा, निदेशक, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, आन्ध्रप्रदेश

जलगाँव में वर्द्धमान आयम्बिल तप की आराधना

अंतगडदसासूत्र में वर्णित महासती महासेन कृष्णा द्वारा आचरित वर्द्धमान आयम्बिल तप का इस युग में आराधन करने का पुरुषार्थ स्थानकवासी तपस्विनी महासती श्री सुशीलाकंवर जी महाराज ने किया है। तपस्वी श्री कानमुनि जी, उपप्रवर्तक श्री गुलाबमुनि जी आदि ठाणा एवं महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जलगाँव (महा.) की पुण्यभूमि में १ जनवरी २००८ को महासतीवर्या के ५०५० आयम्बिल के साथ १०० उपवास की आराधना वाला आयम्बिल तप पूर्ण होने पर १११ आयम्बिल के ऊपर उपवास का पारणक सम्पन्न हुआ। इस तप की अनुमोदना में जलगाँव में १ से ३१ दिसम्बर २००७ तक भव्य धर्माराधना हुई। केन्या, अफ्रीका, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के लगभग १०० ग्राम-नगरों के लगभग ५०० सदस्यों ने न्यूनाधिक दयाव्रत में भाग लिया। नित्य उपवास, एकासन, आयम्बिल एवं दयाव्रत की श्रावक-श्राविकाओं ने अपूर्व धर्माराधना की। २५ श्रावकों ने मस्तक का लुंचन भी कराया तथा ७० सदस्यों ने

नन्दीसूत्र कंठस्थ किया। इस अवसर पर सौ. मीना मोदी ने १२० उपवास के चलते १३१ के प्रत्याख्यान लिये। बेला, तेला एवं मासखमण की तपस्याएँ भी हुई। ९८१ पौषध हुए। सम्पूर्ण मासिक आराधना कार्यक्रम को सफल बनाने में सकल जैन संघ, जलगाँव, श्री रतनलाल जी बाफना परिवार, सुशील बहूमण्डल, स्वाध्याय महिला मण्डल, जैन रत्न युवक परिषद् आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इस प्रसंग पर 'धायमाता' की उपाधि से अलंकृत सौ. नयनतारा जी बाफना के कर-कमलों से 'सुशील समाधान भाग-४' का विमोचन हुआ। श्री सुरेशदादा जैन, श्री भंवरलाल जी चोरडिया एवं संघपति दलुभाई चोरडिया ने श्री रतनलाल जी बाफना को सम्मानित करने का निश्चय किया, किन्तु श्री बाफना सा. ने 'मुझे श्री संघ ने यह अवसर दिया, इसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ' कहकर अस्वीकार कर दिया।-*दलीचन्द चोरडिया, अध्यक्ष*

अब अभिनव शैली में 'कर्म संहिता' ग्रन्थ पर प्रतियोगिता

'मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन' ने 'कर्म संहिता' ग्रन्थ पर द्वितीय ज्ञान प्रतियोगिता का समायोजन अब अभिनव शैली में किया है। इस शैली की विशेषता यह है कि इसमें किसी भी प्रश्न का उत्तर शब्दात्मक न होकर केवल अंक एवं चिह्न में लिखना होगा। उत्तर गलत या अस्पष्ट लिखने पर नेगेटिव मार्किंग होगी। श्रुतनिधि बम्पर पुरस्कार की व्यवस्था स्नो बॉल स्कीम के अनुसार गुप्त होगी। प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन पुरस्कार मिलेगा। प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि २७ अप्रेल २००८ है। शीघ्र प्रतियोगी की अन्तिम तिथि १५ फरवरी २००८ है। प्रश्नपुस्तिका का मूल्य ५० रुपए और ग्रन्थ का मूल्य १५०रुपए है, डाक खर्च अतिरिक्त होगा। प्रश्न पुस्तिका मंगवाने का पता-(१) मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, मृदु प्रदीप जैन, बी-११७, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-प्रथम, नई दिल्ली-११००२०, मो. ९३१३०९३४४४, (२) अविनाश चोरडिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, जैन कान्फ्रेन्स, नई दिल्ली, मो. ९९१३८१३८९९।

करुणा अन्तरराष्ट्रीय का १२वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

चेन्नई- करुणा अन्तरराष्ट्रीय का १२वाँ अखिल भारतीय सम्मेलन २९ एवं ३० दिसम्बर २००७ को केलम्बाक्कम् में सम्पन्न हुआ। समारोह में अमेरिका से आए चित्रभानु जी ने करुणा क्लबों को १२५००० रुपए के 'उत्कृष्ट करुणा क्लब पुरस्कार' तथा 'श्रेणी पुरस्कार' प्रदान किए। मानव सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले छात्रों को 'दयावान पुरस्कार' श्री डी.आर. मेहता ने तथा 'श्रेष्ठ केन्द्र पुरस्कार' श्रीमती

मेनका गांधी ने प्रदान किए। श्रेष्ठ करुणा केन्द्रों में बीकानेर केन्द्र प्रथम विजेता रहा। द्वितीय पुरस्कार जोधपुर केन्द्र ने तथा तृतीय पुरस्कार शाहजहाँपुर केन्द्र ने जीता। श्रीमती मेनका गाँधी ने कहा कि करुणा इण्टरनेशनल पिछले दो वर्षों से स्कूलों में चमड़े के जूते नहीं पहनने के लिए कार्यक्रम चला रहा है। केनवास के जूते पहन कर ही गायों को बचा सकते हैं। समारोह में देशभर से ९०० प्रतिनिधियों तथा चेन्नई के गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। डॉ. अप्पा जी राव ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि करुणा क्लब बच्चों में नैतिक उन्नयन तथा मानवीय सद्‌गुणों के बीजारोपण का सत्कार्य कर रहा है एवं संस्कृति की सौरभ चतुर्दिक् फैला रहा है। करुणा इण्टरनेशनल के महासचिव श्री सुरेश कांकरिया ने कहा कि पूरे देश में अब तक १४०० करुणा क्लब स्थापित हो चुके हैं। *-पदम टाटिया, सम्मेलन चेयरमेन*

'पच्चीस बोल' प्रतियोगिता की तिथि ३० मार्च तक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 'पच्चीस बोल वर्ष' मनाने के उपलक्ष्य में पच्चीस बोल प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा किया जा रहा है। प्रश्न पुस्तिका का मूल्य २५/- एवं डाक द्वारा मंगवाने पर ३५/- है। उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि ३० मार्च २००८ (आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म दिवस) रखी गई है। प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर १५०००/-, सुपर टॉप टेन- १०००/- प्रत्येक एवं ४० प्रोत्साहन सम्मान २५०/- प्रत्येक प्रदान किये जायेंगे। प्रश्नपुस्तिका मंगवाने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क करें- *अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन*-०२९१-२६३६७६३ / अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें- (१) डॉ. मंजुला बम्ब-अध्यक्ष, ९३१४२९९२२२९, (२) आशा गांग-महासचिव, ०२९१-२५४४१२४, (३) सुनीता मेहता-संयोजक, ९८२८१४१७५७

बधाई/चुनाव

'करुणा रत्न' पुरस्कार से श्रीमती मेनका गांधी, श्री डी.आर. मेहता, श्री दुलीचन्द जैन एवं डॉ. साधना राव सम्मानित

चेन्नई- ३० दिसम्बर २००७ को तमिलनाडु के राजभवन में आयोजित करुणा इण्टरनेशनल के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री सुरजीत सिंह बरनाला ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं पीपुल फॉर एनीमल्स, नई दिल्ली की संस्थापक श्रीमती मेनका गाँधी, भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर के संस्थापक चेयरमेन एवं पूर्व

आई.ए.एस. श्री डी.आर. मेहता, करुणा अन्तरराष्ट्रीय चेन्नई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जैन एवं इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एनीमल वेलफेयर, चेन्नई की सचिव डॉ. साधना राव को उनके करुणापरक महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए **'करुणा रत्न'** पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कारों का संयोजन सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोर्नीज चेरिटेबल, चेन्नई द्वारा किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख रुपए की नकद राशि, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

संघ-संरक्षक डी. आर. मेहता को 'पद्म भूषण' सम्मान

रत्नसंघ के संरक्षक, सेबी के पूर्व चेयरमेन, श्री देवेन्द्रराज जी मेहता समाज सेवा में वर्षों से सक्रिय हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में आपने रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर जैसे पद को भी ईमानदारी एवं निष्पक्ष अधिकारी के रूप में सुशोभित किया है। विकलांगों का जीवन भी स्वावलम्बी व सुखी बने, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की इस प्रेरणा को सेवा के क्षेत्र में धारण करके सन् १९७४ से आप भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति का तन्मयता से संचालन कर रहे हैं। विभिन्न संस्थाओं द्वारा मेहता सा. को उनके मानवता-पोषक कार्यों हेतु सम्मानित किया जा चुका है। हाल ही में राजस्थान ऐसोशिएशन ऑफ अमेरिका द्वारा भी केलिफॉर्निया में आपश्री का सम्मान किया गया। दिसम्बर में चेन्नई में 'करुणा रत्न' पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं। आपके सेवा कार्यों से प्रभावित भारत सरकार ने इस वर्ष गणतन्त्र दिवस पर आपश्री को **''पद्म भूषण''** सम्मान से सम्मानित किया है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति रखने वाले श्रीमान् मेहता सा. के परिवार का रत्नसंघीय चतुर्विध संघ परम्परा के साथ पीढ़ियों से श्रद्धा, समर्पण एवं भक्ति रूपी त्रिपुटि सम्बन्ध रहा है। अतः इस सम्मान से रत्नसंघ सहित सम्पूर्ण जैन समाज गौरवान्वित हुआ है।

जोधपुर- रत्नसंघ के निष्ठावान श्रावकरत्न श्री चंचलमल जी गांग सुपुत्र स्व. श्री

केवलमल जी गांग विगत पाँच वर्षों से निःस्वार्थ भाव से स्वाध्याय संघ, जोधपुर को निरन्तर उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। पौष शुक्ला चतुर्दशी, २१ जनवरी २००८ को घोड़ों का चौक स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में प्रवचन सभा के अनन्तर गांग साहब की उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए माल्यार्पण से स्वागत, शॉल

ओढ़ाकर बहुमान एवं रजत-पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन से सम्मानित किया गया। श्री गांग साहब प्राविधिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, जोधपुर में कार्यालय सहायक पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी सूझबूझ, श्रम करने की क्षमता एवं कार्यशैली प्रशंसनीय है।

मालेर कोटला (पंजाब)- अमेरिका की जैन वर्ल्ड फाउण्डेशन द्वारा पंजाबी भाषा के जैन लेखक एवं अनुवादक श्री पुरुषोत्तम जैन, मंडी गोविन्दगढ़ एवं श्री रविन्द्र जैन, मालेरकोटला को उनकी सेवाओं के लिए 'ज्वैल ऑफ जैन वर्ल्ड' से सम्मानित किया गया है।

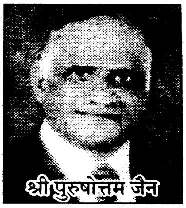

जोधपुर- गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में तृतीय वर्ष में अध्ययनरत सुश्री राजुल बोहरा सुपुत्री श्री अनिल जी बोहरा (पूर्व अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्) एवं सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने जम्मू कश्मीर में आयोजित राष्ट्रीय इण्टरनेशनल एनवायरमेन्ट मूट कोर्ट प्रतियोगिता-२००७ में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा अमेरिका में होने वाली अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयनित की गई। इस अवसर पर उसे बेस्ट मेमोरियल पुरस्कार एवं ऑल राउण्ड एक्सीलैन्स के लिए स्पिरिट ऑफ सुराणा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। तदनन्तर फ्लोरिडा में अन्तरराष्ट्रीय मूट कोर्ट प्रतियोगिता में जिरह करने का सुअवसर मिला जहाँ क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

जयपुर- श्री विपिन जैन पुत्र श्री हुकमचन्द जैन ने मेट (MAT) दिसम्बर २००७ में ९९.८१ प्रतिशतांक एवं केट (CAT) जनवरी २००८ में ९३.४ प्रतिशतांक अर्जित किए है, एतदर्थ बधाई।

लन्दन- जोधपुर मूल की निवासी सुश्री प्रेक्षा भण्डारी आत्मजा श्रीमती वन्दना एवं श्री सुभाष जी भण्डारी ने स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स लन्दन से अध्ययन कर क्रेडिट स्विस बैंक, लन्दन में ३० लाख के पैकेज पर नियुक्ति प्राप्त की है। सुश्री प्रेक्षा ने सदा अच्छे अंक अर्जित कर वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया। धार्मिक संस्कारों से संस्कारित प्रेक्षा की अभी सी.ए. की तैयारी चल रही है। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर

की संयोजिका श्रीमती शान्ता जी मोदी की आप दौहित्री हैं।

मुम्बई- आशीष मेहता सुपुत्र श्री गौतम एस. मेहता, मन्त्री, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई ने प्रथम प्रयास में अच्छे अंकों से सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। परिवारजनों से प्राप्त संस्कारों से आप धार्मिक ज्ञान में भी रुचि रखते हैं।

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई (तमिलनाडु) की वर्ष २००७-२००९ के लिये नई कार्यकारिणी (कार्यसमिति) का गठन सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ। अध्यक्ष-कैलाशमल जी दुगड़, उपाध्यक्ष- इन्द्रचन्द जी सुराणा, उगमचन्द जी कांकरिया, मंगलचन्द जी भंसाली, पदमचन्द जी बाघमार, चम्पालाल जी बोथरा, मंत्री (सचिव)- जवाहरलाल जी कर्णावट, सहमंत्री (सह सचिव)-अनोपचन्द जी बाघमार, अशोक जी भण्डारी, कोषाध्यक्ष- गौतमचन्द जी बाघमार।

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- जोधपुर के रत्नसंघीय परिवारों की निर्देशिका तैयार की जा रही है। अधिकांश सदस्यों ने अपना विवरण भेज दिया है, फिर भी कुछ ऐसे परिवार भी हैं जिनका फार्म प्राप्त नहीं हुआ है। अतः वे अपना फार्म श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, जोधपुर कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें। *-शेखर सुराणा, सचिव*

भवानीमण्डी- प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता जैन के नेतृत्व एवं अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, जोधपुर के तत्त्वावधान में राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के लगभग ८५ विद्यालयों में शाकाहार एवं सत्संस्कार निर्माण गोष्ठियों का आयोजन कर जीवन-व्यवहार में दया, करुणा, अनुकम्पाभाव के साथ सदाचार, शाकाहार एवं निर्व्यसनता को अपनाने की प्रेरणा की गई।

नई दिल्ली- अ.भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, नई दिल्ली के प्रधान कार्यालय 'जैन भवन' १२, शहीद भगतसिंह मार्ग, निकट गोल मार्केट, नई दिल्ली में स्वधर्मी भाइयों के ठहरने के लिए अतिथिगृह (धर्मशाला) की सुन्दर व्यवस्था की गई है। जैन भवन में कैन्टीन की सुविधा भी उपलब्ध है। समस्त भारतवर्ष के जैन भाइयों से निवेदन है कि नई दिल्ली पधारने पर जैन भवन में ठहरकर सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सदानन्द तिवारी-९८९१५७२७३५, ०११-२३३६३७२९, २३३६५४२०

जोधपुर- गतवर्ष की भाँति जोधपुर के राजदादीजी अस्पताल में २७ से २९ जनवरी

तक प्लास्टिक सर्जरी शिविर डॉ. शरद कुमार जी दीक्षित की देखरेख में सम्पन्न हुआ। शिविर के आयोजकों में रत्नसंघीय श्रावकरत्न श्री सुभाष जी भण्डारी का योगदान रहा।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्वमंत्री एवं श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्री

चैतन्यमल जी ढड्ढा का २३ जनवरी २००८ को स्वर्गवास हो गया। आप अधीक्षण अभियन्ता के पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् संघसेवा में समर्पित हो गए थे। आप स्वभाव से सरल, मृदुभाषी एवं सेवाभावी थे। कर्त्तव्यपरायणता, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता, शालीनता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत रहा। सरकारी सेवा में उच्च पद पर पहुँचकर भी आप अन्त तक निरभिमानी बने रहे। आप अपने पीछे सुसंस्कारित, धर्मनिष्ठ एवं सेवाभावी परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- संत-सेवा में समर्पित, उदारमना, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमल जी जैन

छाजेड़ का ७ जनवरी २००८ को हृदयगति रुक जाने से अकस्मात् असामयिक देहावसान हो गया। वे संत-सतीवृन्द के निरतिचार औषधोपचार एवं सेवा सुश्रूषा में अग्रणी श्रावक थे। सनसिटी अस्पताल श्रमणोचित औषधोपचार के लिए जैन जगत् में उल्लेखनीय स्थान रखने वाले अस्पतालों में से एक है। छाजेड़ साहब की भाँति उनके सुपुत्र डॉ. आर.के. जैन साहब भी भक्ति-भावना से संत-सेवा को प्राथमिकता देते हैं। सरलता, मृदुता, सहजता और उदारता जैसे विशिष्ट गुणों के कारण छाजेड़ साहब का समाज में अच्छा वर्चस्व था।

पल्लीपट्ट- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अशोक कुमार जी खाबिया सुपुत्र स्व. श्री

सोहनलाल जी खाबिया (छोटी पादू वाले) का ३९ वर्ष की वय में १२ दिसम्बर ०७ को असामयिक देहावसान हो गया। सरलता-सादगी-सहिष्णुता-उदारता-मधुरता जैसे गुणों के कारण वे घर-परिवार में एवं संघ-समाज में सबके प्रियपात्र थे। गुरु सेवा में उनकी भक्ति-भावना प्रेरणादायी थी। आपने आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

आदि ठाणा ३ के चित्तूर से पल्लीपट्ट एवं पल्लीपट्ट से पुत्तूर तक विहार में भावनापूर्वक सेवाएं प्रदान की। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से श्रावकरत्न ने जीवन के अन्तिम दिन तक तीन सामायिक करने का आदर्श बनाए रखा।

जयपुर- धर्मानुरागी एवं श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बदनकंवर जी मेहता धर्मपत्नी

स्व. श्री मेहताबचन्द जी मेहता का १७ जनवरी २००८ को ९५ वर्ष की आयु में स्वर्गगमन हो गया। उनके जीवन में सादगी, उदारता व धर्मभावना का संगम था। वे अपने पीछे दो पुत्रों सुमेरचन्द और सुरेशचन्द मेहता एवं एक पुत्री कमला सिंघवी का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती उमरावकंवर डागा धर्मपत्नी श्री किशोरमल जी डागा का ९६ वर्ष की वय में ७ जनवरी २००८ को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। मरणोपरान्त आपकी इच्छानुसार आपके स्वस्थ नेत्रों का अन्य के उपयोगार्थ दान किया गया।

नसीराबाद- सुश्राविका श्रीमती सज्जनदेवी धर्मपत्नी संघनिष्ठ सुश्रावक स्व. श्री मोहनलाल जी मुणोत का स्वर्गवास १६ दिसम्बर २००७ को हो गया। आपके जीवन पर आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री का विशेष प्रभाव रहा। सन्त-सतियों की सेवा में आप अग्रणी रही।

भद्रावती- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सुवादेवी जी लुंकड़ धर्मपत्नी सुश्रावक श्री जसराज जी लुंकड़ (बालोतरा वाले) का ८८ वर्ष की आयु में २८ दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। पिछले चालीस वर्षों से चौविहार करने वाली श्राविका प्रतिदिन कम से कम आठ सामायिक करती थीं एवं उपवास-बेले-तेले-पांच-आठ की तपश्चर्याओं के अलावा उन्होंने वर्षीतप भी किया। रत्नसंघीय महासती श्री संगीताश्री जी म.सा. की संसारपक्षीय नानीसा अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

शिमोगा- आस्थावान सुश्रावक श्री महेन्द्र कुमार जी मेहता का ३८ वर्ष की अल्प

आयु में १७ दिसम्बर २००७ को हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से १ वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया था, आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ पत्नी कविता, दो पुत्रियों के साथ दादा-पिता आदि सहित भरापूरा परिवार छोड़ कर गए हैं।

मन्दसौर- धर्मपरायणा वात्सल्यमूर्ति श्रीमती लाडकंवरबाई मेहता पत्नी स्व.

चांदमल जी मेहता (करजू वाले) का ९१ वर्ष की आयु में ३ दिसम्बर २००७ को भोपाल में समाधिमरण हो गया। अपने जीवन में उन्होंने वर्षीतप, गुणरत्न तप, एकासन, उपवास आदि अनेक तप किये। आपने धर्मस्थानक बनवाने में, साधु-सन्तों को पढ़ने-पढ़ाने में तथा दूसरों के दुःख दूर करने में यथायोग्य सहयोग किया।

गोविन्दगढ़ (इचलकरंजी)- सुश्राविका श्रीकंवरबाई मिलापचन्द जी खाबिया का ७ दिसम्बर २००७ को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आपके जीवन में सरलता, मृदुता थी। आप साधु-संतों की सेवा में सन्नद्ध रहती थीं।

जयपुर- धर्मशील श्राविकारत्न श्रीमती प्रेमबाई गोलेछा धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाबचन्द जी गोलेछा का १३ जनवरी २००८ को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। सामाजिक क्षेत्र में आप सदैव अग्रणी रहीं तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय में लगी रहती थीं।

सातारा- रत्नसंघ के अनन्य आस्थावान श्रावक रत्न सातारा श्री संघ के अध्यक्ष,

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, संघ-सेवी, संत-सेवी, समाज हित-चिन्तक श्री हिम्मतमल जी मुथा सुपुत्र स्व. दीवान बहादुर मोतीलाल जी बालमुकुन्द जी मुथा का २३ जनवरी २००८ को संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आपने गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के मुख से ११ व्रत धारण किए एवं वर्ष २००८ के शुभारम्भ पर मांगलिक श्रवण का लाभ लिया। आप उदारमना श्रावक थे। सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक संस्थाओं से सम्बद्ध होते हुए भी वे धर्म-साधना के प्रति समर्पित रहे। उनकी धर्मसहायिका श्रीमती हेमलता जी मुथा भी सुज्ञ श्राविका हैं जिन्होंने संथारे की प्रेरणा की। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

किशनगढ़- कर्मयोगी, समाजसेवक श्री गणेशमल जी जामड़ का १२ जनवरी २००८

को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक समिति, किशनगढ़ के संरक्षक थे तथा पूज्य श्री सागरमल जी म.सा. की स्मृति में प्रारम्भ सागर जैन विद्यालय को पुष्पित पल्लवित करने में सक्रिय रहे।

वणी(महाराष्ट्र)- श्रावकरत्न श्री सुरेशचन्द जी जोरावरमलजी मुणोत का २० दिसम्बर २००७ को ५८ वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। गुरु हस्ती एवं गुरु हीरा के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति थी।

पाली- रत्नसंघ के प्रति समर्पित धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी सांड सुपुत्र श्रीमान् स्व. श्री जोरावरमल जी सांड का २३ जनवरी २००८ को स्वर्गवास हो गया।

आगरा- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती चान्दबाई धर्मपत्नी स्व. श्री फतेहचन्द जी चपलावत का १०८ वर्ष की आयु में १८ दिसम्बर २००७ को स्वर्गवास हो गया। कविरत्न उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म.सा. के प्रति श्रद्धाशील श्राविका अपने पीछे सात पीढ़ियाँ छोड़कर गई हैं।

जयपुर- संघ हितैषी सुश्रावक श्री रतनचन्द जी लोढ़ा का २६ जनवरी २००८ को

अकस्मात् देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित श्री लोढ़ा सा का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। संत-सतीवृन्द की सेवा में दर्शनार्थ जाने में वे सदा तत्पर रहे। आप अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती विमला जी लोढ़ा व पुत्र-प्रपौत्रों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। महान् तपस्वी सरल स्वभावी श्री सागरमल जी म.सा. के सांसारिक परिवार में आप पौत्र थे।

खरगौन- दृढ़धर्मी श्रीमती छगनबाई जी जैन का ८७ वर्ष की आयु में ५ जनवरी २००८ को समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। वे धर्मनिष्ठ सुश्राविका थीं। डॉ. प्रेमचन्द जी जैन सहित वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। *-लक्ष्मीचन्द जैन*

बैंगलोर- धर्मानुरागी श्राविकारत्न श्रीमती शांतिदेवी जी बागरेचा (जिन्नाणी) का २८ जनवरी २००८ को देहावसान हो गया। आप धार्मिक कार्यों में भी रुचि रखती थीं।

बालोतरा- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री दौलतराज जी बागमार का ३ फरवरी २००८ को स्वर्गगमन हो गया। आपने उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के बालोतरा चातुर्मास में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, त्याग-तप का लाभ लिया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

११२०९ Shri Nand Lal B. Bafna, Dombivali (W) Mumbai (M.H.)

१११११० Shri Sanjay Kumar Ji Jain, Kandivali (E) Mumbai (M.H.)

११११११ श्री मोहनलाल जी पोकरणा, सोजतरोड, पाली (राज.)

१११११२ श्री पदमचन्द जी बुरड़, पाली-मारवाड़ (राज.)

१११११३ श्री हेमराज जी जैन, हिण्डौन सिटी, करौली (राज.)

१११११४ श्रीमती संगीता जी मोदी, जयपुर (राज.)

१११११५ श्रीमती भारती जी जैन, जयपुर (राज.)

१११११६ Smt. Namrata Ji Bedmutha, Sangli (M.H.)

१११११७ श्री कल्पेश जी हिरण, सतारा (महा.)

१११४१ श्री रूपचन्द जी सकलेचा, औरंगाबाद (महा.)

१११४२ Shri Ravindra Ji Jain, Malerkotla, Sangaroor (Punjab)

श्री मोहनलाल जी, कैलाशचन्द जी, श्रीपाल जी, शान्तिलाल जी, महावीर जी, कमल जी, विनोद जी देशलहरा, हैदराबाद के सौजन्य से आजीवन सदस्य

१११११८ श्री जैन सेवा संघ, ईडन बाग, रामकोट, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११११९ श्री जैन श्रावक संघ, कोरा (छावनी), सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२० श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२१ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बोलारम, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२२ श्री तेरापंथी जैन महासभा, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२३ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, डबीरपुरा, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२४ श्री पूनमचन्द जैन स्थानक भवन, काचीगुडा, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२५ श्री गुजरात सेविंग्स जैन उपाश्रय, ईडन बाग, रामकोट, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२६ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, खैरताबाद, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२७ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अमीरपेट, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२८ श्री अचलगच्छ जैन संघ (गुजराती समाज), चैतन्यपुरी, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११२९ श्री राजस्थानी श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३० श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर संघ, फीलखाना, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३१ श्री जिनकुशल सूरि जैन श्वेताम्बर दादावाड़ी मन्दिर, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३२ श्री दिगम्बर जैन महासभा, केसरबाग, आगापुरा, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

११९३३ श्री श्वेताम्बर जैन तीर्थ कुलपाक जी, कोलनपाक, आलेर (आन्ध्रप्रदेश)

१११३४ श्री नवग्रह जैन मन्दिर, चेवेल्ला, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३५ श्री सम्पादक जी (स्वतन्त्रवार्ता), हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३६ श्री रवि जी श्रीवास्तव (सम्पादक) हिन्दी मिलाप डेली, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३७ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल, महाराजगंज, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

१११३८ Central Library, Afzalgunj, Hyderabad (A.P.)

१११३९ City Center Library, Ashok Nagar, Hyderabad (A.P.)

१११४० श्री मूलचन्द जी बनवट, बैंक स्ट्रीट कोठी, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

जिनवाणी हेतु साभार

२५००/- श्री महावीरचन्द जी पवन कुमार जी जागीरदार, बालोतरा, अपने पूज्य माताजी एवं पिताजी श्रीमती गुलाबी देवी जी-श्री हनुमान जी जागीरदार के दि. १.१.०८ को जीवित महोत्सव मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२१००/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, श्री पदमचन्द जी कोठारी की दिनांक २२.०१.०८ को प्रथम पुण्य तिथि की स्मृति में भेंट।

२१००/- श्रीमती सोना जी एवं श्री सी. पी. कोठारी (चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट), अजमेर, अपने सुपुत्र चि. सौरभ जी कोठारी के सी.ए. फाइनल की परीक्षा में ६० प्रतिशत अंक प्राप्त कर अजमेर में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री हेमन्त कुमार छाजेड़, जयपुर, श्रीमती कैलाशदेवी जी छाजेड़ के दिनांक ६.१२.२००७ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

११००/- श्री मंगलचन्द जी महावीरचन्द जी खाबिया, पल्लीपट्ट, अपने भ्राता श्री अशोक जी खाबिया के दि. १२.१२.०७ को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्री धनराज जी जोरावरमल जी मुणोत, वणी जिला-यवतमाल, श्री सुरेशचन्द जी जोरावरमल जी मुणोत का दि. २०.१२.०७ को संथारा सहित समाधिमरण होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

१०००/- श्री प्रकाशराज जी मेहता, शिमोगा, अपने सुपुत्र चि. महेन्द्र कुमार मेहता के ३८ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- डॉ. राजीव जी जैन एवं श्री संजय जी जैन, कोटा, अपने पिताश्री श्री हनुमान प्रसाद जैन (बिलोता वाले) के डिवीजनल इंजीनियर (भारत संचार निगम लिमिटेड) पद से सेवानिवृत्त होने पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री हुकमचन्द जी विपिन जी जैन, जयपुर विपिन जैन का मेट एवं केट में चयन होने पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुनील कुमार जी बोथरा, चेन्नई, नववर्ष के उपलक्ष्य में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनलाभ होने पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, श्रीमती कमला जी, श्री लोकेन्द्रनाथ जी मोदी, श्रीमती ऋतु जी मोदी, जोधपुर, अपने पूजनीय श्री हुक्मनाथ जी मोदी एवं श्रीमती कृष्णा जी मोदी की पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्रीमती सुशीला-श्री कमलपतराज जी भंसाली, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्रीमती मधु जी-श्री निर्मल जी भंसाली, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म दिवस एवं जोधपुर प्रवास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री शुभराज जी मेहता, जोधपुर, पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यस्मृति में भेंट।

५०१/- श्री उम्मेदमल जी इन्दरचन्द जी जैन, चौथ का बरवाड़ा वाले, हाल मुकाम जयपुर, अपने सुपुत्र चि. अमित संग सौ. संगींता के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री सम्पतराज जी धोका, मंत्री-वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ मल्लैश्वरम्-बैंगलोर, रोचक व्याख्यानी पं. रत्न श्री ज्ञानमुनि जी म.सा., श्री लोकेशमुनि जी म.सा. के मल्लैश्वरम् के अनुपम ऐतिहासिक वर्षावास के सानंद सम्पन्न होने पर भेंट।

५००/- श्री मिलापचन्द जी, पदमचन्द जी खाबिया, इचलकरंजी, श्रीमती कँवरबाई जी मिलापचन्द जी खाबिया (गोविन्दगढ़) की पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्री अमरचन्द जी लुणावत, अपनी सुपुत्री सुश्री मोनिका का विवाह दि. २४.०१.२००८ को होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्रीमती उमरावकंवर जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपौत्र पुनीत भण्डारी के सी.ए. में उत्तीर्ण होने पर भेंट।

५००/- श्री शांतिलाल जी संचेती, बदनोर जिला भीलवाड़ा, श्री ज्ञानचन्द जी संचेती-बदनोर के सुपुत्र श्री सुनील जी का शुभ विवाह श्री टीकमचन्द जी मेहता-पिपलियां कलां की आत्मजा सौ. कां. सपना के साथ १.२.०७ को सम्पन्न होने की खुशी में।

५००/- श्री नौरतनमल कुशलचन्द मेहता, जोधपुर, श्री टीकमचन्द जी मेहता, पीपलियां कलां के सुपुत्र दिलखुश एवं सुपुत्री सपना के विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

जीव दया हेतु साभार

२०००/- श्री प्रकाशचन्द जी एवं सौ.मधुबाला जी झांबड़, नन्दूरा द्वारा सजोड़े एक माह का दयाव्रत दिनांक १.१२.०७ से ३१.१२.०७ तक जलगाँव में वर्द्धमान आयम्बिल तप आराधिका श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. के सान्निध्य में आनन्दपूर्वक होने पर भेंट।

१५००/- श्रीमती उगमकंवर जी सूर्या, श्रीमती शान्ति जी डोसी, श्रीमती चंचल जी डागा, जोधपुर।

५०१/- श्री चंचलचन्द जी, चन्द्रशेखर जी, सुभाष जी नागसेठिया, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर

पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्रीमती पुष्पा जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलराज जी भण्डारी, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्रीमती केसर जी गांग धर्मपत्नी श्रीमती चंचलमल जी गांग, जोधपुर, महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. की प्रेरणा से तेले की तपस्या करने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री जसवन्तमल जी गुलाब जी गांग, जोधपुर।

५००/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के ९८वें जन्म-दिवस एवं छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि पर सप्रेम भेंट।

५००/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर पदार्पण तथा दि. २६.१.०७ को उपाध्यायप्रवर के ७४वें जन्म-दिवस पर सप्रेम भेंट।

५००/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की दीक्षा जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

२५००/- श्री महावीरचन्द जी पवन कुमार जी जागीरदार, बालोतरा, अपने पूज्य माताजी व पिताजी श्रीमती गुलाबीदेवी जी-श्री हनुमान जी जागीरदार के दि. १.१.०८ को जीवित महोत्सव मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

६५०/- श्री श्वे. वर्द्ध. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्योपुर, पर्युषण सहायतार्थ।

५००/- श्रीमती मीमाबाई जी जैन, नागौर, सहायतार्थ।

५००/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के ९८वें जन्म-दिवस, छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के ७४वें जन्म-दिवस पर सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ शाखा, बजरिया को प्राप्त साभार

११००/- श्री उम्मेदमल जी इन्द्रमल जी, चौथ का बरवाड़ा वाले, हाल मुकाम जयपुर, चि. अमित के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में शाखा बजरिया को सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

माघ शुक्ला १४	बुधवार, २०.०२.२००८	चतुर्दशी एवं पक्खी
फाल्गुन कृष्णा ८	शुक्रवार, २९.०२.२००८	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा १४	गुरुवार, ०६.०३.२००८	चतुर्दशी एवं पक्खी
फाल्गुन शुक्ला ८	शुक्रवार, १४.०३.२००८	अष्टमी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

With Best Compliments From :

तीव्र आसक्ति वाले कभी कुछ पाते नहीं, खोते हैं।

-आचार्य श्री हीरा

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

SIL

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान पर जिसका अधिकार है, संसार उसके वश में है।

-आचार्य श्री हीरा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

स्वानुशासन से त्याग करना संस्कृति है

-आचार्य श्री हीरा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008
Phone : 044-28553185, 42145478, 9381041097

(Branches at Chennai, Bangalore, Hyderabad and Goa)

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD **NAVARATHAN KAVAD**
RAVINDRA KAVAD **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No. : 044-65363944, 26274165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

लोक लज्जा से दिखावा तो हो सकता है, पर कर्म-निर्जरा नहीं होगी।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph.: 26272609, 55666555

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान।।

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph.: 26272906, 55689588

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

हमारी दृष्टि कर्मक्षय पर है, समत्व की साधना पर है तो धर्म के फल से हम कभी वंचित नहीं हो सकते।

-आचार्य श्री हीरा

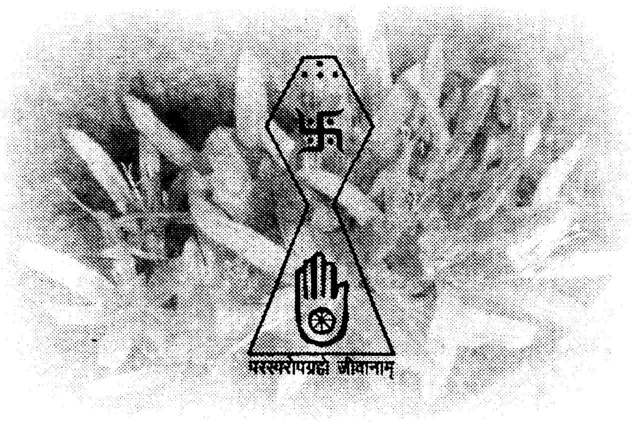

गुरु हीरा का यह संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश।

With Best Compliments From:

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1 Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30024282, 23669818
Mobile : 98210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१. **संयोजक-संरक्षक मण्डल** 022-30645000/23648004
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई 09820072724

२. **संयोजक-शासन सेवा समिति**
श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव 0257-2225903/09823076551

३. **गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**
अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई 022-23673939/23698880

४. **अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर** **0291-2636763**
अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर 0141-2620571
09414048830/09314048830
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर 0291-2434355/09414093147
महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर 0291-2654427/09828032215

५. **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर** **0141-2575997, 2570753**
अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई 044-25380387/25391597
09884430000
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर 080-22265957/09844158943
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर 0141-3233318/09414090931
मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर 0141-2212982/09413453774

आचार्यप्रवर की अक्षय तृतीया हेतु मुम्बई को स्वीकृति

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने आज दिनांक १० फरवरी २००८ को वाडगांव (महा.) में सुरत, मुम्बई आदि अनेक स्थानों से विनति लेकर आए शिष्ट मण्डलों में मुम्बई के श्रावक संघ को साधु-मर्यादा के आगारों के साथ अक्षय तृतीया ८ मई २००८ पर मुम्बई पधारने की स्वीकृति प्रदान की है।

:: सम्पर्क सूत्र ::

श्री पारसचन्द जी हीरावत
१३०१, पंचरत्न बिल्डिंग,
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०००04,
फोन-०२२-२३६३०३२०(ऑ.), २३६३७३२०(घर),
मो. ०९८२१०१३५३०, फैक्स-०२२.२३६३१९८२,
ईमेल-dpe1990@hotmail.com

श्री नरेन्द्र जी हीरावत
फोन-०२२-२४३८०७१३
फैक्स-०२२-२४३७०७१३
मोबाइल- ०९८२१०४०८९९

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

तन का संयम रोग में और वाणी का संयम कलह से बचाता है।

– आचार्य श्री हस्ती

With best compliments from

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

CHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar - 382 007.
Ph. : (079) 23276252, 23276204-05
Fax : (079) 23276249

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 2 ★ मूल्य : 10 रु.
15 फरवरी, 2008 ★ माघ सं. 2064

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, **Ghatkopar** (W)

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road, **Andheri** (E)

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, **Mulund** (E)

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, **Thane** (W)

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD.
www.propertysolutions.co.in

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।